CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

नहीं करता. और औषधिवृक्षारोपणनक्षत्र

पु० ...तिष्याश्विनिवारुणानिमूलं ...लादि
त्यकुध्रुवाणि लतौषधीपादपरोपण ...नि
मानिभातिप्रतिपादितानि १

टी०- हस्त, पुष्य, अश्विनी, शततारका, मूल, विशाखा, ...
...हि चित्रा, अनुराधा, मृग, रेवती, ध्रुव कहिये, रोहिणी, तीनों ...
...त्तरा, इन नक्षत्रोंमें लता, औषधी, वृक्षादि लगावनेसें शुभ फ...
...लको देनेवाले होते है.

कूपारंभनक्षत्राण्याह.

हस्तत्रयेवासववारुणंचशैवंपित्र्यंत्रीणिचै-
वोत्तराणि प्राजापत्यंचापिनक्षत्रमाहुः कू
पारंभेश्रेष्ठमाद्यामुनींद्राः १

टी०- हस्त, चित्रा, स्वाती, धनिष्ठा, शततारका, आर्द्रा, मघा, उ-
त्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढा, उत्तराभाद्रपदा, रोहिणी इन नक्षत्रोंमें
कूप कहिये कूँवाँ बनावनेको आरंभ करना, ऐसा नारदादि मुनी
इनोनें कहा है.

द्रव्यदेनायारखना.

साधारणोग्रध्रुवदारुणाख्यैर्धिष्ण्यैर्यदत्रद्रवि
णंप्रयुक्तं हस्तेनविन्यस्तवसुप्रनष्टंनलभ्यते
तंनियतंकदाचित् १

टी०- कृत्तिका, विशाखा, पूर्वाफाल्गुनी, पूर्वाषाढा, पूर्वाभ...
...दा, भरणी, मघा, मूल, ज्येष्ठा, आर्द्रा, आश्लेषा इन नक्षत्रों...
...जो कोई किसीकेपास धनादिक रखदेवे या धन नष्ट हो जा...
...भी वापस मिलेगा नहीं.

ऋणग्रहणनक्षत्राण्याह.

मृदुपुष्याश्विनीचैवविशाखाश्रवणत्रि...

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ज्योतिषसार और ज्योतिष
सूचसंशंतिधनादिनिधिव
त्रा, अनुराधा, मृग, रेवती, पुष्य,
नेष्ठा, शततारका, पुनर्वसु इण नक्षत्र
प्रशस्तही है.

अन्यदपि.

हस्तेर्कवारेसंक्रांतौयदृणंस्यात्कुलेषुच वृ
द्धियोगेतथाज्ञेयमृणच्छेदंतुकारयेत् १

टी०- हस्त नक्षत्रमें, रविवारमें, संक्रांतिदिनमें, वृद्धियोगमें ऋण
लेनानहीं. ऋण लेनेसे वह ऋण पुस्त दर पुस्त चलाजाता है और
इन्हीदिने ऋणच्छेद करनेसे शीघ्रही ऋणनाश हो जाता है.

अन्यदपि.

ऋणंभौमेनगृण्हीयान्नदेयंबुधवासरे ऋण
च्छेदंकुजेकुर्यात्संचयंसोमनंदनम् १

टी०- मंगलवारको कर्जा याने ऋण किसीसे लेना नहीं और
पको ऋण देना नहीं. ऋणच्छेद कहिये ऋणका आदा करना मंगल
लको और संग्रह करना बुधको.

गजमुहूर्तमाह.

हस्तत्रयेसौम्यहरित्रयेचपौष्णद्वयेपुष्यपुनर्व
सौच मैत्रेचसर्वाण्यपिकुंजराणांसर्वाणिश
स्तान्यखिलानियानि १

टी०- हस्त, चित्रा, स्वाती, मृग, श्रवण, धनिष्ठा, शततारका
, अश्विनी, पुष्य, पुनर्वसु, अनुराधा ये नक्षत्रोंमें और रिक्ता
४।९।१४ अमावास्या. भौमवार इनको वर्जित करके हा
ा और खरीदना और अलंकारादि करके भूषित करना
संबंधी कर्म करना, शुभ है ऐसा वसिष्ठ आदि ऋषि
है.

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

नहीं करता. और अष्टमचं अश्वमुहूर्त.

३० ...ष्ठाश्विनिसौम्यभेषुपौष्णानिलादि
त्यकराह्वयेषु सवारुणर्क्षेषुबुधैः स्मृतानि
सर्वाणिकार्याणितुरंगमानि १

टी०-पुष्य, धनिष्ठा, अश्विनी, मृग, रेवती, स्वाती, पुनर्वसु, ह-
स्त, शततारका, इन नक्षत्रोंमें और रिक्ता तिथि ४।९।१४ भौम
वर्जित दिनमें अश्वका खरीदना और बेचना और अलंकारादि
में ऋकरके भूषित करना ये सब कर्म करनेसे शुभ होता है ऐसा श्री
है अति जो विष्णु उनोनें लिखा है.

गवादिपशुलाना और पहुंचा-
नेकावर्ज्यावर्ज्य.

चित्रोत्तरावैष्णवरोहिणीषुचतुर्दशीदर्शदिवा
ष्टमीषु ग्रामप्रवेशंगमनंप्रबुध्याद्धीमान्पशू
नांनकदाचिदेव १

टी०-चित्रा, उत्तरात्रय, श्रवण, रोहिणी, चतुर्दशी, अमावास्या,
ष्टमी ये तिथीनक्षत्रमें पशुओंको घरसे बाहर निकालना नहीं
र बाहरसें घरमेंभी ले आवना नहीं.

गौलेनेबेचनेको वर्ज्यावर्ज्य.

शुक्रवासवकरेषुविशाखापुष्यवारुणपुनर्व
सुभेषु अश्विपूषभयुतेषुविधेयोविक्रयःक्र
यविधिःसुरभीणां १

टी०- ज्येष्ठा, धनिष्ठा, हस्त, विशाखा, पुष्य, शततारका, पुनर्वसु,
...नी. रेवती इन नक्षत्रोंमें गौका क्रयविक्रय करना क्रय कहि-
र्वोत्तरेपुनर्वसु वस्तु लेना और विक्रय कहिये मूल्य लेके
चंद्रेगुरौधार्यंको संग्रह करना.

टी०-अश्विनी. रेवती. हस्त. रो... ...ष्ठा. शतता-
...गमनगेह

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

पनं प्रेतदाहतृणकाष्ठसंग्रहेनेध्विव नहीं
णंचवर्जयेत् १

टी०- धनिष्ठाका उत्तरार्द्ध. पूर्वाभाद्रपदा. शततारका. उत्तरा भाद्रपदा. रेवती ये नक्षत्रोंमें दक्षणकी यात्रा, पुराने घरकी दुरुस्ती करना, प्रेतदाह, भूषा लकडीका संग्रह, पलंग, खटिया, आदिका बनावना ये सब काम पंचकमें नही करना.

हलप्रवाहाकेनक्षत्र.

मृदुध्रुवक्षिप्रचरेषुमूलेमघाविशाखासहिते षुभेषु हलप्रवाहंप्रथमंविदध्यान्निरोगमुष्का न्वितसौरभेये १

टी०- चित्रा, अनुराधा, मृग, रेवती, रोहिणी, तीनो उत्तरा, अश्वि पुष्य, हस्त, अभिजित्, श्रवण, धनिष्ठा, शततारका, पुनर्वसु, मूल, म शाखा इन नक्षत्रोंमें प्रथम निरोगी, मुष्कसहित ऐसा बैल लगाय हल याने खेतीका नांगर चलावना तो शुभ होगा.

बीजवापनमुहुर्तमाह.

हस्ताश्विपुष्योत्तररोहिणीषुचित्रानुराधामृग रेवतीषु स्वातौधनिष्ठासुमघासुमूलेबीजो- प्तिरुत्कृष्टफलंप्रतिष्ठा १

टी०- हस्त, अश्विनी, पुष्य, तीनोउत्तरा, रोहिणी, चित्रा, अनु धा, मृग, रेवती, स्वाती, धनिष्ठा, मूल, इन नक्षत्रोंमें बीजवापन नेसे उत्कृष्ट फलप्रद होता है.

सर्पदंशकोवर्ज्यनक्षत्र.

यः कृत्तिकामूलमघाविशाखासार्पांतकार्द्रा सुभुजंगदष्टः सवैनतेयेनस्पृ के भूषित करना मृत्योर्वदनेमनुष्यः ऐसा वसिष्ठ आदि ऋषि

०- कृत्तिका, मू

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

नहीं करता. और अष्टम चंद्रमा होय तोभी उधः ... द्धि करता है.

अन्यदपि.

सिंहोयथासर्वचतुष्पदानांतथैवपुष्योबलवानु
डूनां चंद्रेविरुद्धेप्यथगोचरेपिसिद्ध्यंतिकार्या
णिकृतानिपुष्ये १

टी०-जैसा संपूर्ण चतुष्पादोंमें सिंह बलवान है तैसाही नक्षत्रों में पुष्य बलवान है. गोचरमें ८।४।१२ चंद्रमा होय तोभी पुष्यनक्षत्र कार्यसिद्धि करता है.

अन्यदपि.

ग्रहेणविद्धोप्यशुभान्वितोपिविरुद्धतारोपिवि
लोमगोपि करोत्यवश्यंसकलार्थसिद्धिं वि-
हायपाणिग्रहणंतुपुष्यः १

टी०-पुष्यनक्षत्रग्रह करके विरुद्ध होय अथवा अशुभग्रहयुक्त होय अथवा प्रतिकूल तारा होय तोभी सकल कार्यसिद्धि अवश्य करके पुष्य करता है. विवाह मात्र छोड देना.

अथदुकूलम्.

जीवेऽर्केब्जेबुधेशुक्रेवस्त्रोत्तर्क्षेश्रवान्विते
स्थिरेंगेसद्ग्रहैर्युक्तेयद्दुकूलस्यधारणम् १

टी०-गुरु, रवि, चंद्र, बुध, शुक्र, इन वारोंमें वस्त्रधारण नक्षत्रमें श्रवणयुक्त स्थिर लग्नमें शुभग्रहयुक्तमें दुकुल (दुपट्टा इत्यादि धारण करना.

अथकौशेयम्.

अश्विनीरेवतीहस्तेरोहिण्यांश्रवणत्रये पू-
र्वोत्तरेपुनर्वस्वोःस्वातौपुष्येमघाभिधे १ रवौ
चंद्रेगुरौधार्यंकौशेयवसनंजनैः २

टी०-अश्विनी. रेवती. हस्त. रोहिणी. श्रवण. धनिष्ठा. शतता-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

रका, तीन उत्तरा, पुनर्वसु. स्वाती. पुष्य. मघा यह न
त्र और रवि. सोम. गुरु यह वारमें लोकोंने कौशेय (रेशमी वस्त्र
धारण करना हितकारक है.

अथ रोमजवस्त्रम्.

नीलवस्त्रोदितेधिष्ण्येरेवतीपुष्ययोरपि शु
क्रेशनैश्चरेकेचिद्धारयेद्रोमजांबरम् १

टी०- नीलवस्त्र धारणमें जो नक्षत्र और रेवती. पुष्य यहन
त्र और शुक्र, शनैश्चर, रवि यह वारमें रोमज (दुशाला इत्या
दिक) वस्त्र धारण करना.

अथ सदूलकंचुकधारणं.

पुष्योत्तराऽनुराधांत्यधनिष्ठाश्विकरत्रये रोहि
ण्यांगुरुशुक्राब्जेदेहेदुर्गधृतिःशुभा १

टी०- पुष्य, तीनो उत्तरा, अनुराधा, रेवती, धनिष्ठा, अश्विनी, ह
स्त, चित्रा, स्वाती, रोहिणी, यह नक्षत्र और गुरु, शुक्र, सोम, इ
वारोंमें शरीरपर रुईदार वस्त्र धारण करना.

अथ वस्त्रनिर्माणम्.

रोहिणीरेवतीचित्रानुराधामृगभोत्तरे शनिं
हित्वाविद्ध्यात्तुतंतुभिःपटसाधनम् १

टी०- रोहिणी. रेवती. चित्रा. अनुराधा. मृग. तीनो उत्तरा. यह न
क्षत्रमें और शनिवार छोडके सब बाकी वारोंमें वस्त्र बनावनेको
(यंत्रपर) प्रारंभ करना शुभ है.

अथ गणितारंभः

शततारकेऽनुराधार्द्रेरोहिणीरेवतीकरे पुष्य
जीवबुधेकुर्यात्प्रारंभंगणितादिषु १

टी०- शततारका, पूर्वाभाद्रपदा, अनुराधा, आर्द्रा, रोहिणी, रेवती, ह
पुष्य ये नक्षत्र और बुध. गुरु इनवारोंमें गणितविद्या प्रारंभ करना श

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अथव्याकरणारंभः

रोहिण्यांपंचकेहस्तात्पुनर्भेमृगभेऽश्विभे
पुष्येशुक्रेज्यविद्वारेशब्दशास्त्रपठेत्सुधिः १

टी०-रोहिणी, हस्त, चित्रा, स्वाती, विशाखा, अनुराधा, पुनर्वसु, मृग, अश्विनी, पुष्य, यह नक्षत्रमें और शुक्र. गुरु. बुध इनवा रोंमें व्याकरणविद्याको प्रारंभ करना.

अथरत्नपरीक्षा.

पुनर्भेशततारर्क्षेश्रवेज्येष्ठपरीक्षणम् र-
त्नानामष्टमीभूतंहित्वाभौमंशनैश्चरम् १

टी०-पुनर्वसु, शततारका, हस्त, श्रवण, ज्येष्ठा यह नक्षत्रमें औ अष्टमी, चतुर्दशी इन तिथीको छोडके रत्नपरीक्षा करना.

अथनटक्रिया.

मृगार्द्रारोहिणीपुष्यपुनर्भेश्रवणत्रये चित्रा
त्रयोत्तरामूलेकृत्यंसन्नृत्यजीवनम् १

टी०-मृग, आर्द्रा, रोहिणी, पुष्य, पुनर्वसु, श्रवण, धनिष्ठा, शततारका, चित्रा, ३ उत्तरा, मूल, यह नक्षत्रमें नृत्यजीवीनें कृत्यप्रारंभ करना.

अथान्नादिकपाकक्रिया.

मूलंचित्रानुराधास्वविशारवाकृत्तिकामृगे,
उत्तरारोहिणीज्येष्ठारेवतीषुपचिक्रिया १

टी०-मूल, चित्रा, अनुराधा, विशाखा, कृत्तिका, मृग, तीनोंउत्त रा, रोहिणी, ज्येष्ठा, रेवती, यह नक्षत्रोंमें पाकक्रिया (नानाजा के पक्वान्न) करनेको प्रारंभ करना.

अथरससेवनम्.

हस्तत्रयेऽश्विनीपुष्येऽनुराधात्र्येश्रुतित्रये
पुनर्भेमृगशिर्षेऽर्कभौमेज्येरसभक्षणम् १

टी०-हस्त, चित्रा, स्वाती, अश्विनी, पुष्य, अनुराधा, रेवती, श्र

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

वण, धनिष्ठा, शततारका, पुनर्वसु, मृग, हस्त, यह नक्षत्रोंमें भौम, गुरु यह वारनमें रसभक्षण प्रारंभ करना.

अथवनचारीकृत्यं.

ज्येष्ठास्वात्याश्विनीपुष्यपुनर्भरोहिणीकरे
उत्तराषुशुभंकृत्यंशृंगीनांवनचारिणाम् १

टी०-ज्येष्ठा, स्वाती, अश्विनी, पुष्य, पुनर्वसु, रोहिणी, हस्त, उत्तरा३, यहनक्षत्रमें शृंगी और वनचारी इनका कृत्य करना.

अथपक्षीकृत्यं.

शुभाहेसुरवौतिर्यङ्मुखेचाधोमुखेचभे सा-
रिकाशुकमुख्यानांपक्षीणांकृत्यमुत्तमम् १

टी०-शुभदिनमें उत्तम सूर्यबलमें तिर्यङ्मुख नक्षत्रमें उर्ध्वमुख नक्षत्रमें सारिका (मैना) शुकादि मुख्य पक्षीका कृत्य करना.

अथभूमिक्रयविक्रयं.

जीवेशुक्रेचनंदासुपूर्णायांमूलभेमृगे पूर्वा
श्लेषामघात्येचविशाखाहितयेतथा १
नभस्विनिभिःप्रोक्तक्रयविक्रयणंभुवः २

टी०-गुरु, शुक्र इन वारोंमें; नंदा और पूर्णा तिथीमें; मृग, ३ पूर्वा, आश्लेषा, मघा, रेवती, विशाखा, अनुराधा, पुनर्वसु, यहनक्षत्रमें मुनीनें भूमीका क्रयविक्रय कथन किया है.

अथतप्तलोहदाहः.

शतचित्राश्विनीमूलेविशाखाकृत्तिकार्द्रभे
ज्येष्ठाश्लेषाकुजेऽर्केगकूरेलोहाग्निभैषजम् १

टी०-शततारा, चित्रा, अश्विनी, मूल, विशाखा, कृत्तिका, आर्द्रा, ज्येष्ठा, आश्लेषा, यहनक्षत्रमें और भौम, सूर्य इनवारमें क्रूरलग्नमें अग्नीसें तप्तलोहसे दाह करना.

अथमल्लक्रिया.

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ज्येष्ठार्द्राभरणीपूर्वामूलाश्लेषामघाभिधे ज
यापूर्णासुसद्वारेसार्केशीर्षादयेंगके १ सत्खे
टैःकेंद्रगैःसार्कैःमल्लुक्रीडाशुभावहा २

टी०-ज्येष्ठा, आर्द्रा, भरणी, ३ पूर्वा, मूल, आश्लेषा, मघा यह नक्ष
त्रमें; जया, पूर्णा तिथी; शुभ वारमें अर्कसहित शीर्षादय लग्नमें अ-
र्कसहित शुभग्रह केंद्रमें होय ऐसे कालमें मल्लुक्रीडा शुभजानना.

अथसेतुबंध.

त्र्युत्तरारोहिणीस्वातीमृगेर्केमंगलेगुरौ से
तूनांबंधनंशस्तंशुभेलग्नेशुभेक्षितं १

टी०-उत्तरा, रोहिणी, स्वाती, मृग, यह नक्षत्रमें और रवि, भौम,
उधरु इन वारोंमें शुभलग्न शुभग्रहसे अवलोकित इस्मे सेतुबंध
करना याने पूल बनावना शुभ.

अथकुंभारकृत्यम्.

पुनर्वसुद्वयेहस्तत्रयेंत्येरोहिणीमृगे अनुरा
धाश्रवोज्येष्ठाससूर्येसौम्यवासरे १ तथाच
रोदयेप्रोक्ताकुंभकारक्रियाबुधैः २

टी०-पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, चित्रा, स्वाती, रेवती, रोहिणी, मृग,
अनुराधा, श्रवण, ज्येष्ठा, यह नक्षत्रमें, रविसहित शुभ वारमें, च
लग्नमें कुंभकार (कोहार) का काम करना.

अथकाष्ठशिल्पकृत्य.

हस्तषट्केऽश्विनीपुष्येरेवत्यांश्रवणत्रये पुन
र्भेरोहिणीयुग्मेसूत्रधारीक्रियोत्तमा १

टी०-हस्त, चित्रा, स्वाती, विशाखा, अनुराधा, ज्येष्ठा,
अश्विनी, पुष्य, रेवती, श्रवण, धनिष्ठा, शततारका, पुनर्व-
सु. रोहिणी. मृग. यह नक्षत्रोंमें सूत्रधारी (याने बढही)
का काम करना. शुभ होय.

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अथस्वर्णकारकृत्यं.

श्रवत्रयेश्विनीपुष्यमृगेहस्तचतुष्टये कृत्तिका
यांपुनर्वस्वोःशुभेलग्नेतथावपि १ हेमकार
क्रियाशस्ताहित्वाबुधशनैश्चरौ २ छ

टी०-श्रवण, धनिष्ठा, शततारका, अश्विनी, पुष्य, मृग, हस्त, चित्रा, स्वाती, विशाखा, कृत्तिका, पुनर्वसु यह नक्षत्रमें शुभतिथिमें हेमकार (सोनार) वृत्तीका कर्म बुध और शनिवारको छोडके करना शुभ है.

अथचौरकृत्यम्.

विशाखाकृत्तिकापूर्वामूलार्द्राभरणीमघे
आश्लेषाज्येष्ठयोर्मेदभौमयोःशकुनेबले १
लग्नेवादशमेभौमेचौर्यसद्द्रव्यलब्धये २

टी०-विशाखा. कृत्तिका. तीनों पूर्वा. मूल. आर्द्रा. भरणी मघा. आश्लेषा. ज्येष्ठा यह नक्षत्रोंमें और शनि, भौम ये वारोंमें शकुन बलमें, गमन लग्नमें भौम होय अथवा दशम होय ऐसे लग्नमें उत्तम द्रव्य लाभके वास्ते चौर्य कर्म करना तो शुभप्रद होय.

अथरत्नयुक्तभूषाघटनं.

कृत्तिकादित्रयेहस्तपंचकेरेवतीद्वये श्रुतित्रये
यैपुनर्वस्वोःपुष्यभेत्तरात्रये १ कुजेर्करत्न
युक्तभूषाघटनंशुभेवासरे २ छ छ

टी०-कृत्तिका, रोहिणी, मृग, हस्त, चित्रा, स्वाती, विशाखा, अनुराधा, रेवती, अश्विनी, श्रवण, धनिष्ठा, शततारका, पुनर्वसु, पुष्य, उत्तरा यह नक्षत्रमें और भौम, सूर्य और शुभवारमें रत्नयुक्त आभूषन बनावनेको आरंभ करवाना.

इतिनक्षत्रप्रकरणम्.

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अथयोगप्रकरणम्.

श्लोक वाक्पतेरर्कनक्षत्रंश्रवणाच्चांद्रमेव च गणयेत्तद्युतींकुर्याद्योगःस्याद्दक्षशेषतः १

टी०-पुष्यनक्षत्रसें सूर्यनक्षत्रतकगिनके और श्रवणसें दिननक्षत्रतकगिनके दोनोंकी संख्या एकत्रकरके २७ से भाग लेना. शेष बचे सो योग कहना. जैसा संवत् १९२५ ज्येष्ठ शुक्ल ३ सोमवार आर्द्रा नक्षत्र है तो उस दिन योग कौन है? ऐसा प्रश्न करे तो गिनती करना. पुष्यनक्षत्रसे रोहिणी सूर्यनक्षत्र २५ हुवे और श्रवणसे आर्द्रा दिननक्षत्र १२ हुवे. दोनों मिलावनेसे ३६ हुवे. उस्को २७ का भाग देनेसे बचा शेष ९ नो उस दिन शूलयोग हुवा ऐसा जानना.

योगनामानि.

विष्कंभः प्रीतिरायुष्मान्सौभाग्यशोभनस्तथा॥ अतिगंडस्कर्मांचधृतिःशूलस्तथैवच १ गंडोवृद्धिध्रुवश्चैवव्याघातोहर्षणस्तथा वज्रः सिद्धिर्व्यतीपातवरियानपरिघःशिवः २ सिद्धिः साध्यःशुभःशुक्लोब्रह्मैंद्रोवैधृतिःक्रमात् स सविंशतियोगास्तुकुर्युर्नामसमंफलम् ३ छ

टी०-विष्कंभआदि २७ योगजो है सो नीचेकोष्टकमें स्पष्ट देखलेना.

१	विष्कंभ.	१०	गंड.	१९	परिघ.
२	प्रीति.	११	वृद्धि.	२०	शिव.
३	आयुष्मान्	१२	ध्रुव	२१	सिद्धि.
४	सौभाग्य.	१३	व्याघात.	२२	साध्य.
५	शोभन.	१४	हर्षण.	२३	शुभ.
६	अतिगंड.	१५	वज्र.	२४	शुक्ल.
७	सुकर्मा.	१६	सिद्धि.	२५	ब्रह्म.
८	धृति.	१७	व्यतीपात.	२६	ऐंद्र.
९	शूल.	१८	वरियान.	२७	वैधृति.

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ये सत्ताईस योगोका फलजो है सोउस्के नामसदृशही जानना.

योगवर्ज्यघटिका.

विरुद्धसंज्ञाइहयेचयोगास्तेषामनिष्टःखलुपा
दआद्यः सवैधृतिस्तव्यतिपातनाम्नासवाप्य
निष्टःपरिघस्यचार्ध १ तिस्रस्तुयोगप्रथमं
चवज्रेव्याघातसंज्ञेनवपंचशूले गंडेतिगंडे
चषडेवनाड्यःशुभेषुकार्येषुविवर्जनीयाः २

टी०-सत्ताईसयोगोंमें जो विरुद्धनामकयोग है जैसे शूल वज्रादिकउनका प्रथमपाद अनिष्टजानना. और वैधृति व्यतीपात इनके चारों पाद अनिष्टजानना. परिघका पूर्वार्द्ध अनिष्ट; विष्कंभयोगकी आदी ३ घटि अनिष्ट, व्रज्रयोगकी आदि २ घटि, व्याघातयोगकी २ घटि; शूलयोगकी ५ घटि, गंड और अतिगंड इनयोगोंकी ६।६ घटि अनिष्ट जानना.

इतियोगप्रकरणं.

अथकरणप्रकरणम्.

करणानयन.

गततिथयोद्विनिघ्नाः शुक्लप्रतिपदादितः
एकोनामसप्तकृच्छेषकरणंस्याद्ववादिकं १

टी०-जिस दिन करण ल्यावना होय तो शुक्लप्रतिपदासें यतम नतिथितक गिनके उस्को द्विगुणित करके उस्में एक कम करके सें भागदेके जो शेष बचे सो तिथीका करण जानना.

करणनामानि.

बवाव्हयं बालवकौलवाख्यंततोभवेत्तैतिलनामधेयं गराभिधानंवणिजंचविष्टिरि
त्याहुरार्याःकरणानिसप्त १ अंतेकृष्ण.

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

चतुर्दश्यांशकुनिर्दर्शभागयोः शेषंचतुष्प
दंनागंकिंस्तुघ्नंप्रतिपद्दले २ छ

टी०- बव १, बालव २, कौलव ३, तैतिल ४, गर ५, वणिज ६, विष्टि कहिये भद्रा ७, ये सात करण होते है. और कृष्ण चतुर्दशी के उत्तरार्द्धमें शकुनी नामक ८ वा करण होता है और अमावास्या के पूर्वोत्तरार्धमें क्रमसे चतुष्पद और नाग ये दोन करण ज्यादा होते है और किंस्तुघ्न नामका करण प्रतिपदा के पूर्वार्द्धमें होता है.

करणस्वामिनः

इंद्रोब्रह्मामित्रनामार्यमाभूःश्रीःकीनाशश्चे
तितिथ्यर्धनाथाः कल्युक्षारब्यौसर्पवायुस्त
थैवयेचत्वारस्तेस्थिराणांचतुर्णां १

टी०- इंद्र, ब्रह्मा, मित्र, अर्यमा, भूमि, लक्ष्मी, यम, ये ७ देवता बवादि सात करणोंके होते है. और शकुनी, नाग, चतुस्पद, किंस्तुघ्न ये चार करणके देवता कलि, वृषभ, सर्प, वायु ये क्रमसें नानना. और ये ४ स्थिर है.

करणकृत्यानि.

पौष्टिकंस्थिरशुभानिबवारभ्येबालवेद्विजहि
तान्यपिकुर्यात् कौलवेप्रमदमित्रविधानं
तैतिलेशुभगताश्रयकर्म १ गरेचबीजाश्र
यकर्षणानिवाणिज्यकेस्थैर्यवणिक्क्रि
याश्च नसिद्धिमायातिकृतंचविष्यांविषा
रिघातादिषुतन्नसिद्धिः २ मंत्रौषधानिशकु
नौतुसपौष्टिकानिगोविप्रराज्यपितृकर्मचतु
स्पदेति सौभाग्यदारुणधृतिध्रुवकर्मनागे
किंस्तुघ्नास्मिन्निखिलंशुभकर्मकार्यं ३

टी०- बव करणमें पौष्टिक व्रत. शिल्पादि स्थिरकर्म. देवालय,

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

तडाग. कूपादि ये कर्म करना. बालव करणमें द्विजका हितक
कौलव करणमे मित्रता याने दोस्ती श्रौर उत्साहादि करना, तौ
त्व करणमें विवाहादि मंगलकार्य करना, गर करणमें बीजकाबे
नाश्रौर हल चलावना, वणिज करणमें देवतास्थापन, तलाव,
वडी, गृह, इनको बांधना श्रौर दुकानदारी करना. विष्टियानेभ
करणमें विषप्रयोग, शत्रुघात इत्यादि कर्म करना, पर शुभकार्य
कोई करना नहीं. शकुनि करणमें पौष्टिक याने मंत्रोपदेश, श्रौ
षधग्रहण. ग्रहशांत्यादि कर्म करना. चतुष्पद करणमें गौकोर
रीदनाश्रौर बेचना. ब्राम्हणसेवा, राज्याभिषेक, श्रौर पितृसंबं
कार्य करना. नागकरणमें सौभाग्यकर्म, दारुणकर्म, धैर्यकर्म,
द्याभ्यासादिकर्म करना. किंस्तुघ्न करणमें संपूर्ण कर्म करना.

भद्रास्वरूपमाह.

दैत्येंद्रैःसमरेमरेषुविजितेष्वीशःक्रमाद्दृष्टवा
न् स्वकायात्किल निर्गतारवरमुखीलांगू
लिनीचक्रपात् विष्टिःसप्तभुजासृगेंद्रगल-
काक्षामोदरीप्रेतगादैत्यघ्नीमुदितैःसुरैरस्तु-
करणप्रांतेनयुक्तातुसा १ ७ ७

टी०- देवासुर संग्राममें दैत्येंद्र करके देवतोंका पराभव हुवा ऐ
जानके महादेवको क्रोध उत्पन्न भया. तब स्वशरीरसें एक शक्ति
ष्टिनामक उत्पन्न हुई. उस्का मुख गर्दभके ऐसा श्रौर पुच्छ वृ
चक्रके ऐसे. जिस के गोड श्रौर सात भुजा सिंहके कंठके ऐसे
कंठ; कृशोदरी श्रौर प्रेतके उपर बैठके गमन करनेवाली ऐसी देव
तोंनें देखके श्रत्यंत हर्षपूर्वक श्रपने करणप्रांतमें नियुक्त किया श्र
वउसी शक्तीके सहायतासे देवतान्श्रोंनें दैत्योंकापराजय कियाथा
ऐसा भद्राका स्वरूप श्रौर उसी का पराक्रम प्राचीन ऋषियोंहर
कथन किया है.

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भद्रातिथिमान.

शुक्लेपूर्वार्द्धेष्टमीपंचदश्योर्भद्रैकादश्यांचतु
र्थ्यांपरार्द्धे कृष्णेन्यार्द्धस्यात्तृतीयादशम्योः
पूर्वभागेसप्तमीशंभुतिथ्योः १ ६ ६

टी०-शुक्लपक्षमें अष्टमी और पौर्णिमा इसके पूर्वदलमें भद्रा
कारणी है और उसी पक्षमें ४ चतुर्थी और ११ एकादशीके परदल-
में भद्रा होती है. और कृष्णपक्षमें ३ तृतीया और १० दशमीको
के परदलमें भद्रा और सप्तमी ७ और चतुर्दशीके पूर्वदलमें भद्रा हो-
संभवे है.

अन्यदपि.

दिवासर्पमुखीभद्रारात्रौभद्रातुवृश्चिकी
सर्पस्यचमुखंत्याज्यंरात्रौपुच्छंपरित्यजेत् १

टी०-दिनको भद्रा सर्पमुखी होती है और रात्रीमें भद्रा वृश्चिकी
होती है. इसलिये दिनको सर्पका मुख त्याग करना और रात्री-
को पुच्छ परित्याग करना.

अथ भद्रायाःमुखपुच्छविचार.

पंचस्यद्विकृताष्टरामरसभूयामादिघट्यःशरा
विष्टेरास्यमसद्गजेंदुरसरामाद्यश्विबाणाब्धि
षु यामेष्वंत्यघटित्रयंशुभकरपुच्छंतथावा
सरे विष्टिस्तिथ्यपरार्द्धजाशुभकरीरात्रौच
पूर्वार्द्धजा १ ६ ६ ६

टी०-शुक्लपक्षीय चतुर्थीके पांचवे प्रहरकी पहिली पांच घडी
सी देद्राका मुख होता है सो शुभकार्यमें निंद्य है. एवं शुक्लपक्षी-
किया अष्टमीके द्वितीय प्रहरकी आदि पांच घडी मुख एवं एका-
किया शीके सप्तम प्रहरकी पांच घडी मुख एवं पूर्णिमाकी चार ४
बियोंहरकी पांच घडी मुख, एवं कृष्णपक्षीय तृतीयाकी ३ अष्ट-
प्रहरकी, अष्टम प्रहरकी आदि पांच ५ घडी मुख, एवं सप्त-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

मीके तृतीय प्रहरकी आदि पांच घडी मुख, एवं दशमीमें प
हरकी आदि पांच ५ घडी भद्रा मुख, एवं चतुर्दशीके प्रथम
रकी ५ पांच घडी भद्रा मुख होता है सो सर्वत्र शुभकार्यमें नि
इसीतरहसे शुक्लपक्षमें ४ चतुर्थीको अष्टम प्रहरकी अंत्य
तीन घडी भद्रा पुच्छ होता है सो शुभ है. एवं अष्टमीको प्र
प्रहरकी अंत्य तीन घडी पुच्छ, एकादशीको ६ यामकी अं
घडी पुच्छ, पूर्णिमाको ३ तीन प्रहरकी अंत्य ३ तीन घडी पु
इसीरीतीसे कृष्णपक्षके तृतीयाको ७ प्रहरकी अंत्य ३ ती
घडी पुच्छ, दशमी १० को पांच प्रहरकी अंत्य तीन घडी पु
सो शुभ है ऐसा जानना और जो परदलकी भद्रा पूर्वदलमें हो
और पूर्वदलकी भद्रा परदलमें होय तो वह भद्रा संपूर्ण कर्म
शुभकारक है ऐसा जानना.

भद्रायाः शरीरविभागमाह.

मुखेपंचगलेत्वेका वक्ष्यस्येकादशः स्मृताः
नाभौचतस्रः षट्कट्यांतिस्रः पुच्छेतु नाडिका

टी०-मुखमें पांच, कंठमें एक, हृदयमें अकरा, नाभीमें ४,
में ६, और पुच्छमें ३ घटि इसी तरहसे ३० घडीमें भद्राका
रीरविभाग होता है.

फलमाह.

कार्यहानिर्मुखेमृत्युर्गलेवक्षसिनिस्वता
कट्यामुन्मत्तताभौच्युतिःपुच्छेध्रुवोजय

टी० मुखमें कार्यहानि, कंठमें मृत्यु, हृदयमें दरिद्रता
टि याने कमरमेंउन्मत्तता, नाभीमें कार्यनाश, और पुच्छ
यलाभ होगा ऐसा जानना.

चन्द्रतः स्वर्गमृत्युपातालवासज्ञानं.

कर्ककुंभद्वयेभूस्थाकोर्पजन्तृतियेद्युगा क

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

न्याचापहृयेचंद्रेभद्रापातालवासिनी १

टी०-कर्क, कुंभ, सिंह, मीन ये ४ राशीके चंद्रमें भद्राका वास पृथ्वीमें जानना. वृश्चिक, मेष, वृषभ, मिथुन, ये चार राशीके चंद्रमें भद्राका वास स्वर्गमें जानना. कन्या, तूल, धन, मकर ४ राशीके चंद्रमें भद्राका वास पातालमें जानना.

फलम्.

स्वर्गेभद्राभवेत्सौख्यंपातालेचधनागमः मृ
त्यलोकेयदाभद्राकार्यसिद्धिस्तदानहि १

टी०-भद्रा स्वर्गमें होय तो उसका फल सौख्य. पातालमें होय धनागम फल. मृत्यलोकमें याने इहलोकमें भद्रा रहे सो कार्य नि करती है. ऐसा फल जानना.

वारपरत्वेंनामज्ञानम्.

सोमेशुक्रेचकल्याणिशनौचैवतुवृश्चिकी
गुरोपुण्यवतीज्ञेयाचान्यवारेषुभद्रिका १

टी०-सोमवार या शुक्रवारको भद्रा होय तो कल्याणी जान. शनिवारको होय तो वृश्चिकीनामजानना. गुरुवारको होय पुण्यवती जानना. और रवि, मंगल, बुध ये वारको होय तो भ. द्रा नामजानना. फल नामानुरूपही जानना.

इतिकरणप्रकरणं.

अथसंक्रांतिप्रकरणम्.

घोरारवौध्वांक्षिमृतद्युतौचसंक्रांतिरारेच-
महोदरीस्यात् मंदाकिनीज्ञेचगुरौचनंदामि
श्राभृगौराक्षसिचार्कपुत्रे १

टी०-रविवारके दिन संक्रांति होय तो उसकानाम घोरा; सोम. वको होय तो ध्वांक्षी, मंगलवारको होय तो महोदरी, बुधवा-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

रको होय तो मंदाकिनी; बृहस्पतवारको होय तो नंदा, शुक्रव
को होय तो मिश्राओर शनिवारके दिन संक्रांति होय तो उस
नाम राक्षसी जानना.

अन्यदपि.

उग्रक्षिप्रचरेमैत्रध्रुवमिश्रारव्यदारुणैः क्र
क्षैःसंक्रांतिरकस्यघोराद्याःक्रमशोभवेत् १

टी०- उग्र नक्षत्र, तीनों पूर्वा, भरणी, मघा इन नक्षत्रोंमें सं
ति होय तो घोरा नाम जानना. क्षिप्र, हस्त, अश्विनी, पुष्य. अभि
त् इन नक्षत्रोंमें संक्रांति होय तो ध्वांक्षी नाम जानना. चर, स्व
पुनर्वसु, श्रवण, धनिष्ठा, शततारका इन नक्षत्रोंमें संक्रांति
तो महोदरी नाम जानना. मैत्र, मृग, रेवती, चित्रा, अनुराधा,
नक्षत्रोंमें मंदाकिनी नाम जानना; ध्रुव, तीनों उत्तरा, रोहिणी
न नक्षत्रोंमें संक्रांति होय तो मंदाकिनी नाम जानना. मिश्र, वि
खा. कृत्तिका इन नक्षत्रोंमें संक्रांति होय तो मिश्र नाम जान
दारुण, मूल, ज्येष्ठा, आर्द्रा, आश्लेषा इन नक्षत्रोंमें संक्रांति
तो राक्षसी नाम जानना.

फलम्.

ध्वांक्षीवैश्यानस्करवयतिमहोदर्यलंचोरसा
र्थान् घोराशूद्रानथनरपतिनेवमदाकिनी
नंदारव्याचद्विजवरगणामिश्रकारव्यापशूंश्चोर
चांडालांतांप्रकृतिमरिवलांराक्षसीसंज्ञिताञ्के

टी०- ध्वांक्षीनाम होय तो वैश्यको स्करव जानना. महोद
नाम होय तो चोरको स्करव जानना. घोरा नाम होय तो शूद्रके
स्क. मंदाकिनी नाम होय तो राजाको स्करव. नंदा नाम होय तो ब्र
णको स्करव जानना. मिश्रा नाम होय तो पशूंको स्करव जानना.
राक्षसी नाम होय तो चांडालादिकोंको स्करव जानना.

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

कालफलम्.

पूर्वाण्हकालेनृपतिर्द्विजेंद्रान्मध्यंदिनेचाथ-
विशोपराण्हे शूद्रान्रवावुस्तमितेप्रदोषेपि
शाचकान्रात्रिचरान्निशीथे १ नटादिकां-
श्चापररात्रकालेप्रत्यूषकालेपशुपालकां
श्च संक्रांतिरर्कस्थसमस्तलिंगांप्रभातसं
ध्यासमयेनिहंति २

टी०-दिनके प्रथम भागमें होयतो ब्राम्हणको और राजोंको दुःखजानना. मध्यान्हमें होयतो वैश्यको दुःखजानना. दिनके तृतीय भागमें होयतो शूद्रको दुःखजानना. रात्रीके प्रथम भागमें होतो पिशाचको दुःखजानना. रात्रीके द्वितीय भागमें होयतो निंचर याने राक्षसोंको दुःखजानना. रात्रीके तृतीय भागमेंहोतो नटादिकको दुःखजानना. अरुणोदयकालमें होयतो पशुपालकको दुःखजानना. सूर्योदयकालमें होयतो गुसांई इत्यादिकको दुःखजानना.

संक्रांतिमुखम्.

अर्केशुक्रेमुखंपूर्वसोम्येभौमेचदक्षिणे;
शनौचंद्रेमुखंपश्चाद्गुरौचैवोत्तरामुखी १

टी०-रवि और शुक्रके दिन होयतो पूर्वमुख जानना. बुध और मंगलके दिन होयतो दक्षिणमुख जानना. शनि और सोमके दिन होयतो पश्चिममुख जानना. और बृहस्पतिवारके दिन होयतो उत्तरमुख जानना.

कारणपरत्वेसंक्रांतिमुखं.

बवेपूर्वमुखंप्रोक्तंबालवेयमदिङ्मुखं कौलवेपश्चिममुखंतैतिलेचोत्तरेमुखं १ गरेवाय
व्यदिग्वक्त्रावणिज्यायेयदिङ्मुखं भद्रा

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

यामीशदिग्वल्कंशकुनेर्निऋतौमुखं २ च
तुष्पदीचपातालेनागेचोर्ध्वमुखीभवेत् किं
स्तुघ्नेसर्वदिग्वल्कसंक्रांतिमुखलक्षणम् ३

टी०- बवकरणमें संक्रांति होय तो पूर्व मुख जानना. बा
व करणमें होय तो दक्षिणमुख जानना. कौलव करणमें
यतो पश्चिममुखजानना. तैतिल करणमें होय तो उत्तरमु
जानना. गर करणमें होय तो वायव्य मुख जानना. वणिज
रणमें होय तो आग्नेयमुख जानना. भद्रा करणमें होयतो
न्यमुख जानना. शकुनी करणमें होय तो नैर्ऋत्य मुख जान
चतुष्पद करणमें होय तो पाताल मुख जानना. नाग करणमें
यतो ऊर्ध्वमुख जानना. और किंस्तुघ्न करणमें होय तो सर्व
ऊर्ध्वमुख याने सर्व दिशामे मुख है ऐसा जानना.

अथदृष्टि.

चंद्रेगुरौदृष्टिर्विदिक्कृशानौसूर्येसितेनैर्ऋ-
तिकोणदृष्टिः धात्रीसुतेदिक्पवनेनिरुक्ता
बुधेशनौरुद्रदिशिक्षणंभवेत् १

टी०- सोम और बृहस्पतीको होय तो अग्निकोणमें
जानना. रवि और शुक्रको होय तो नैर्ऋत्य कोणमें जान
मंगलको होय तो वायव्यकोणमें जानना और बुध और
नीको संक्रांति होय तो उस्की दृष्टि ईशान्यकोणमें है ऐस
नना.

अथगमन.

मंदेचंद्रेगमःसौम्येबुधेभौमेचवारुणे रवौ
शुक्रेगमोयाम्येगुरौप्राग्गमनंस्मृतम् १

टी०- शनिवार और सोमवारको संक्रांति होय तो उस
क्रांतीका गमन उत्तरदिशामें जानना. बुधवार और मंग
रको होय तो पश्चिमदिशामें गमन जानना. रविवार और

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

कवारको होय तो दक्षिणदिशामें गमन जानना और बृहस्प-
वारको जो संक्रांति होय तो उस्का गमन पूर्व दिशामें है ऐसा
जानना. स्थिति.

चतुष्पदेतैतिलनागयोश्वस्कंदोरविःसंक्र
मणंकरोति विद्याहवारव्येचगराव्हयेच
सबालवारव्येस्थितएवबिष्टा १ फल
किंस्तुघनाम्भिशकुनेवणिक्कौलवारव्येचो
र्ध्वस्थितस्यरवलुसंक्रमणंवेस्यात् धा-
न्यार्घविष्टिषुभवैतत्क्रमशस्त्वदृष्टोमध्येषु
तेतिमुनयःप्रवदंतिपूर्वे २ वाहन सिंहो
व्याघ्रोवराहश्वगर्दभःकुंजरस्तथा महि-
षीघोटकश्चाच्छागोवृषभकुक्कुटो ३ ग
जोवाजीवृषोमेषःखरोष्ट्रोकेसरिक्रमात्
शार्दूलमहिषीव्याघ्रवानराश्वबवादितः ४
फल गजेलक्ष्मीवृषेस्थैर्यंघोटकेवाहनेत
था सिंहेव्याघ्रेभयंप्रोक्तंस्कभिक्षंगर्दभे-
शकौ ५ वराहमहतीपीडाजायतेमेषवा
हने महिष्याश्वभवेत्क्लेशःकुक्कुटेमृत्युरेव
च ६ वस्त्र श्वेतपीतहरितंचपाडुररक्त
श्याममसितंबहुवर्णं कंबलंविवसनंधन
वर्णान्यंशकानिचबवादितःक्रमात् ७
आयुध भुशुंडीचगदारवज्रदंडकोदंडतो
मरान् कुंतपाशाकुशारम्भचबाणश्चैववायु
धंबवात् ८ भोजनपात्र सौवर्णेरजत
ताम्रकास्यंलोहंचरवपरं पत्रवस्त्रंकरोभू
मिःकाष्ठपात्रंबवादितः ९ भक्षपदार्थ-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भन्नंचपायसंभक्षंपक्वान्नंचपयोदधि चि
त्रान्नंगुडमध्याज्यंशर्करातुबवादितः १०
लेपन कस्तूरीकुंकुमंचैवचंदनंमृत्तिका
तथा गोरोचनमरक्तश्चहरिद्राचतथांजनं
सिंदूरमगरुश्चैवकर्पूरश्चबवादितः ११
जाति देवभूताहिविहगपशवोमृगएव
च ब्रम्हक्षत्रियविट्शूद्रमिश्रजातीबवा-
दितः १२ पुष्प पुन्नागजातिबकुलश्च
केतकीबिल्वस्तथार्कंकमल्लश्चदूर्वा मल्ली
तथापाटलिकाजपाचबवादिपुष्पाणिच
योजयेत्तु १३ भूषण नूपुरंकंकणंमु
क्ताविद्रुममुकुटंमणिं गुंजावराटकनी-
लंगरुत्मरुक्मकबवात् १४ कंचुकी
विचित्रपात्रांशूकभूर्जपत्रिकासीतातथा
पाटलनीलवर्णा कृष्णाजिनंचर्मचवल्क
पांडुराबुवादितश्चैवतुकंचुकीस्यात् १५
वय शिशुकुमारीचगतालुकायुवाप्रौ
ढाग्रगल्भाचततश्चवृद्धा वंध्यातिवंध्या-
चरुकताथिंनीचप्रव्राजकाचेवफलंशुभं
बवात् यद्वद्योनुरूपस्यात्तस्यतस्यमहु
द्भयम् १६ पंथाश्चभोगोरतिहास्यदुमु
खीज्वरान्विताभुक्तिरुकंपितामृता,
ध्यानस्थिताककंशबद्धरूपीणीबवाद्य-
वस्थाः कथितामुनींद्रैः १७ ६ ६

टीका- यसब वस्तूका नीचे लिखे हुवे चक्रपरसें ज्ञान होवैगा ऐसा मुनियोंनें कहाहै.

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

कोष्टकम्.

करण	बव	बालव	कौलव	तैतिल	गर	वणिज	विष्टि	शकुन	चतुस्प	नाग	किंस्तु
स्थिति	बैठी	बैठी	खडी	सूती	बैठी	खडी	सूती	खडी	सूती	सूती	खडी
फल	मध्य	मध्य	महगा	सस्ता	मध्य	महगा	मध्य	महगा	सस्ता	सस्ता	महगा
वाहन	सिंह	व्याघ्र	अस्वर	गधा	हाथी	भैंस	घोडा	कुत्ता	भेडा	बैल	मुरगा
उपवा	हाथी	घोडा	बैल	भेडा	गधा	ऊंट	सिंह	व्याघ्र	भैंस	वाघ	वानर
फल	भय	भय	पीडा	सुख	लक्ष्मी	क्लेश	सुख	स्थिर	पीडा	स्थिर	मृत्यु
वस्त्र	सफेद	पीला	हरा	मूल	लाल	नील	कृष्ण	छीट	मूर्ण	सफेद	धूम्र
आयु	तोफ	गदा	खड्ग	दंड	धनु	गतका	भाला	फांस	अंकुश	तलवार	बाण
पात्र	सोना	चांदी	तांबा	कांसें	लोह	तीक्ष्ण	पत्ता	कपडा	हाथ	भूमि	काष्ठ
भक्ष	अन्न	क्षीर	भात	घेवर	दूध	दही	सिंच	गुड	सहत	घीव	चीनी
लेपन	कस्तू	रोरी	चंदन	गापी	गोरो	रक्तचं	हरीद	काजल	सेंदूर	अगर	कपूर
वर्ण	देव	भूत	सर्प	पुरुष	मृग	ब्राह्म	क्षत्री	वैश्य	शूद्र	वर्श	चांडा
पुष्प	केशर	जाही	मोसरी	केवडा	बेल	मंदार	कमल	दूब	बेला	गुलमे	शोड
भूषण	घुंगरु	कगना	मोती	मूंगा	मुकुट	मणि	घुडची	कवडी	लील	पाच	सुवर्ण
कंचु	छीट	पत्ता	हरी	भूर्जप	सफेद	गुला	नील	कृष्ण	चर्म	वल्क	धूम्र
वय	बाला	कुमा	विध	युवा	मध्यव	अंत्य	वृद्धा	वंध्या	अ.वं	पु.वं	वदरू
अवः	पंथा	भोग	रति	हास्य	दुएमु	ज्वरयु	भुक्ति	कपि	मृता	ध्यान	कर्क

फलम्.

आयुधंवाहनाहारोयज्जातीयंधनंचयत्;
स्करोपविष्टातिष्ठतस्तेलोकाक्षयमाप्नुयुः १

टी०- जो वाहनादिक वस्तु परसंक्रांतीका भोग होय तो उसवस्तूका नाशजानना.

मूर्तयः

संक्रांतीमूर्तिभेदाहरपवनयमेवारुणेसार्प
ऐंद्रे एषांपंचेंदुसंज्ञांगुरुकरपितृभेचाग्नि
दस्रेचसौम्ये त्वाष्ट्रेमैत्रेचसूलेश्रुतिवस्कवपु
षात्रीणिपूर्वारवरामेब्राम्हेदित्येहिदेवेभवति

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

शरकृताद्युत्तरान्त्रीण्यृक्षं १ बाणवेदैः स-
मर्घस्यानाध्यस्थंव्यामरामयोः मूर्त्तौपंचद-
शेयातेदुर्भिक्षंचप्रजायते २

टी०- अब संक्रांतिका मूर्तिभेद कहते है. आर्द्रा, स्वाती, भरणी, शततारका, आस्लेषा, ज्येष्ठा, इस नक्षत्रमें होय तो दुर्भिक्ष होय. प्रजाको दुःख होय. १५ मूर्ति जानना. पुष्य, हस्त, मघा, कृत्तिका, अश्विनी, मृग, चित्रा, अनुराधा, मूल, श्रवण, धनिष्ठा, रेवती, ३ पूर्वा इस नक्षत्रमें होय तो मध्यमफल जानना. ३० मूर्ती, रोहिणी, पुनर्वसू, विशाखा, तीनों उत्तरा इस नक्षत्रमें होय तो जनको सुख होय. ४५ मूर्त्ती जानना.

दूसरा प्रकार.

पूर्वसंक्रांतिनक्षत्रात्परसंक्रांतिऋक्षकं द्वि
त्रिसंख्यासमर्घस्याच्चतुःपंचमहर्घता १ ६

टी०- संक्रांत जोगत हुई होय तो उस संक्रांतीसें मासंसंक्रांती तक गिनना. २ अथवा ३ नक्षत्रका अंतर होय तो समर्घ जानना. ४ अथवा ५ नक्षत्रका अंतर होय तो दुर्भिक्ष जानना.

अन्यदपि.

संक्रांतिनाडीनवमिश्रिताच्चसप्ताहतापाव
कभाजिताच एकेसमर्घोद्वितीयेचसौम्यं
शून्येमहर्घंमुनयोवदंति १

टी०- संक्रांतीके घडीमें ९ मिलावना और सातसे गुण देना. और तीनसे भागलेना. १ शेष रहे तो उत्तम फल, २ शेष रहे तो मध्यम फल और० शेष रहे तो महर्घता जानना.

संक्रांतिनक्षत्रफलम्.

संक्रांत्याधरनक्षत्राद्गणयेज्जन्मभावधि त्रि
कंषट्कंत्रिकंषट्कंत्रिकंषट्कंपुनःपुनः

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

पंथाभोगोव्यथावस्त्रंहानिश्चधिपुलंधनम् १

टी०-संक्रांति जिसनक्षत्रमें लगेगी उसनक्षत्रसेंजन्मनक्षत्र तकगिनके (गिननेकीरीति) प्रथम३नक्षत्र, पंथा६, भोग, ३ व्यथा, ६ वस्त्र, ३ हानि, ६ धनप्राप्ति इसरीतीसेंजानना.

जन्ममासतिथिनक्षत्रफलम्.

यस्यजन्मर्क्षमासाद्यतिथौसंक्रमणंभवेत्
तन्मासाभ्यंतरेतस्यवैरंक्लेशंधनक्षयः १

टी०-जन्मनक्षत्रमेंसंक्रांति लगे तो वैरजानना. जन्ममासमें होय तो क्लेशजानना. और जन्मतिथीको होयतो धनका नाशजानना.

संक्रांतिरूपमाह.

षष्ठियोजनविस्तीर्णासंक्रांतिःपुरुषाकृतिः
एकवक्त्रानवभुजालंबोष्टीदीर्घनासिका १
पृष्ठालोकाभ्रमंत्येवगृहीत्वाखपरंकरे एवं
संक्रमणेयस्याःफलंप्रोक्तंमनीषिभिः २

टी०-संक्रांतिका शरीरप्रमाण २४० कोस, और पुरुषके ऐसा आकार, १ मुख, २ भुजा, ओठ लंबा, बडी नासिका, आगे देखती है पीछे चलती है, हाथमें खपरा लिया है, भ्रमण करती है ऐसा रूप संक्रांतिका जानना.

संक्रांतीके हाथमेंफल.

मेषालिकर्केचतथैवरक्तंचापेचमीनेचतुलेच
पित्तं श्वेतंतुषेस्त्रीमिथुनेचचंद्रेकृष्णंचनक्रे
थघटेचसिंहे १ रक्तंफलंभवेद्दुरवंश्वेतेचैव
स्करवंशुभं पीतेश्रीरुक्तंतथाप्रोक्ताश्यामो
मृत्युर्नसंशयः २ ६ ६

टी०-मेष, वृश्चिक, कर्क इस ३ राशीके चंद्रमामें संक्रांतिप्रवेश होय तो हाथमें रक्तफल जानना, और प्रजाको दुःखप्राप्ति

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

जानना. धन, मीन, तूल, इस तीन राशीके चंद्रमामें संक्रांतिप्रवेश होय तो पीतफल जानना, लक्ष्मीप्राप्ति होय. वृषभ, कन्या, मिथुन इस तीन राशीके चंद्रमामें संक्रांतिप्रवेश होय तो सफेद फल जानना, सुखप्राप्ति होय. मकर, कुंभ, सिंह इस तीन राशीके चंद्रमामें संक्रांतिप्रवेश होय तो कृष्णफल जानना. मृत्यु प्राप्ति जानना.

संक्रांतिपुण्यकालः

संक्रांतिकालादुभयत्रनाडिकापुण्यामताः
षोडशषोडशोष्णगोः निशीथितोर्वागपरत्र
संक्रमेपूर्वापराह्णेतिमपूर्वभागयोः १

टी०- संक्रांतिके पूर्व और पर १६ घडी पुण्यकाल होता है. परंतु आधी रातके पहिले होय तो दिनके तृतीय भागमें पुण्यकाल जानना. आधी रातके बाद होय तो पर दिनके पूर्वभागमें पुण्यकाल जानना.

इतिसंक्रांतिप्रकरणं.

अथग्रहणप्रकरणम्.

चंद्रग्रहणप्रवृत्ति.

भानोःपंचदशेऋक्षेचंद्रमायदितिष्ठति पौर्णमास्यांनिशाशेषेचंद्रग्रहणमादिशेत् १

टी०-सूर्यनक्षत्रसे पंधरावे नक्षत्रमें चंद्रमा होय और पौर्णिमा होय के रात बच जाय तो चंद्रग्रहणका संभव काल जानना.

सूर्यग्रहण.

मघोनंग्रस्तनक्षत्रात्षोडशंयदिसूर्यभं अमावास्यादिवाशेषेसूर्यग्रहणमादिशेत् १

टी०- सब महिनेमें सूर्य और चंद्र अमावास्याके दिन एकराशीमें प्राप्त होते हैं परंतु ग्रहणकालमें एक नक्षत्रमें दिन कोभायके

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अमावास्या जायके दिनशेषरहे तो सूर्यग्रहणकी प्राप्ति जानना. पर उस दिन चंद्रनक्षत्रसें सूर्यनक्षत्रतक गिनकेउसमेंसें ११ निकालके सोलहवां नक्षत्र आवे तो सूर्यग्रहण जानना.

राशीकोशुभाशुभ.

त्रिषट्दशायोगपतंनराणांशुभप्रदंस्याद्ग्रहणंरविंदोः द्विसप्तनंदेषुचमध्यमंस्यात् शेषेष्वनिष्टंसुनयोवदंति १

टी०- सूर्य अथवा चंद्रग्रहण अपनेराशीसे तृतीय३, षष्ठ६, दशम १०, एकादश ११, ये राशी शुभ होतीहै. और २ द्वितीय, ७ सप्तम, ९ नवमये मध्यम जानना.

दूसराप्रकार.

ग्रासातृतीयोष्टमगश्चतुर्थस्तथायसंस्थः शुभदःस्वराशेः ग्रासाद्द्विःपंचनवतुमध्यस्ततोधमोक्ताश्चबुधैश्चशेषाः १

टी०- सूर्यग्रहण जिस राशीमें लगें उस राशीसें ३।८।४।११ ये शुभ जानना. ५।९।६ ये मध्यम जानना. और १।२।७।१०।१२ ये अशुभ जानना.

अथप्रयोग.

ऋतुप्रकरण.

शुभाशुभफलम्.

तिथिरेकगुणाप्रोक्तानक्षत्रंचचतुर्गुणम्
वारःषष्ठगुणोज्ञेयोमासश्चाष्टगुणस्मृतः१
वस्त्रंशतगुणंविद्याद्दर्शनंचततोधिकम्
संक्रांत्याग्रहणेचैवंवैरिणीचिगतालका २

टी०- स्त्रीको प्रथम ऋतु मास होता है उसका शुभाशुभफल

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

यथाविधी कहते हैं. तिथीका एक गुण, नक्षत्रके ४ गुण, वार के ६ गुण, महिनेके ८ गुण, वत्सरके १०० गुण और जो देखे तो उस्को बंहोत दोष है. संक्रांतिके दिन ऋतु प्राप्त होय तो वंध्या होय और ग्रहणके दिन होय तो विधवा होती है.

मासफलम्.

प्रथमर्त्तौमधोनारीविधवाभवतिध्रुवम् वै
शारवेधनपुत्राढ्याज्येष्ठरोगान्विताभवेत् १
आषाढेचमृतापत्याश्रावणेचाधनान्विता
भाद्रेचदुर्भगात्वाश्विनेचतपस्विनी २
ऊर्जेल्पायुर्भवतीनारीमार्गशीर्षेबहुप्रजा पौ
षेतुपुंश्चलीनारीमाघेपुत्रसुखान्विता ३ फा
ल्गुनेश्रीमतिसाध्वीक्रमान्मासफलंस्मृतम् ३

टी०-स्त्रीको प्रथमऋतु चैत्रमासमें प्राप्त होय तो विधवा जानना. वैशाखमें होय तो धनपुत्र करके युक्त होगी. ज्येष्ठ मासमें होय तो रोगयुक्त होती है. आषाढमासमें होय तो मृतप्रजा. श्रावणमें होय तो धनयुक्त. भाद्रपदमें होय तो दुर्भगा होती है. आश्विनमें होय तो तपस्विनी. कार्तिकमें होय तो थोडा आयुष्य. मार्गशीर्षमें होय तो बहुत प्रजा. पौषमें होय तो जारिणी. माघमें होय तो पुत्रसुखयुक्त. और फाल्गुनमें प्रथम ऋतु प्राप्त होय तो पतिव्रता जानना. ऐसा क्रम मुनियोंनें लिखा है.

तिथिफलम्.

शुचिर्नारीप्रतिपदीद्वितीयायांतुदुःखिनी
तृतीयायांपुत्रवतीचतुर्थ्यांविधवाभवेत् १
पंचम्यांचैवसौभाग्यषष्ठ्याकार्यविनाशिनी
सप्तम्यांसुप्रजानारीचाष्टम्यांराक्षसीतथा
नवम्यांविधवानारीदशम्यांसौख्यभोगिनी

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

एकादश्यांशुचिर्नारीद्वादश्यांमरणंध्रुवम् ३ त्रयोदश्यांशुभाप्रोक्ताचतुर्दश्यांपूर्णान्विता पौर्णिमास्याममावास्याशुभंचाशुभमेवच ४

टी०-स्त्रीको प्रथम ऋतु प्रतिपदाको प्राप्त होय तो पवित्रजानना. द्वितीयाको होय तो दुःखी. तृतीयाको पुत्रवती. चतुर्थीको विधवा. पंचमीको होय तो सौभाग्यवती. षष्ठीको होय तो कार्यनाश. सप्तमीको होय तो शुभप्रजा. अष्टमीको होय तो राक्षसी. नवमीको होय विधवा. दशमीको होय तो सौख्यकाभोग करे. एकादशीको होय तो अशुचि. द्वादशीको होय तो मरणप्राप्ती. त्रयोदशीको होय तो शुभजानना. और चतुर्दशीको होय तो परन्न होय. पौर्णिमाको होय तो शुभजानना और अमावास्याको प्रथम ऋतु प्राप्त होय तो अशुभकारक जानना.

वारफलम्.

आदित्येविधवानारीसोमेचैवमृतप्रजा क्षौणीपुत्रेआत्मघातीबुधेकन्याप्रसूस्मृता १ गुरुवारेसुतप्राप्तिःकन्यापुत्रयुताभृगौ मंदेचपूंश्चलीनारीज्ञेयंवारफलंबुधैः २ ६५

टी०-स्त्रीको रविवारको प्रथम ऋतु प्राप्त होय तो विधवा होती है. सोमवारको होय तो मृतप्रजा होती है. मंगलवारको होय तो आत्मघाती होय. बुधको होय तो कन्याबहुत होय. बृहस्पत्यवारको होय तो पुत्रप्राप्ति. शुक्रवारको होय तो कन्यापुत्रयुक्त होय. और शनिवारको होयतो जारिणी ऐसा जानना.

नक्षत्रफलम्

अश्विन्यांसुभगानारीभरण्यांविधवाभवेत् कृत्तिकायांचवंध्यास्याद्रोहिण्यांचारु

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भाषिणी १ मृगेदरिद्र्ययुक्तोक्ताचार्द्रायां क्रोधकारिणी पुनर्वसौपुत्रवतीपुष्येपुत्र धनान्विता २ आश्लेषायांभवेद्वंध्यामघा यांचार्थसंयुता पूर्वायांचार्थयुक्ताहिचो त्तरायांसतीतथा ३ हस्तेपुत्रधनैर्युक्तान्चि त्रायामनुचारिणी स्वात्यांगर्भोद्भवयवावि शाखायांतुनिष्ठुरा ४ मैत्रेचदुर्भगानारी ज्येष्ठायांविधवाभवेत् मूलेपतिव्रतासाध्वी पूर्वासौभाग्यभोगिनी ५ उत्तरार्थवती प्रोक्ताश्रवेसौभाग्यसंपदा धनिष्ठायांशुभानारीशतेभद्रान्विताबुधैः ६ पुभेचोक्ता कामिनीतुभेलक्ष्मीयुताशुभा रेवत्यांपरिरिक्तातुत्रयंभानांफलंबुधैः ७ छ

टी०-नक्षत्रोंमें ऋतुभासकालका फल शुभाशुभनीचेलिखेकियेकोष्टकपरसें मालूम होवेगा.

अ.	शुभगा.	पु.	पुत्रधनयुक्त	स्वा.	पररता.	श्र.	सौभाग्य.
भ.	विधवा.	आ	वंध्या.	वि.	निष्ठुर.	ध.	शुभा.
कृ.	वंध्या.	म.	द्रव्ययुक्ता	अ.	दुर्भगा.	श.	कल्याण.
रो.	चारुभाषि.	पू.	द्रव्ययुक्ता	ज्ये.	विधवा.	पू.	लक्ष्मीयुक्त
मृ.	दारिद्र्य	उ.	पतिव्रता.	मू.	पतिव्रता.	उ.	शुभा.
आ.	क्रोधी.	ह.	पुत्रधनयुक्त	पू	सौभाग्यवती	रे.	पतित्यागी.
पु.	पुत्रवती.	चि	पतिमनोयोग्य	उ.	धनयुक्ता	०	०००

योगफलम्.

आद्यर्तौविधवानारीविष्कंभेचरजस्वला स्ने हःप्रीत्यातुदंपत्योरायुष्मांस्कधनप्रदः १

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सौभाग्येपुत्रयुक्तातुशोभनेमंगलान्विता अ
तिगंडेतुविधवास्तुकर्मणितुशोभना २ ध्रु
तौसंपत्तियुक्ताचशूलेरोगयुताभवेत् गंडे
दुःखान्वितानारीवृद्धौपुत्रान्विताभवेत् ३
ध्रुवेतुशोभनानारीव्याघातेभर्तृघातिनी हु
र्षणेहर्षयुक्तातुवज्रेचैवानपत्यता ४ सिद्धौ
पुत्रान्वितानारीव्यतीपातेविभर्तृका मृतवत्सा
चवर्याणेपरिघेचाल्पजीविनी ५ शिवेपुत्र-
वतीनारीसिद्धेशीघ्रफलान्विता साध्येधर्म
परानारीशुभेशुभगुणान्विता ६ शुक्ले-
शुभकरानारीब्रह्मणिस्वपतौरता ऐंद्रेतु
देवरतावैधव्यंवैधृतौस्मृतम् ७ ६७

टी०-योगका शुभाशुभ फल नीचे लिखेले कोष्टकपरसेजा
नलेना. कोष्टकम्.

वि.	विधवा.	ध्रु.	संपत्तियुता	व.	अपुत्रा.	सा.	धर्मयुक्ता.
प्री.	पतिस्नेह.	शू.	रोगयुता.	सि.	पुत्रयुक्ता	शु.	उन्मत्तलक्षण
आ.	धनयुक्ता	गं.	दुःखदायी.	व्य.	नष्टपति	शु.	शुभकारि.
सौ.	पुत्रयुक्त.	वृ.	पुत्रयुक्ता	व.	मृतवत्सा	ब्र.	पंररता.
शौ.	मंगलयुक्ता	ध्रु.	शोभना.	प.	अल्पजीवि	ऐं	देवररता.
अ.	विधवा.	व्या.	पतिघाति.	शि.	पुत्रयुक्ता.	वै.	वैधव्य.
सु	शोभना.	हृ.	हर्षयुक्ता.	सि.	फलप्राप्ति	०	०००

करणफलम्.

बबेप्रोक्तातुवंध्यास्त्रीबालवेपुत्रसंपदः कौ
लवेपुंश्चलीनारीतैतिलेचारुभाषिणी १ ग
रेचगुणसंपन्नावणिजेपुत्रिणीस्मृता वि

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ष्ट्यांचमृतवत्साचशकुनेकामपीडिता २
चतुष्पदेशुभानारीनागेपुत्रवतीभवेत् किं
स्तुघ्नेव्यभिचारीतुकरणानाशुभंफलम् ३

टी०- बवकरणमें ऋतु प्राप्त होयतो वंध्याजानना. बालवमें पुत्रवती, कौलवमें जारिणी, तैतिलमें चारुभाषिणी, गरमें होयतो गुणयुक्ता, वणीजकरणमें होय तो पुत्रिणी, भद्रामें होयतो मृतवत्सा, शकुनीमें होय तो अतिकामिनी, चतुष्पद में होय तो शुभा, नागमें होय तो पुत्रवती, और किंस्तुघ्नमें प्रथमऋतु स्त्रीको प्राप्त होय तो वेश्या जानना.

राशिफलम्.

व्यभिचारीतुमेषेस्याद्वृषभेसुरवभोगिनी
मिथुनेधनयुक्तोक्ता कर्कटेदुःखिताबुधैः १
सिंहेपुत्रवतीनारीकन्यायामानिनीशुभा तु
लेविचक्षणानारी वृश्चिकेव्यभिचारिणी २
धनेपतिव्रताज्ञेयामासहीनाचनक्रके कुंभे
धनवतीज्ञेयामीनेचंचलाबुधैः ३ ७

टी०-प्रथमऋतु मेषराशिमें प्राप्त होय तो जारिणी जानना. वृषभमें सुरवभोगिनी जानना. मिथुनमें धनयुक्ता जानना. सिंहमें पुत्रवती जानना. कन्यामें अभिमानी जानना. तुलामें विचारवान जानना. वृश्चिकमें वेश्या जानना. धनमें पतिव्रता जानना. मकरमें कृशांगी जानना. कुंभमें धनयुक्ता जानना और मीनमें प्रथमऋतु स्त्रीको प्राप्त होय तो चंचला जानना.

होराफलम्.

सूर्येचव्याधिसंयुक्ताचंद्रेहोरेपतिव्रता,
कुजेहोरेतुदाभाग्यंबुधेहोरेतुपुत्रिणी १
जीवेसर्वसमृद्धिः स्याद्भृगौसौभाग्यमेवच,

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

शनौसर्वविनाशायहोरकस्यफलंबुधैः २

टी०- होराका शुभाशुभफल नीचे कोष्टकमें देखनेसें मालूम होवेगा.

कोष्टकम्.

होरा.	फल.	होरा.	फल.
१ सूर्यकाहोरा.	व्याधि.	५ गुरूकाहोरा	सर्वसमृद्धि.
२ चंद्रकाहोरा.	पतिव्रता.	६ शुक्रकाहोरा	सौभाग्य.
३ मंगलकाहोरा	दुर्भगा.	७ शनिकाहोरा	सर्वविनाशी.
४ बुधकाहोरा	पुत्रिका.	०	०

लग्नफलम्.

मेषलग्नेदरिद्राचवृषभेधनसंयुता कामिनी मिथुनेलग्नेकर्कटेपतिनाशिका १ सिंहे पुत्रप्रसूताचपतियुक्तास्त्रिलग्नके तूलेचैवांधतादार्याद्यूश्चिकेदद्रुदुःखिनी २ धनलग्नेधनेश्वर्यंमकरेकर्कशाभवेत् कुंभेवंशद्वयंमीनेसर्वगुणान्विता ३

टी०- प्रथम जो राशीमें सूर्य होय सो लग्न, सूर्योदयमें होता है. उदयलग्नमें अस्ततक ६ लग्नभोगते है. अस्तसें उदयतक ६ लग्नभोग करते है. मेषलग्नमें स्त्रीको प्रथम ऋतु प्राप्त होय तो दरिद्री जानना, वृषभमें धनयुक्ताजानना, मिथुनमें कामयुक्तजानना. कर्कमें पतिनाशिनी जानना, सिंहमें पुत्रवती जानना, कन्यामें पतियुक्ता जानना, तुलामें अंधताजानना, वृश्चिकमें दद्रु और दुःखी जानना, धनमें धनयुक्ताजानना, मकरमें कर्कशाजानना, कुंभमें दोनों वंश (स्त्रीका और पतिका ऐसे) का घातजानना. और मीनमें होय तो गुणयुक्ताजानना.

॥ इतिलग्नफलम्. ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ग्रहोंकाफल.

लग्नेराहुश्चसौरिश्चरविचंद्रंतथैवतु तदासा
विधवानारीसर्वसौभाग्यवर्जिता १

टी०-जिसलग्नमें स्त्रीको प्रथमऋतु प्राप्त होयउस लग्नमें रा हू होयअथवा शनि,रवि,या चंद्रमा होय तो विधवाजानना. वह सौभाग्यवसे वर्जित होय.

रक्तफल.

प्रथमार्तौफलंस्त्रीणांमुच्यतेरजसाधुना
शुक्लभगापुत्रसंयुक्ताशुक्लवर्णतथार्त्तवे १
शशशोणितसंकाशेयद्यावैलक्तसन्निभे
पुत्रकन्याप्रसूतीस्यान्नीलेतुस्यामृतप्रजा २
कर्बुरेम्रियतेसाचपिंगलेचमृतप्रजा कृष्णे
चविधवानारीरजस्येवंविनिर्द्दिशेत् ३ वरा
मध्यश्चवास्यात्तुदुर्भगावहुशोणिता शोणि
तेबिंदुमात्रेतुस्त्रैरिणीचाल्पशोणिता ४ र-
क्तेरक्तेभवेत्पुत्रःकृष्णेचमृतपुत्रिका पिच्छि
लाचभवेद्वंध्याकाकवंध्याचपांडुरा ५ पी-
तेदुश्चारिणीप्रोक्तासुभगागुंजवर्णके सिं
दुराभेभवेत्कन्यारजःशोणितलक्षणम् ६

टी०-स्त्रीको प्रथम ऋतु प्राप्त होना है उस्मे रक्तका फल कह ते है. शुक्लवर्ण रुधिर होय तो पुत्रवती जानना. शशि कहिये खरगोस्तके ऐसे रुधिर होय तोभी पुत्रवती जानना. माहुर के ऐसा वर्ण होय तो कन्यावती जानना. नीलवर्ण होय तो मृत प्रजा. कर्बूर कहिये चित्रविचित्र वर्ण होय तो स्त्री मरे. पिंगट कहिये कुछ श्वेत कुछ पीतवर्ण होय तो मृतप्रजा जानना. कृ ष्णावर्ण होय तो विधवा जानना. मध्यरक्त होय तो श्रेष्ठ जानना

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

बहुत रक्त होय तो दुर्भगा जानना, थोडा रक्त बिंदुमात्र होय तो अप्रजा जानना. लाल रक्त होय तो पुत्रवती जानना, कृष्ण हो य तो मृतप्रजा, पिछिल कहिये पंख के वर्णऐसा होय तो वंध्या जानना, गुलाबी वर्ण होय तो काकवंध्या जानना. पीत वर्ण होय तो वेश्या जानना, घुंगचीके ऐसा वर्ण होय तो शुभ जानना, सिंदूरके ऐसा वर्ण होय तो कन्याप्रसूति जानना. इस तरहसे रक्त मालूम करके शुभाशुभ फल कहना.

कालफल.

पूर्वाण्हेसुभगाप्रोक्तामध्यान्हेचैवनिर्धन
अपराण्हेशुभाचैवसायान्हेसर्वभोगिनी १
संध्ययोरुभयोर्वेश्यानिशीथेविधवाभवेत्
पूर्वरात्रेतथावंध्यादुर्भगासर्वसंधिषु २

टी०-दिनके पूर्वभागमें ऋतु प्राप्त होय तो सुभगा जानना. मध्यान्हमें होय तो धनहीन जानना अपराण्हमें होय तो अशुभ. सायान्हमें होय तो सर्वसुखयुक्त जानना. दोनोंसंध्यामें होय तो वेश्या जानना. अर्धरात्रीमें होय तो विधवा जानना. पूर्वरात्रीमें होय तो वंध्या जानना. और संधीमें होय तो अशुभकारी है ऐसा जानना.

वस्त्रफलम्.

सुभगाश्वेतवस्त्राचरोगिणीरक्तवस्त्रका
नीलांबरधरानारीविधवापुष्पवंतिका १
भोगिनीपीतवस्त्राचमिश्रवस्त्रावरप्रिया
सूक्ष्मास्यात्सूक्ष्मवस्त्राचदृढवस्त्रापतिव्रता २ दुर्भगाजीर्णवस्त्राचसुभगामध्य
वाससा धूतवस्त्राशुभानारीमलिनीम
लिनाभवेत् ३

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

टी०-स्त्रीको प्रथम ऋतु सफेद वस्त्रपर होयतो सुभगा जानना, लाल वस्त्र होयतो रोगयुक्त, नीलवस्त्र होयतो विधवा पीतवस्त्र होयतो सुखयुक्त, चित्रविचित्र होयतो पतिप्रिया मलिनवस्त्र होयतो कृशांगी, मजबूत वस्त्र होयतो पतिव्रता पुरानावस्त्र होयतो अशुभ, मध्यवस्त्र होयतो सुभगा, धोवावस्त्र होयतो सुभगा, मैला वस्त्र होयतो मलिनता जानना.

रजस्वलाधर्म.

आर्तवाभिष्टुतानारीनैकवेश्मनिसंश्रयेत् नचान्यजातिसंस्पर्शंकुर्यात्स्पर्शनचक्वचित् १ त्रिरात्रंस्वसुखंनैवदर्शयेद्यस्यकस्यचित् स्ववाक्यंश्रावयेन्नैवनकुर्याद्दंतधावनम् २ नकुर्यादार्त्तवनारीग्रहाणामीक्षणंतथा अंजनाभ्यंजनंस्नानंप्रवासंवर्जयेत्तथा ३ नखादिकृंतनंरज्जूतालपात्रादिबंधनम् नवेशरावेभुंजीततायंचांजलिनापिबेत् ४

टी०- ऋतुमतीस्त्रीने एक घरमें रहना, अन्यजातीसेस्पर्शन करना, अपने जातीमेंभी स्पर्श न करना, तीन रात्र अपना सुख न किसीको दिखावना, न अपनी बाएगी किसीको सुनावना, दंतधावन नहीं करना, नक्षत्रोंका अवलोकन न करना, काजल न देना, तेल न लगावना, स्नान न करना, रस्तानहींचलना, नख नहीं निकालना डोरीको स्पर्श न करना, तालपत्रका बंधन न करना, नवीन मृतिकापात्रमें भोजन करना, और जल अंजुलीसें पीना.

रजस्वलास्नान.

हस्तानिलाश्विमृगमैत्रवसुध्रुवाख्यैः शक्रान्वितैःशुभतियोशुभवासरेच स्नाना

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

दथार्तववतीमृगपौष्णवायुहस्ताश्विधातृ
भिरलंलभतेचगर्भम् १

टी०-ऋतुमती स्त्रीका स्नान उक्त नक्षत्रमें करावना. कोष्टक में स्पष्ट है और मृग, रेवती, स्वाती, हस्त, अश्विनी इस नक्षत्रों में स्नान करवानेसे जलदी गर्भ रहता है.

चतुर्थेहनिसास्पृश्यारजोदर्शनतः स्त्रियः
पंचमेहनिशुद्धासादैवकर्मणिपैतृके १

टी०-स्त्री ऋतुप्राप्तीके बाद ४ दिन अस्पर्श है. पुरुषने स्पर्श करना नहीं.

कोष्टकम्.

हस्त.	स्वाती	अश्विनी	मृग	अनुरा.	धनिष्ठा	नक्षत्र
उ. फा.	उ. षा.	उ. भा.	० ०	ज्येष्ठा	० ०	०
१ ८	२ १०	३ ११	५ १२	६ १३	७ १५	तिथयः
चं.	बु.	गु.	शु.	०	०	वार.

अन्यमतेतु.

प्रथमेहनिचांडालीद्वितीयेब्रम्हघातिनी
तृतीयेरजकीप्रोक्ताचतुर्थेहनिशुद्ध्यति १

टी०-स्त्रीऋतुप्राप्तीसे प्रथमदिन चांडाली रहती है. दूसरे दिन ब्रम्हघातिनी. तीसरे दीन धोबीनी और चौथे दिन शुद्ध जानना.

अन्यमतं.

भर्तुःस्पृश्याचतुर्थेन्हिस्नानेनस्त्रीरजस्वला
पंचमेहनियोग्यासादैवपित्र्येचकर्मणि १

टी०-स्त्री चतुर्थ दिनमें पतिसंग करनेमें योग्य है परंतु दैव और पितृ इनके काम की नहीं.

अन्यमतं.

वर्षद्वादशकादूर्ध्वंयदिपुष्पंबहिर्नहि

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

तः पुष्पं भवेत्येव पनसोदुंबरादिवत् १

टी०- १२ वर्षके नंतर स्त्रीको ऋतुप्राप्ति न हो तथापि पुरुष ने संग करना. वंशके वास्ते गुल्लर और कटहरके ऐसा जानना.

अथ गर्भाधानप्रकरणं.

श्लोक.

ऋतौ प्रथमे कार्यं पुन्नक्षत्रे शुभे दिने मघा मूलांत्यपक्षांतत्यक्त्वा चंद्रबले सती १

टी०- प्रथम ऋतूमें स्त्रीका गर्भाधान पुरुष नक्षत्रमें करना. शुभ दिनमें मूल, मघा, रेवती पक्षका अंत इसका त्याग करके और चंद्रबल देखके करना.

गर्भाधानेत्याज्यमाह.

गंडांतं त्रिविधं त्यजेन्निधनजन्मर्क्षे च मूलांत कंदास्त्रं पौष्णमथोपरागदिवसं पातं तथा वैधृतिं पित्रोः श्राद्धदिनं दिवा च परिघाद्यर्धं स्वपत्नीगमे भान्युत्पातहतानि मृत्युभवनं जन्मर्क्षतः पापभं १ भद्रा षष्ठी पर्वरिक्ता च संध्या भौमार्कार्कीनाद्यरात्रश्च तस्त्रः २

टी०- गर्भाधानमें जो वर्ज्य है सो आगले चक्रमें स्पष्ट देखोंगे.

गर्भाधानेत्याज्यचक्रम्.

गंडांत.	बुधतारा	जन्मतारा	मूल	भरणी.	अश्विनी.
रेवती	ग्रहणदिन	व्यतीपात	वैधृति	श्राद्धदिन	दिवस.
परिघार्ध	उत्पातनक्ष.	पापयुक्तल	भद्रा.	ज.ल.दष्ट	षष्ठी.
चतुर्दशी	अष्टमी	अमावा.	पौर्णिमा	संक्रांति	रिक्ता.
संध्या	भौम	रवि	शनि	प्रथमदिन	द्वितीयदिन.
तृतीयदिन	चतुर्थदिन	००	००	००	००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अन्यदपि.

ऋतुस्नानांतुयोभार्यांसन्निधौनोपगच्छति
घोरायांभ्रूणहत्यायांयुज्यतेनात्रसंशयः १

टी०-ऋतुस्नान कियेबाद स्त्रीकेपास शयन नकरनेसे भ्रूण-हत्याकापाप उनकेपतिको लगता है.

अन्यमतः

व्याधितोबंधनस्थोवाप्रवासेष्वपिपर्वसु
ऋतुकालेपिनारीणांभ्रूणहत्याप्रमुच्यते १

टी०-रोगी होय अथवा प्रवासमें होय अथवा कैद होय तोभी स्त्रीसंग नकरनेसे भ्रूणहत्याकहा है.

ऋतुप्राप्तीसे १६रात्रीमेंशुभाशुभ.

ऋतुस्वाभाविकस्त्रीणांरात्रयःषोडशःस्मृताः तासामाद्याश्चतस्रस्तुनिंदितैकादशीचया १ त्रयोदशीचशेषास्युःप्रशस्ता-दशवासराः तस्मान्त्रिरात्रंचांडालीपुष्पि-तांपरिवर्जयेत् २

टी०-ऋतु प्राप्त होय तबसे स्त्रीको सोलह दिन ऋतुरहता है. तीसमें प्रथम ४ रात्री और ११वी और १३वी येनिंदित है इस-वास्ते इस दिनका त्याग करना, और बाकी १० रात्रि शुभ जानना.

गर्भाधानकेशुभाशुभदिन.

रात्रौचतुर्थ्यांपुत्रस्याद्वत्न्यायुर्धनवर्जितः पं
चम्यांपुत्रिणीनारीषष्ठ्यांपुत्रस्तुमध्यमः १
सप्तम्यांमप्रजायोपिदशम्यामीश्वरःपुमान्
नवम्यांशुभगानारीदशम्यांप्रषरःसुतः २
एकादश्यामधर्म्यास्त्रीद्वादश्यांपुरुषोत्तमः
त्रयोदश्यांसुतापापावर्णसंकरकारिणी ३

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

धर्मज्ञश्चकृतज्ञश्चब्रह्मात्मदेवद्दढव्रतः ४ प्र-
जायतेचतुर्दश्यांपंचदश्यांपतिव्रता ब्राह्म
यःसर्वभूतानांषोडश्यांजायतेपुमान् ५

टी०- ऋतुप्रासीसे १६ दिनतक गर्भाधानको शुभाशुभ दिनचक्र नीचे लिखा है.

दि.	फल.	दि.	फल.	दि.	फल.	दि.	फल.
१	वर्ज्य.	५	कन्या.	९	सौभाग्यवृद्धि	१३	पापकर्मीक.
२	वर्ज्य.	६	पुत्रमध्यम.	१०	गुणवानपुत्र.	१४	धर्मज्ञपुत्र.
३	वर्ज्य.	७	पुत्रहीना.	११	अधर्मीपुत्र.	१५	पतिव्रता.
४	पुत्रअ०नि०	८	पुत्रईश्वरभक्त	१२	उत्तमपुत्र.	१६	उत्तमपुत्र.

गर्भाधानतिथिवारमाह.

षष्ठ्यष्टमीपंचदशीचतुर्थीचतुर्दशीमप्युभयत्र-
हित्वा शेषाःशुभाःस्फुस्तिथयोनिषेकेवाराः
शशांकार्यसितेंदुजाश्च १

टी०-षष्ठी, अष्टमी, पौर्णिमा, चतुर्थी, चतुर्दशी, अमावास्या. यह तिथी वर्ज्य करके शेष तिथी शुभ जानना. सोम, बृहस्पति, शुक्र बुध, ये वार गर्भाधानको शुभ जानना.

गर्भाधानेनक्षत्राण्याह.

हरिहस्तानुराधाश्चस्वातीवारुणवासवं
उत्तरात्रितयंसौम्यंरोहिण्यश्चशुभास्मृताः१

टी०-श्रवण, हस्त, अनुराधा, स्वाती, शततारका, ज्येष्ठा, उत्तरा फाल्गुनी, उत्तराषाढा, उत्तरा भाद्रपदा, मृग, रोहिणी ये नक्षत्रमें गर्भाधान संस्कार करना शुभ कहा है.

गर्भाधानेलग्नशुद्धिमाह.

केंद्रत्रिकोणेषुशुभैश्चपापैरन्यायारिगैः पुं

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ग्रहदृष्टलग्ने ओजांशकेऽजेपिचयुग्मरात्रौ
चित्रादितिज्याश्विषुमध्यमंस्यात् १

टी०-प्रथम.चतुर्थ.सप्तम.दशम ये केंद्र इसमें शुभग्रह होय.त्रिकोण, नवम, पंचम, इसमें शुभग्रह होय. तृतीय, एकादश, षष्ठ. इसमें पापग्रह होय. लग्न को पुरुषग्रह देखते होय. विषम नवमांशके चंद्रमा होय इसमे गर्भाधान शुभ जानना. और समरात्री, चित्रा, पुनर्वसु, पुष्य, अश्विनी, यह मध्यम जानना.

गर्भिण्यांपुंसवनसंस्कारमाह.

मूलादित्रितयेकरश्रवणकेभाद्रद्वयार्द्रात्रयेरेवत्यांमृगपंचकेदिनकरेभौमेनरिक्कातिथौ;
नेत्रेमास्यथवाग्निमासिधनुषिस्त्रीमीनयोश्चस्थिरेलग्नेपुंसवनंतथैवशुभदंसीमांतकर्माप्यमे १

टी०-मूल, पूर्वाषाढा, उत्तराषाढा, हस्त, श्रवण, पूर्वाभाद्रपदा, उत्तराभाद्रपदा, आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य, रेवती, अश्विनी, भरणी, कृत्तिका, रोहिणी.मृग और दूसरे महिनेमे यातीसरे महिनेमें शुभ.धनलग्नमें कन्या, मीन ये स्थिरलग्नमें करना शुभ होता है.सीमंत आठवे महिनेमें इसी मुहूर्तमें करना.

वारफल ॥ मृत्यश्चसौरेस्तनुहानिरिंदोःप्रजामृतिःपुंसवनेबुधस्य काकोहवंध्याभवतीहशुक्रेस्त्रीपुत्रलाभोरविभौमजीवैः १

टी०- शनिवारको पुंसवन करे तो मृत्यु जानना, सोमवारकाकरे तो शरीरनाश, बुधको करे तो पुत्रनाश, शुक्रको करे तो काकवंध्या और रवि, मंगल, बृहस्पतीको पुंसवन करे तो पुत्रकन्याप्राप्ति.

सीमंतोन्नयनमाह.

पुरुषग्रहवारास्थःशुभःसीमंतकर्मणि,
मध्यौस्त्रीग्रहवारौतुवर्जयेत्तुनपुंसकौ १

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

टी०-पुरुषग्रहकेवारमें सीमांतकर्मकरना शुभहोताहै. स्त्रीग्रहकेवारमें मध्यम भोर नपुंसकग्रहकेवारमें अतिनिकृष्ट जानना.

अन्यमते.

चतुर्थषष्ठाष्टमसंभाजीसौरेणगर्भेप्रथमं विधेयं सीमंतकर्मद्विजभामिनीनामासेष्टमे विष्णुबलींचकुर्यात् १

टी०-प्रथम गर्भधारणसे चतुर्थ, षष्ठ, अष्टम मासमें सौरमाससे गिनके सीमंतकर्म करना. ब्राम्हणकेस्त्रीको अष्टम मासमें विष्णुबलि करना शुभप्रद होता है.

अन्यमते.

रोहिण्यैंदवमादित्यपुष्यहस्तौत्तरात्रयं पौष्णंवैष्णवभंचैवसीमंतेसौम्यवासरे १

टी०-रोहिणी, मृग, पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, तीनोउत्तरा, रेवती, श्रवण इन नक्षत्रोंमें सीमंतकर्म शुभ होता है पर शुभग्रहकेवारमें करना.

अन्यदपि.

पक्षच्छिद्रांचरिक्तांचविनापंचदशींशुभाः च तुर्दशीचतुर्थीचकदाचित्तुशुभप्रदाः १ शुभ संस्थेविशानाथेचतुर्थीचचतुर्दशीं पौर्णिमा सीमंशंसंतिकेचित्सीमंतकर्मणि २ ६७

टी०-सीमंतकर्ममें पक्षमें जो छिद्रातिथि उसका त्याग करना. रिक्तातिथित्याग करना. कोई आचार्य कहते है की, शुभराशीकेचंद्रमामे और चतुर्थी. चतुर्दशी और पौर्णिमा ये सीमंतकर्ममें प्रशंसा करतेहै.

पक्षच्छिद्रातिथी.

चतुर्दशीचतुर्थीचाष्टमीनवमीतथा षष्ठी चैवादशीचैवपक्षच्छिद्राव्हयाःस्मृताः १ क्रमादेतास्तिथिषुवर्जनीयाश्चनाडिकाः भूता

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ष्टामनुतत्वाकदशशेषास्तुशोभनाः २

टी०-चतुर्दशी, चतुर्थी, अष्टमी, नवमी, षष्ठी, द्वादशी इसको पक्षछिद्रातिथी कहते है. क्रमसे इनकी घटित्याग करना. चतुर्दशी १४, चतुर्थी ८, अष्टमी १४, नवमी २४, षष्ठी ६. द्वादशीकी १० घडि पहिली त्याग करना.

मासेश्वर ज्ञानमाह.

मासेश्वराः सितकुजज्यरविंदुसौरंचंद्रात्म
जास्तनुपचंद्रदिवाकरास्यकः १

टी०-गर्भधारणसे दस मासके दस स्वामी क्रमसें नीचे लिखे हुवे कोष्टकपरसे मालूम होगा.

१	२	३	४	५
शुक्र.	मंगल.	गुरु	रवि.	चंद्र.
६	७	८	९	१०
शनि.	बुध.	गर्भाधानलग्ने.	चंद्र.	सूर्य.

अन्यमते.

मासेष्टमेहिगर्भस्यकुर्याद्विषणोर्बलिक्रियां
श्रवणेचैवरोहिण्यांपुष्येचैवप्रशस्यते १ द्वि
तीयासप्तमीचैवद्वादशीचशुभातिथिः शु
भग्रहोदयाःशस्तास्तुषांचदिवसाअपि २

टी०-स्त्रीको अष्टममासमें गर्भसंस्कार विष्णु बली करना. श्रवण, रोहिणी, पुष्य, द्वितीया, सप्तमी, द्वादशी ये शुभ है और शुभग्रहके लग्नमें व शुभग्रहके वारमें करना शुभ होता है.

गर्भिण्यांनिषेधमाह.

भूम्यांचवोच्चनीचायामारोहमवरोहणे न.
दीप्तरणंचैवशकटारोहणंतथा १ उग्रौषधं

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

तथाक्षारंमैथुनंभारवाहनं कृतेपुंसवनेचै
वगर्भिणीपरिवर्जयेत् २

टी०-पुंसवनके नंतर स्त्रीने उंची जमीनपर चढना नहीं. नीची जमीनपर उतरना नहीं. पेडपर चढना नहीं. भरे नदीमें जाना नहीं. गाडीपर चढना नहीं. कोई तेज औषधी खाना नहीं. पुरुषसंग करना नहीं. कोई भारी बोजा उठावना नहीं. गर्भवती स्त्रीको ये सबभना करना हितकारी होता है.

गर्भिणीस्त्रीकोपुत्रवाकन्याहोनेका प्रश्न.

तिथिवारभयुग्योगास्त्रि ३ घ्नोद्रि ७ हृतशेषके
सूर्यारिज्येस्फुटश्चंद्रज्ञाऽच्छेकन्याशनौस्त्रवः १

टी०-गर्भिणी को पुत्र या कन्या होनेका प्रश्न करे तो तिथी वार नक्षत्र इनका योग करना. ३ गुण देना ७ से भाग लेना. जब १।३।५ शेष रहे तो पुत्र; २।४।६ शेष रहे तो कन्या; ० शेष रहे तो गर्भ रहेगा नहीं ऐसा जानना.

इतिगर्भाधानप्रकरणम्.

प्रसूतिस्थानेगमनं.

रोहिण्यैंदवपौष्णेषुस्वातीवारुणयोरपि;
पुनर्वसौपुष्यहस्तधनिष्ठात्र्युत्तरास्रुच १ मै
त्रत्वाष्ट्रेतथाश्विन्यांसूतिकागृहवेशनं प्रसू
तिसंभवेकालेसद्यएवप्रवेशयेत् २ छ

टी०-रोहिणी, मृग, रेवती, स्वाती, शततारका, पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, धनिष्ठा, तीनो उत्तरा, अनुराधा, चित्रा, अश्विनी इन नक्षत्रोंमें प्रसूतिस्थानमें प्रवेश करना उक्त है. परंतु जो प्रसूतकाल प्राप्त होवे तो उसी वक्तमें सूतिकागृहप्रवेश करने को नक्षत्रका विचार बिलकुल करना नहीं.

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

गर्भकेलक्षण.

कललं १ चघनं २ शारवा ३ स्थि ४ त्व ५ ग्रोमो
द्गमः ६ स्मृतिः भुक्तिरुद्वेग ९ संसूतीर्मासे
ष्वाधानतः क्रमात् १ ७ ७

टी०-गर्भाधानसे १० मासतक गर्भका रूप कहते हैं. प्रथम १ मासमें कलल कहिये रुधिर शुक्र इसके संयोगसे पिंड होता है. २ रे मासमें घन कहिये वह पिंड मजबूत होता है. ३ रे मासमें वह पिंडमें शारवा कहिये हस्त और पाद उत्पन्न होता है. ४ थे मासमें उस्मे अस्थी याने हाड होते है. ५ वे मांसमे उपर त्वचा कहिये चमडी होती है. ६ वे मासमें रोम कहिये केश होते है. ७ वे मासमें स्मृति याने ज्ञान होता है. ८ वे मासमें भुक्ति कहिये क्षुधाका ज्ञान होता है. ९ वे मासमें उद्वेग याने गर्भसे बाहर निकलनेकी इच्छा करते है और १० वे मासमें प्रसव जानना.

दंतफलम्.

दंतैर्युतश्चेत्प्रथमेर्भकः स्यास्त्वयंविनश्येद
नुजेद्वितीये हन्यात्तृतीयेभगिनींचतुर्थेस्व
मातरंबाणमितेऽग्रजातं १ ७ ७

टी०-बालक दंतसहित उत्पन्न होय तो बालकका नाश जानना. २ रे मासमें छोटे भाईको अशुभ. ३ मासमे बहनको अशुभ. ४ मासमें माताको दुःख होय. ५ मासमें बडे भाईको दुःख जानना. आगे षष्ठ मासमें शुभ जानना.

प्रसूतिकामाह.

अज १ ऋष १२ द्वि २ मितावृषकुंभयोः श्रुति
मिताहयकर्कटेशराः ५ मकरयुग्मतुलाधर
कन्यकास्त्वलिहरौत्रिमिता द्ध्रुवप्रसूतिकाः १

टी०-मेष. मीन इस लग्नमे प्रसूति होय तो पास २ स्त्री कहना.

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

वृष. कुंभ होय तो ४ स्त्री कहना. धन, कर्क होय तो ५ स्त्री कहना. मकर, मिथुन, तुला, कन्या, वृश्चिक, सिंह होय तो ३ स्त्री कहना. इस प्रकारसे लग्नपरीक्षा करना.

जन्मकालफल.

अश्विनीमघमूलानांपूर्वार्द्धेबाध्यतेपिता पू
षादिशक्रपश्चार्द्धेजननीबाध्यतेशिशाः १

टी०- अश्विनी, मघा, मूल इन नक्षत्रके पूर्वार्द्धमें जन्म होय तो पिताको अशुभ जानना. रेवती, ज्येष्ठा इन नक्षत्रोंके उत्तरार्द्धमें होय तो माताको अशुभ जानना.

गंडांतफलं.

सर्वेषांगंडजातानांपरित्यागोविधीयते
वर्जयेद्दर्शनंशावत्तच्चषाण्मासिकंभवेत् १

टी०- गंडांतमें जो जन्म होय तो बालकका परित्याग करना अथवा ६ महिना उसका मुंह देखना नहीं.

तिथिगंडांतमाह.

पूर्णानंदारव्ययास्तिस्रःसंधिर्नाडिद्वयंतथा
गंडांतमृत्यदंजन्मयात्राद्वाहव्रतादिषु १

टी०- पौर्णिमाकी अंत्य घडी और प्रतिपदाकी आद्य घडी ऐसी दो घडी संधि इसी रीतीसे ५।६।१० और एकादशी २ घडी संधी जानना. इस्में जन्म, यात्रा, मौंजी, विवाह, इत्यादिक मृत्यु सुख होते है सो अशुभ जानना.

लग्नगंडांत.

कुलीरसिंहयोःकीटचापयोमीनमेषयोः
गंडांतमन्तरालस्याद्घटिकार्धंमृतिप्रदम् १

टी०- कर्ककी अंत्यकी आधी घडी और सिंहकी पहली आधी घडी संधी इसी क्रमसे वृश्चिक और धन-मीन और मेष ऐ

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सी एक घडी मृत्यु भद जानना. शुभकर्ममें वर्ज्य करना.

नक्षत्रगंडांत.

पौष्णयाश्विन्योःसार्पपित्र्यर्क्षयोश्चयज्ये
ष्ठामूलयोरंतरालं ॥ तद्गंडांतस्याच्चतुर्नाडि
कंहियात्राजन्मोद्वाहकालेप्यनिष्ट १

टी०-रेवतीकी अंत दो घडी और अश्विनीकी आदि दो घडी इसकी संधी होती है. इस क्रमसे आश्लेषा, मघा, ज्येष्ठा, मूल, ये नक्षत्रगंडांत होता है. इसमें यात्रा, जन्म, विवाह, ये कर्म अशुभ है.

कृष्णचतुर्दशी फलमाह.

कृष्णपक्षेचतुर्दश्यांप्रसूतेषड्विधंफलं चतुर्द
शीचषड्भागांकुर्यादादौशुभास्मृतम् १
द्वितीयेपितरंहंतितृतीयेमातरंतथा चतुर्थे-
मातुलंहंतिपंचमेवंशनाशनम् षष्ठेचधनहा
निस्यादात्मनोवंशनाशनं १

टी०-कृष्णपक्षके चतुर्दशीको जन्म होय तो चतुर्दशीके ६ भाग करके शुभाशुभ देखना. प्रथम भागमें शुभ. द्वितीय भागमें पिताको दुःख जानना. तृतीय भागमें माताको दुःख जानना. चतुर्थ भागमें मामाको दुःख जानना. पंचम भागमें वंशनाश जानना. षष्ठ भागमें धन और वंशकाभी नाशजानना.

अमावास्याफल.

सीनीवाल्यांप्रसूताश्चदासीभार्यापशुस्त-
था गजाश्वमहिषीचैवशक्रस्यापिश्रियंहरे
त् १ कुहूप्रसूतिरित्यर्थसर्वदोषकरीस्मृताः
यस्यप्रसूतिरेतेषांतस्यायुर्धननाशनं सर्वग-
डसमस्तन्नदोषस्तुप्रबलोभवेत् २

टी०चतुर्दशीयुक्त अमावास्यामें दासी, भार्या, गौ, हाथी, घो-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

डी और भेंस ये प्रसूत होय तो मालिकको निर्धन करते है. अमा वास्यामें जन्म होय तो बहुत दोष जानना. धन, आयुष्य इसका नाश और गंडांतके ऐसा फल जानना.

दिनक्षयफल.

दिनक्षयेव्यतीपातेव्याघातेविष्टिवैधृतौ शू
लेगंडेतिगंडेचपरिघेयमघंटके १ कालदंडेमृ
त्युयोगेदग्धयोगेस्कदारुणे तस्मिन्गंडदि
नेप्रासेप्रसूतिर्यदिजायते २ अतिदोषकरी
प्रोक्तातत्रपापयुतासती ३

टी०-क्षयदिन, व्यतीपात, व्याघात, भद्रा, वैधृति, शूल, गंड, अतिगंड, परीघयोगका अर्द्ध, यमघंट, कालदंड, मृत्युयोग, दग्धयोग और दारुणयोग ऐसे योगमें जन्म होय तो बहुत अशुभ.

ज्येष्ठानक्षत्रफल.

ज्येष्ठादौजननीमाताद्वितीयेजननीपिता तृ
तीयेजननीभ्रातास्वयंमाताचतुर्थके १ आ
त्मानंपंचमेहंतिषष्ठेगोत्रक्षयोभवेत् सप्तमे
चोभयकुलंज्येष्ठभ्रातरमष्टमे २ नवमेश्वश्रू
रंहंतिसर्वंहंतिदशांशकः ३

टी०-ज्येष्ठानक्षत्रमें प्रसूति होय तो ६ घडीका एकभाग ऐसे १० भाग करना. उसका फल प्रथम भागमें होय तो माता पिताको अशुभ. २रे भागमें होय तोभी माता पिताको अशुभ. ३रेमें होय तो मामाको अशुभ. ४थेमें होय तो माताको अशुभ. ५वेमें होय तो बालकको अशुभ. ६वेमें होय तो गोत्रको अशुभ. ७वेमें होय तो दोनों कुलको अशुभ. ८वेमें होय तो ज्येष्ठ भ्राताको अशुभ. ९वेमें होय ससूरको अशुभ. और १०वे भागमें होय तो सर्वस्वका नाश होय ऐसा जानना.

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

मूलफल.

मूलस्तंभंत्वक्शारवापत्रंपुष्पंफलंशिरवा, वेदाश्वमुनयश्चैवदिशश्चवसवस्तथा १ नंदाबाणरसारुद्रामूलभेदाःप्रकीर्तिताः मूल मूलविनाशायस्तंभेहानिर्धनक्षयः २ त्वचि द्भ्रातृविनाशायशारवामातुर्विनाशकृत् प त्रैसपरिवारःस्यात्पुष्पेषुनृपवल्लभ ३ फलेषु लभतेराज्यंशिरवायामल्पजीवितम् ४

टी०-मूलनक्षत्रको मूलवृक्ष ऐसानामरखके उस्में शुभाशुभ फलदेखना. मूलकाप्रमाण ६० घडी तिस्में प्रथम ४ घडी वृक्षका मूल, उस्मेंजन्म होयतोनाशजानना. नंतर ७ घडी मूलकास्तंभ, इस्में हानि और धनक्षय. नंतर १० घडी मूलकीत्वचा, उस्में जन्म होवे तो भ्रातृनाश. नंतर ८ घडि उस्कीशारवा, तिस्में माताकानाश जानना. नंतर ६ घडी वृक्षकापत्र तिसमें सपरिवारको अशुभ जानना. नंतर ५ घडि पुष्प, तिस्में जन्म होय तो राजाको प्रिय होय. नंतर ६ घडि फल, तिस्में जन्म होयतो राज्यलाभ. नंतर १२ घडि शारवा, तिस्में जन्म होयतो अल्पजीवि जानना.

मूलवास.

वृषादिसिंहेचघटेचमूलंदिवस्थितंयुग्मतुलां गनांत्ये पातालगंमेषधनुःकुलीरनक्रेषुमर्त्येष्वतिसंस्मरंति १

टी०-वृष. वृश्चिक. सिंह. कुंभ. इस राशीमें मूल स्वर्गमें रहताहै इस्में जन्म होयतो राज्यप्राप्ति जानना. मिथुन, कन्या, तूला, मीन इस राशीमें मूलकावास पातालमें. फल धनप्राप्ति जानना. मेष, धन, कर्क, मकर इस राशीमें मूल मर्त्यलोकमें रहता है. फलसब कुटुंबको अशुभ जानना.

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

श्लेषाकानगराकारचक्र.

मूर्धास्यनेत्रगलकांसयुगंचबाहुहृज्जानुगु
ह्यपदमित्यहिदेहभागः बाणाद्रिनेत्रहुतभुक्
श्रुतिनागरुद्रषण्नंदपंचशिरसः क्रमशस्तुना
ड्यः १ राज्यंपितृक्षयोमातृनाशः कामक्रियार
तिः पितृभक्तोबली ध्वस्त्यागीभोगीधनीक्रमात्

टी०-श्लेषामें जन्म होय तो पुरुषकल्पना करके ६० घडीमें अंगोंके फल देखना. प्रथम ५ घडी मस्तक जानना; फल राज्यप्राप्ति. नंतर ७ घडि मुख; फल पिताको अशुभ जानना. नंतर २ घडी नेत्र; फल माताको अशुभ. नंतर ३ घडी कंठ; फल कामी. नंतर ४ घडी स्कंध; फल पिताकी भक्ति. नंतर ८ घडी बाहू, फल बलवान्. नंतर ११ घडि हृदय; फल आत्मघाती. नंतर ६ घडी जंघा; फल त्यागी. नंतर २ घडी गुह्य; फल भोगी. नंतर ५ घडी पाय फल धनवान्.

द्वादशराशीनाम.

मेषोवृषोथमिथुनंकर्कटः सिंहकन्यके
तूलाथवृश्चिकोधन्वीमकरः कुंभमीनको १

टी०-१२ राशीके नाम मेषसे मीनतक क्रमसे जानना.

राशिस्वामी.

कुजःसितोबुधोविधुर्भगश्चशुक्रभूमिजाः
सूरेज्यमंदसूर्यजागुरुःक्रियाच्चभेश्वराः १

टी०-नीचे लिखेले कोष्टकमें द्वादशराशीके स्वामी स्पष्ट जानना.

१मेष.	२वृषभ.	३मिथुन	४ कर्क	५सिंह.	६कन्या.
मंगल.	शुक्र.	बुध.	चंद्र.	सूर्य.	बुध.
७तुला.	८वृश्चि.	९धनु.	१०मकर.	११कुंभ.	१२मीन.
शुक्र	मंगल.	गुरु	शनि.	शनि	गुरु.

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ग्रहोंकेउच्चनीच.

रविर्मेषेतुलेनीचोवृषेचंद्रस्तुवृश्चिके भौ-
मश्चनक्रेकर्केचस्त्रियांसौम्योझषेतथा १
गुरुः कर्कंचनक्रेचमीनकन्येसितस्यच मंद
स्तुलायांमेषेचकन्यारहुर्गृहस्यच २ राहु
र्युग्मेतुचापेचतमोवत्केतुर्जफलं प्रोक्तंग्र-
हाणांसुच्चत्वंनीचत्वंचक्रमाद्बुधैः ३

टी०-सूर्य मेषका उच्च, तुलाका नीच, चंद्रमा वृषका उच्च, वृश्चिकका नीच. मंगल मकरका उच्च, कर्कका नीच. बुध कन्याका उच्च. मीनका नीच, बृहस्पति कर्कका उच्च, मकरका नीच, शक्र मीनका उच्च, कन्याका नीच, शनि तुलाका उच्च, मेषका नीच, राहु मिथुनका उच्च, धनका नीच, भ्रौर केतूका उच्चनीच राहूके ऐसाही जानना.

ग्रहोंकीक्रूरशुभसंज्ञा.

क्रूराःखेटा राहुमंदार्कभौमाःपापःसौम्यस्तै
र्युतः क्षीणइंदुः पूर्णश्चंद्रः सौम्यशुक्रौम
रेज्याः सौम्याः सर्वेचंद्रयुक्ताबलाढ्याः १

टी०- क्रूरग्रह राहु. शनि. सूर्य. मंगल. बुधभी इनके साथसे पापग्रह होता है. कृष्णपक्षका चंद्रमा यह पापग्रह जानना. शुभग्रह पूर्णचंद्रमा, बुध. शुक्र. बृहस्पति यह जानना.

ग्रहोंकीजातिसंज्ञा.

विप्राधीशोजीवशुक्रौकुजार्कौराजन्यानां
मोषधीशोविशांच शूद्राणांज्ञश्चांत्य-
जानांचमंदः सिंहीसूनुर्म्लेच्छवंशोद्भवानां १

टी०-बृहस्पति, शुक्र यः ब्राह्मण; सूर्य, मंगल यः क्षत्रिय; चंद्रमा वैश्य; बुध शूद्र; शनि चांडाल; राहु म्लेंच्छ इस प्रकारसे

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

नवग्रहोंकी जाति है ऐसा जानना चाहिये.

ग्रहोंकीस्त्रीपुरुषसंज्ञा.

प्रोक्तानराःसूर्यकुजेमरज्याःक्लीबोशनिज्ञौ
युवतीसितेंदु सत्वंरविज्यःक्षणदाधिपास्युः
रजःसितारौज्ञयमौतमश्च १

टी०-सूर्य,मंगल, बृहस्पतियह पुरुषग्रह; शनि,बुधयहन
पुंसकग्रह; शुक्र,चंद्रमा यह स्त्रीग्रह; ग्रहोंके गुण. सूर्य,गु
चंद्रमा यह सत्वगुण; शुक्र,मंगल यह रजोगुण; ग्रौर बुधश
नि यह तमोगुण जानना.

ग्रहोंकारूप.

नृपौरथींदूकुलसैन्यनेताभौमःकुमारःशशि
जोनिरुक्तोः सचिवोगुरूशनारव्यो
सूर्यात्मजःसेवकसंज्ञकःस्यात् १

टी०-रवि ग्रौर चंद्रमा यह राजा जानना. मंगल सेनापति जा
नना. बुध कुमार जानना. बृहस्पति, शुक्र यह मंत्री जानना
ग्रौर शनि सेवक जानना.

ग्रहोंकावर्ण.

रक्तःसितोरक्ततरःसुनीलःपीतोतिशुक्लस्त्वसितोन्नवर्णः
सूर्यादधीशादहनोबुभूमीदामोदरःशक्रशचीविरंचीः १

टी०-सूर्यकालालवर्ण, चंद्रमाकाश्वेतवर्ण, मंगलका बहुत
लालवर्ण, बुधका नीलवर्ण, बृहस्पतीका पीतवर्ण, शुक्रका
सफेदवर्ण, शनीका कृष्णवर्ण, इस प्रकारसे ग्रहोंके वर्णका
ज्ञान करना. सूर्यकी देवता ग्रग्नि, चंद्रमाकी जल, मंगलकी
भूमि, बुधकी दामोदर, बृहस्पतीकी इंद्र, शुक्रकी इंद्राणी,
ग्रौर शनीकी देवता ब्रम्हा जानना.

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ग्रहोंकीदृष्टि.

पादैकदृष्टिर्दशमेतृतीयेद्विपाददृष्टिर्नवपंचमे
वा त्रिपाददृष्टिश्चतुरष्टकेवासंपूर्णदृष्टिःस
मसप्तकेच १ शनेस्त्वेकादशेपूर्णादृष्टिर्जीव्
स्यकोणके बुधैर्ज्ञयापूर्णदृष्टिर्भौमस्यचतुरष्टके २

टी०- ग्रहोंकी दृष्टि जाननेका प्रकार ऐसाहै के, कोई ग्रहजिस स्थानमेंहोय उस स्थानसे एकपाद दृष्टि देखताहै सो स्थान ३ १० इसी रीतसे ५।९ पादमें दोपाद दृष्टि, ४।८ स्थानमें ३ पाद दृष्टि, ७ स्थानमें पूर्ण दृष्टि जानना. परंतु शनि जिस स्थानमेंहोय उस स्थानसे ११।३ स्थानमें पूर्णदृष्टि देखताहै. बृहस्पति ९।५ स्थानमें पूर्णदृष्टि और मंगल ४।८ स्थानमें पूर्णदृष्टि देखताहै.

दिशांकेस्वामी.

प्राच्यादितःसूर्यसितारराहुमंदेंदुसौम्यांगि
रसोदीगीशाः वेदाधिनाथःक्रमशःसूरेज्य
पूर्वामरेज्यावनिजेंदुपुत्राः १

टी०- आठ दिशाके स्वामी पूर्वसे सूर्य, शुक्र, मंगल, राहु, शनि, चंद्र. बुध. बृहस्पति यह ८; और चारों वेदके स्वामी क्रमसे बृहस्पति, शुक्र, मंगल और बुध जानना.

द्वादशभावसंज्ञा.

मूर्तिर्धनाख्यःसहजःसखवश्वसकतारिपत्नीस्मृति
धर्मकर्माः सायव्ययावैतनुतोविचिंत्याभा
वान्भमिद्वादशहोरिकाद्यैः १

टी०- लग्नसे द्वादशस्थानकी संज्ञा- मूर्ति १, धन २, सहज ३, सखव ४, सकत ५, अरि ६, पत्नी ७, स्मृति ८, धर्म ९, कर्म १०, आय ११ और व्यय १२ ऐसे बारह स्थान जानना.

केंद्रादिद्वादशस्थानकीसंज्ञा.

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अथचकेंद्रचतुष्टयकंटकंतनुस्करवांबरसप्तमभंस्मृतं पणफरधनलाभस्कताष्टमंसहज शत्रुनवांत्यमपोक्लिमं १ दुश्चिक्यलाभां बरषष्ठगेहंप्रोक्तंतथैवोपचयंत्रिकंतु षडंत्य रंध्रंचनिजंनवांशंचवर्गोत्तमारव्यंविबुधावदंति २ नवमंपंचमंस्थानंत्रिकोणंपरिकीर्तितं ३

टी०-स्थानसंज्ञा जाननेकाप्रकार १।४।७।१० येचारोंस्थानके नामकेंद्रचतुष्टयकंटक जानना. २।५।८।११ इस स्थानका नाम पणफर जानना. ३।६।९।१२ यह स्थानका नाम आपोक्लिमजानना. उपचय संज्ञाकास्थान ३।११।१०।६ इस स्थानकी उपचय संज्ञा जानना. ६।१२।८ यह स्थानकी त्रिकसंज्ञा जानना. जो ग्रह अपने नवमांशमें होय उसको वर्गोत्तम जानना. और५।९ इसस्थानकी त्रिकोणसंज्ञा जानना.

सामान्यद्वादशराशीफल.

मेषेदैन्यमुपेतिगर्वितवृषोनानामतिर्मन्मथे शूरःकर्कटके धृतीचवनपेकन्याचमायान्विता सत्यंचैवतुलेत्वलौमलिनतापापान्वितंवैधनु र्मूरवोंयमकरे घटेचतुरतामीनीत्वधीरामतिः १

टी०-जन्मकालमें मेषलग्नहोय तो दीनकहना. वृषमें गर्वीमिथुनमें नानाप्रकारकी बुद्धि, कर्कमें बडा शूर, सिंहमें स्थिरबुद्धि, कन्यामें मायावान्, तुलामें सत्यवादी, वृश्चिकमें मलिन, धनमें पापबुद्धि, मकरमें मूरर्ख, कुंभमें चतुर, और मीनमें थोडा धीर याने धैर्य ऐसा द्वादशलग्नका फल जानना.

जन्मभूमिज्ञानमाह.

लग्नेंदुभ्यांद्वादशेस्तूर्यपुत्रेगुस्यांसूतिवीक्षिते पापरवैटैः लग्नेकर्केवृश्चिकेमंदयुक्तेगर्त्तायां

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

स्याच्चंद्रयुक्तेप्रसूतिः १ लग्नेसौम्येवेश्मगे सौम्यखेटैर्वालेयांशौस्वर्क्षगेपूर्णदेहे आप्ये लग्नेद्यूनगेवामृगांकेगभौनूनंसूयुतेनावसंस्थः २ लग्नेनीरेमंदयुतेदृष्टचंद्रार्कचंद्रजैः उखरेदेवतागारक्रीडागेहेक्रमात्सवः ३ पूलग्नस्थे भानुसूतेश्मशानेशौल्पिकेगृहे भूपालयेच गोष्ठचदेवागारेमखवालये ४ विक्षितेभौम सौम्येंदुशुक्रार्कगुरुभिक्रमात् प्रसवोयं समारब्धातःसत्यलघ्वादिसूरिभिः ५ यदैकराशिगौलग्नचंद्रौदृष्टिविवर्जितौ विजने प्रसवःप्रोक्तोमणित्थाद्यैश्चसूरिभिः ६

टी०-जन्मकालमे जन्मलग्नके चंद्रमासे १२ स्थानमें शनिहो य पापग्रहकी दृष्टिहोय तो प्रसवगृहस्थानमें कहना. कर्कलग्न होय उसीका चंद्रमा होय द्वयश्विकमें शनिहोय तो गडहामें प्रसूति कहना. लग्न शुभग्रहराशि होय ४ स्थानमें शुभग्रहहोय, चंद्रमा अपने राशीमें पूर्णहोय, जलराशीका लग्नहोय, चंद्रमा सप्तमस्थानमें होय तो नावमें प्रसूति कहना. जलराशी का लग्नहोय तो उखरभूमीमें जन्म कहना. जलराशी का लग्नहोय उसीमें शनि होय तो देवताके स्थानमें प्रसव कहना. जलराशी. का लग्नहोय, चंद्र, सूर्य, बुध, यह देखते होय तो क्रीडागेहमें प्रसूति कहना, पुरुषराशीका लग्नहोय उसीमें शनिहोय क्रमसे मंगल, बुध चंद्र, शुक्र, सूर्य, बृहस्पति यह ग्रहोंकी दृष्टि होय तो स्मशानमें प्रसूति कहना. चित्रकारके मकानमें कहना. राजाके गृहमें प्रसूति कहना, गोशालामें प्रसूति कहना, देवतास्थानमें प्रसूति कहना. यज्ञभूमीमें प्रसूति कहना, जन्मकालमें लग्न और चंद्रमाकी एकराशी होय कोई ग्रहकी दृष्टि न होय तो जनरहितस्थानमें प्रसूति कहना.

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

प्रसवज्ञानमाह.

शुक्रवग्रहैःस्वबंधुगैःशुक्रवेनसंयुतःसवः शु
तांकसप्तमस्थितैरसद्ग्रहस्तुकष्टतः १

टी०-प्रसूतिकालमेंजन्मलग्नसे २।४ स्थानमें शुभग्रह होय तो शुक्रवसे प्रसूति कहना. ५।९।७ स्थानमें पापग्रह होयतो कष्टसे प्रसूति कहना.

जन्मकालमें मृत्यकारक.

चंद्राष्टमंचधरणीसुतसप्तमंचराहुन्नवंचशनि
जन्मगुरुस्त्रितीयेअर्कस्तुपंचभृगुषष्ठबुधश्च
तुर्थेजातोनजीवतिनरःप्रवदंतिसंतः १

टी०-जन्मकालमें चंद्र अष्टमस्थानमें होय, मंगल ७स्थानमें, राहु नवमस्थानमें, शनिलग्न १स्थानमें, गुरु ३ स्थानमें. सूर्य ५स्थानमें, शुक्र ६ स्थानमें, बुध ४ स्थानमें ऐसे ग्रहयोगमें बालकका जन्म होय तो बचेगा नहीं ऐसा जानना.

अन्यमतः

चतुर्थेचयदाराहुःषष्ठेचंद्रोऽष्टमेपिवा सद्यएव
भवेन्मृत्यःशंकरोयदिरक्षति १

टी०-जन्मकालमें चतुर्थस्थानमें राहु होय, चंद्रमा ६ अथवा अष्ट होय तो बालक तत्काल मरेगा ऐसाजानना. शंकरउनका रक्षण करे तोभी वः बचेगा नहीं.

अन्यमते क्षीणचंद्रोव्ययस्थानेपापलग्नेस्म
रेष्टमे शुभैश्चरहितेकेंद्रेशीघ्रंनश्यतिबालकः १

टी०-जन्मकालमें क्षीणचंद्रमा १२ या पापग्रहके स्थानमें होय अथवा ७ या ८ होय, केंद्र शुभग्रहसे रहित होय तो तत्काल बालकका मृत्यु जानना.

अन्यमत दशमस्थोदिवानाथःपापैर्बहुनिरी-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

क्षितः मेषवृश्चिककर्कस्थोसद्योमृत्युप्रदोभवेत् १

टी०- जन्मकालमें सूर्य दशमस्थानमें मेष,वृश्चिक,कर्क इस राशी-में होय पापग्रह की दृष्टि होय तोभी तत्काल बालक मृत्यु पावेगा.

अन्यमत सप्तमेभवनेभौमचाष्टमेभार्गवोयदि
नवमेभवनेसूर्यः स्वल्पायुष्यः प्रजायते १

टी०- लग्नसे सप्तमस्थानमें मंगल, अष्टमस्थानमें शुक्र और नवमस्थानमें शुक्र होय तो थोडा आयुष्य जानना.

अन्यमत क्षीणचंद्रोयदालग्नेपापाश्चाष्टमकें
द्रगाः स्मरेलग्नपतिःपापैर्युक्तोनश्येत्तदाशिशुः १

टी०- क्षीणचंद्रमा लग्नमें होय, केंद्रमें पापग्रह होय, लग्नपति ७में पापग्रहसे युक्त होय, तोभी बालक तत्काल मृत्यु पावेगा.

अन्यमत लग्नेक्रूरश्चभवनेक्रूरःपातालगोयदा
दशमेभवनेक्रूरः कष्टजीवति बालकः १

टी०- क्रूरग्रहका लग्न होय और ४ स्थानमें क्रूरग्रह होय, १०स्था-नमें क्रूरग्रह नहोय तो बालकका जीवन बहुत कष्टसे जानना.

अन्यमत षष्ठेचद्वादशेराशौयदापापग्रहो
भवेत् तदामातुर्भयंविद्याच्चतुर्थदशमेपितुः १

टी०-पापग्रह ६।१२ स्थानमें होय तो माताको क्लेश जानना. और ४।१० स्थानमें होयतो पिताको क्लेश जानना.

अन्यमतः अर्कोमंदःकुजश्चंद्रप्रसूतात्पंचमेयदि आत्मनःपितरभ्रातृमातांचैवयथाक्रमात् १

टी०- जन्मकालसे पंचमस्थानमें सूर्य,चंद्र,मंगल, शनि होयतो क्रमसे बालक,पिता,भ्राता,माता इनको अशुभ जानना.

अन्यमत सप्तमेभवनेभानोःमध्यस्थोभूमिनंदनः राहुर्व्ययेतथैवापिपिताकष्टेनजीवति १

टी०सप्तमस्थानमें सूर्य होय, १० स्थानमें मंगल होय, १२ स्था-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

नमें राहु होय तो पिता बहुत कष्टसे बचे ऐसा जानना.

अन्यमत अष्टमस्थोयदाराहुः केंद्रेचनीचचंद्रमाः ससद्यश्चभवेन्मृत्कर्बालकस्यनसंशयः १

टी०- अष्टमस्थानमें राहु, केंद्रमें नीच चंद्रमा होय तो बालकका नाशजानना. अन्यमत.

द्वादशस्थोयदाचंद्रः पापाश्चाष्टमगेहगाः मासेनैकेनमृत्कस्यात्तस्यबालस्यनिश्चितं १

टी०- जन्मकालमें द्वादशस्थानमें चंद्र, ८ स्थानमें पापग्रह होय तो १ मासमें मृत्क जानना. अन्यमत.

षष्ठाष्टमेयदाचंद्रो बुधयुक्तश्चतिष्ठति विष दोषेनबालस्यतदामृत्कश्चजायते १

टी०- जन्मकालमें षष्ठ अथवा अष्टमस्थानमें चंद्रमा बुधयुक्त होय तो बालकको विषदोषसे मृत्क कहना.

अन्यमत अष्टमेचनिशानाथः केंद्रेक्रूरोयदाभवेत् चतुर्थेचयदाराहुर्वर्षमेकंनजीवति १

टी०- जन्मलग्नसे अष्टमस्थानमें चंद्रमा होय, केंद्र १।७।४।१० स्थानमें क्रूरग्रह होय. ४ स्थानमें राहु होय तो एक वर्षतक अरिष्ट जानना. अन्यमत.

जन्मस्थानेयदाभौमः शत्रुक्षेत्रेयदाभवेत् म्रियतेतस्यबालस्यपिताशीघ्रंनसंशयः १

टी०- जन्मलग्नसे दशमस्थान मंगलका शत्रुक्षेत्र होय, उसी स्थानमें मंगल होय तो पिताको अरिष्ट जानना.

अन्यमत लग्नेष्टमेयदाराहुश्चंद्रोपियदिदृश्यते दशाहेजायतेतस्यबालस्यमरणंध्रुवम् १

टी०- अष्टमस्थानमें राहु होय, और चंद्र उसको देखता होय तो बालकका मृत्क १० दिनमें जानना.

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अन्यमत वक्रीशनीभौमगृहेकेंद्रषष्ठाष्टमे-
पिवा कुजेनबलिनादृष्टोहंतिवर्षद्वयेशिशुः १

टी०- वक्रका शनि मंगलके क्षेत्रमें १।८ होय,केंद्रमें होय,ल
ग्नसे षष्ठ या अष्ट स्थानमें होय, बलवान मंगल देखे तो दो वर्ष-
तक बालकको अरिष्ट कहना.

अन्यमत शनिराहुकुजैर्युक्तःससप्तमेनवमे
शशी ससप्तमेदिवसेहतिमासेवाससप्तमेशिशुः १

टी०- शनि,राहु,मंगल ये तीनों ग्रहसे युक्तचंद्रमा सप्तम या
नवमस्थानमें होय तो सात दिनमें नहीं तो सातमासमें बाल-
ककोअरिष्ट जानना. अन्यमत.

दशमेभवनेराहुःपितृमातृप्रपीडनं द्वादशे
वत्सरेमृत्युकबालकस्यनसंशयः १

टी०- लग्नसे १० वेस्थानमें राहु होय तो मातापिताको दुःख
और १२ वर्षतक मृत्युतुल्य अरिष्ट जानना.

अन्यमत शनिक्षेत्रेयदाभानुर्भानुक्षेत्रेयदा
शनिः द्वादशेवत्सरेमृत्युस्तस्यजातस्यजायते १

टी०- जन्मकालमें शनिके क्षेत्रमें १०।११ सूर्य होय और सूर्य
के क्षेत्रमें ५ शनि होय तो द्वादशवर्षमें मृत्यु जानना.

अन्यमत जन्मलग्नेयदाभौमश्चाष्टमेचबृहस्प
तिः वर्षेचद्वादशेमृत्युर्यदिरक्षतिशंकरः १

टी०- जन्मलग्नमें मंगल होय और ८ स्थानमें बृहस्पति होय
तो १२ वर्ष मृत्यु जानना. शिवसंरक्षण करे तोभी मृत्युजानना.

वर्णशंकर ज्ञानमाह.

धनस्थानेयदासौरिःसैंहिकेयोधरात्मजः शु
क्रोगुरुःससप्तमेचत्वष्टमेरविचंद्रमाः १ ब्रह्म
पुत्रेपदेवापिवैश्यास्त्रीचसदारतिः मासेविंश

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

तिमेवर्षेम्लेंच्छोभवतिनान्यथा २ ७

टी०- जन्मकालमें द्वितीयस्थानको शनि, राहु, मंगलहोय; ७ स्थानमें शुक्र, बृहस्पति होय; ८ में रवि. चंद्र ये होयतो ब्राम्हणका पुत्र होयतोभी वह पुरुष वैश्यागमन करे भोर २० वर्षकेउमरमें म्लेंच्छ होय. वर्णसंकर जानना.

जातक.

तनुस्थान लग्नस्थितोदिनकरःकुरुतेंगपी डापृथ्वीस्कतोवितनुतेरुधिरप्रकोपं छाया सुतःप्रकुरुतेबहुदुःखभाजंजीवेंदुभार्गवबुधाः सुरवकांतिदास्युः १ धनस्थान दुःखाक्रांधनविनाशकराःप्रदिष्टावित्तेस्थितारवि शनैश्चरभूमिपुत्राः चंद्रोबुधःसुरगुरुभृगुनंदनोवानानाविधंधनक्षयंकुरुतेधनस्थाः २ सहजस्थान भानुःकरोतिविरुजंरजनीकरोपिकीर्त्यायुतंक्षितिसुतःप्रचुरप्रकोपं ऋद्धिं बुधःसुधिषणंसुविनीतवेषंस्त्रीणांप्रियंगुरुकवीरविजस्तृतीये ३ सुहृत्स्थान भादित्यभौमशनयःसुरवर्जितांगंकुर्वंतिजन्मनिनृरुक्षिरंचतुर्थे सोमोबुधःसुरगुरुभृगुनंदनोवासोरव्यान्वितंचनृपकर्मरतंप्रधानं ४ सुतस्थान पुत्रेरविःप्रचुरकोपयुतंबुधश्चस्वल्पात्मजंशनिधरातनुजावपुत्रं शुक्रेंदुदेवगुरवःसुतधामसंस्थाःकुर्वंतिपुत्रबहुलंसुरविनंसुरूपं ५ रिपुस्थान मार्तंडभूमितनुजौहतशत्रुपक्षंपंगुनैरंरिपुगृहेष्वतिपूजनीयं काव्येदुजौमतिविहीनमनल्परोगेजीवःकरोति

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

विकलंमरणंसशांकः ६ जायास्थान तिग्मां
शुभौमरविजाकलिसप्तमस्थाजायांकुकर्म
निरतांतनुसंततिंच जीवेंदुभार्गवबुधाबहुपुत्र
युक्तांरूपान्वितांजनमनोहरूपशीलं ७ मृ
त्युस्थान सर्वग्रहादिनकरभसुरवानितांमृ-
त्युस्थितावितनुतेकिलदुष्टबुद्धिम् शारी-
भिघातपरिपीडितगात्रयष्टिसौख्यैर्विहीन
मतिरागगणैरुपेतं ८ धनस्थान धर्मस्थिता
रविशनैश्चरभूमिपुत्राः कुर्वंतिधर्मरहितंविम
तींकुशीलं चंद्रोबुधोभृगुसुतः स्फरराजमंत्री
धर्मक्रियास्फनिरतंकुरुतेमनुष्ये ९ कर्मस्थान
आदित्यभौमशनयः किलकर्मसंस्थाः कुर्युर्नरं
बहुकुकर्मरतंकुपुत्रं चंद्रः सकीर्तिसुशनाबहु
वित्तयुक्तंरूपान्वितंबुधगुरूशुभकर्मभाजं १०
लाभस्थान लाभस्थितादिनकरोनृपलाभयुक्त
तारापतिर्बहुधनंक्षितिजःक्षितीशं सौम्यो
विवेकसुभगंचधनायुषीज्यःशुक्रः करोति-
सगुणंरविजःसुकीर्त्ति ११ व्ययस्थान सूर्यः
करोतिपुरुषंव्ययगोविशीलंकाणंशशीक्षि-
तिसुताबहुपापभाजं चंद्रांगजोगतधनंधिष
णःकृशांगं शुक्रोबहुव्ययकरोविजयःस्फूर्ति
ब्रम् १२ राहुकेतुफलंसर्वमदवत्कथितंबुधैः १३

टी०- लग्नसे लग्नलेके द्वादशस्थानका फल जोजो ग्रहजो जो स्थानमें होय तिनका फल आगे लिखेहुये कोष्टकपरसे मालूम होवेगा. परंतु राहु और केतु इनदोनो ग्रहका फल शनीके ऐसा जानना.

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

पुरुषजातकोष्टक.

भाव	रवि.	चंद्र.	मंगळ.	बुध.	गुरु.	शुक्र	शनि, राहु, केतु.
१	चक्षुः	शरीरपीडा:	कांति-सा-[illegible]शब्द	रक्त-कोष:	कांतिकरत्व.	कांतिसुख	कांतिस्खल.
२	धनं.	श्रुतिदुःख धननाश:	पक्षसंपत्ति:	इंद्रियनाश: धननाश:	नानाप्रकार कीर्तिनाशि	बहुधनप्राप्ति	बहुधन.
३	सहं	निरोगी.	कीर्तिवान.	बुधबुद्धि:	धनवान.	उत्तमबुद्धि:	बहुरूपी.
४	कुटुं.	शरीरकोच कुटुंबसुख.	सभोगी.	शरीरकोच हानइंद्रिय.	सभोगी.	करयुक्त.	करव बहुत.
५	सुत	बहुतकोधी.	बहुतपुत्र.	संततीहीन.	संततीखोडी	बहुपुत्रप्राप्ति	संतती बहुत.
६	रिपु	शत्रुनाश.	अल्पजीवि.	शत्रुनाश.	बुद्धिहीन रोगी.	शरीरसेवी	बुद्धिहीन रोगी.
७	जाया	दुष्टस्त्री.	स्त्रीलाभ.	स्त्रीदुष्टस्त्री	स्त्रीलाभवान	पुत्रधनी.	स्वभावीभास
८	मृत्यु	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
९	धर्म.	अधर्मी.	धर्मबुद्धि.	अधर्मी.	सदाधर्मीया	धार्मिकसर्वकाल.	अधर्मी.
१०	कर्म	अत्यंताडक कीर्तिवान.	अल्पंताकी कीर्तिवान.	दुष्टकर्मी.	उत्तमकांति	शुभकर्मी.	संपत्तिमान.
११	आय	राजमेवी.	धनवान.	राजासेवा	विचारवान	धर्मबुद्धि.	गुणवान.
१२	व्यय	दुष्टस्वभाव	कामीदोगा	पापकर्मी.	दरिद्री.	[illegible]	रोगी.

नराकारचक्रम्.

शीर्षारिव्ययंवदनंचबाहुयुगुलंहृच्चोदरंकट्यथो-
वस्तिर्गुह्यसुरूचजानुजघनेपादद्वयंवैक्रमात्.
मेषाद्याःकिलराशयःसुसुदितःपूर्वैःसुबोधायये
स्तैर्वैकल्पभतश्चकाद्यवयवाज्ञेयास्तकनिःसंशयः १

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandú

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

टी०-पुरुषके आकारका चक्र लिखना. उसपर मेषादिकराशीका यथाक्रमसे न्यास करना. मस्तक १, मुख २, हस्त ३, हृदय ४, उदर ५, कटी ६, वस्ती ७, गुह्य ८, ऊरू ९, जानू १०, जघन ११, पाद १२ ऐसा पहिले ग्रहफल जानना. कोई आचार्य कहते हैं कि जन्म लग्नसेभी न्यास करना. शरीरके व्रणतिलमशकके वास्ते.

अन्यमत यत्रयःसौम्ययुताग्रहाः स्युस्तत्रव्र
णस्तत्समराशिदेशे तद्वद्विपुस्थोव्रणकृत्स्व
लोवासदृष्टियुक्तस्तिललक्ष्मकृत्स्यात् १

टी०- नरचक्रमें जन्मलग्नसे जिस राशीमें तीन ग्रह होय उसके समान शरीरमें व्रणादिक चिन्ह कहना. उसी तरहसे जन्मकुंडली में षष्ठस्थानमें पापग्रह होय तो शरीरमें घाव इत्यादिक कहना. अथवा शुभग्रह होय तो तिलमसादिक कहना.

स्त्रीजातकमाह.

लग्नेचसप्तमेपापेसप्तमेवत्सरेपतिः म्रियते
चाष्टमेवर्षेचंद्रःषष्ठाष्टमेयदि १

टी०-स्त्रीके जन्मकालमें लग्नसे पापग्रह होय औरसप्तममें पापग्रह होय तो ७ वर्षमें पतिनाश जानना. चंद्र ६।८ स्थानमें होय तो अष्टमवर्षमें पतिनाश जानना.

तनुस्थान सूर्योकरोतिविधवांदिनकृत्कुजश्च
राहुर्विनिष्टतनयांरविजोदरिद्रां शुक्रः सशी
कृतनयश्चगुरुश्चसाध्वीमायुःक्षयंचकुरुते
बुधश्चशर्वरीशाः १ धनस्थान कुर्वंतिभास्कर
शनेश्चरराहुभौमादारिद्र्यदुःखमतुलंनियतं
द्वितीये वित्तेश्वरीमविधवांगुरुशुक्रसौम्यां
नारींप्रभूततनयांकुरुतेशशांकः २ सहज-
स्थान सूर्येंदुभौमगुरुशुक्रबुधास्तृतीयेकुर्यु

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

स्त्रियंबहुस्कृतांधनभागिनींच सत्यंदिवाक
रस्कृतः कुरुतेधनाढ्यांलक्ष्मींददातिनियुत-
किलसैंहिकेयः ३ सुहृत्स्थान स्वल्पंपयोभ
वतिसूर्यसुतेचतुर्थेदोर्भाग्यमुष्णकिरणंकुरु
तेशशीच राहुर्विनष्टतनयांक्षितिजोत्पबी-
जांसौरव्यान्विताभृगुसुतैरज्यबुधाश्चकुर्युः ४
सुतस्थान नष्टात्मजांरविकुजोरवलुपंचम-
स्थौचंद्रात्मजोबहुसुतांगुरुभार्गवौच राहु
र्ददातिमरणंरविजस्तुरोगंकन्याप्रसूतिनित
रांकुरुतेशशांकः ५ रिपुस्थान षष्ठस्थिता
शनिदिवाकरराहुभौमाजीवस्तथाबहुसुतां
धनभागिनींच चंद्रःकरोतिविधवांसुशनादरि
द्रांवैश्यांशशांकतनयःकलहप्रियांच ६ जाया
स्थान सौरारजीवबुधराहुरविंदुशुक्रादद्युः
प्रसह्यमरणंखलुसप्तमस्थाःवैधव्यबंधनभयं
क्षयवित्तनाशंव्याधिप्रवासमरणंनियतंक्रमेण
७ मृत्युस्थान स्थानेष्टमेगुरुबुधौनियतंवियो
गंमृत्युंशशिभृगुसुतश्चतथैवराहुः सूर्यःकरो
तिविधवांधनिनींकुजश्चसूर्यात्मजोबहुसुतां
पतिवल्लभांच ८ धर्मस्थान धर्मस्थिताभृगु
दिवाकरभूमीपुत्रजीवाःसुधर्मनिरतांशशिजः
सुभोगां राहुश्चसूर्यतनयश्चकरोतिवंध्यांना
रीमृतप्रजांकुरुतेमृगांकः ९ कर्मस्थान
राहुर्नभस्थलगतांविधवांकरोतिपापेपरांदिन-
करश्चशनैश्चरश्च मृत्युंकुजोर्थरहितांकुटिला
चचंद्रः शेषाग्रहाधनवतींबहुवल्लभांश्च १० भ्रा

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

येरविर्बहुसुतांधनिनींशशांकः पुत्रान्वितांक्षि तिसुतोरविजोधनाढ्यां भ्रायुष्मतिंस्करगुरु र्भृगुजःसुपुत्रीराहुःकरोतिस्रभगांसुखिनींबु धश्च ११ व्ययस्थान भ्रंत्येधनव्यवर्तीदिनकृद्दरिद्रांवंध्याकुजःपररतांकुरुतेचरा हुः साध्वीसितेज्यशशिजाबहुपुत्रपौत्रयुक्तां विधुःप्रकुरुतेव्ययगोदिनांधाम् १२

टी०- द्वादश स्थानका फल जोजो ग्रहजोजो स्थानमें होय तिनका फल भ्राघाडी लिखे कोष्टकपरसें मालूम होगा.

स्त्रीजातकोष्टक.

स्थान	नाम.	रवि.	चंद्र.	मंगल.	बुध.	गुरु.	शुक्र.	शनि.	राहु.केतु
१	तनु.	विधवा.	भ्रल्पायु.	विधवा.	पतिव्रता	पतिव्रता	पतिव्रता	दरिद्री.	पुत्रनाशा
२	धन.	दरिद्रदुःख	बहुपुत्र	दरिद्री.	सौभाग्य	सौभाग्य युक्त.	सौभाग्य युक्त	दुःखयुक्त	दरिद्रदुःख
३	सहज.	पुत्रयुक्त धनयुक्त	धनपुत्र युक्त	धनपुत्र युक्त.	धनपुत्र युक्त	धनपुत्र युक्त.	धनयुक्त	धनयुक्त.	धनयुक्त
४	सुहृत्.	दरिद्री.	दुष्टभाग्य.	भ्रल्पसंतती.	बहुसौख्य.	बहुसौख्य.	बहुसौख्य.	भ्रल्पदुःख.	पुत्रनाश
५	सुत.	पुत्रनाश.	कन्याबहु	पुत्रनाश.	उत्तमफल	शुभफल	बहुसुख	रोगी.	मृत्यु.
६	रिपु.	धनयुक्त	विधवा.	धनयुक्त	कलहऋणि.	धनयुक्त	दरिद्री. बैरया.	धनयुक्त	धनयुक्त
७	जाया	रोगी.	प्रवासी.	विधवा	नाश.	नपबंधन	मृत्यु.	वैधव्य. मरण.	धननाश
८	मृत्यु	विधवा.	वियोग. मरण.	धनयुक्त	स्वजन वियोग	स्वजन वियोग	मरणांत वियोग	बहुपुत्र.	मरणांत वियोग
९	धर्म.	धर्मबुद्धि	पुत्रयुक्त	धर्मकर्मी	उत्तम. भोगी.	धर्मबुद्धि	धर्मबुद्धि	वंध्या.	वंध्या.
१०	कर्म.	दुष्टबुद्धि	पापकर्मी.	मृत्यु.	धनयुक्त पतिव्रता	धनयुक्त पतिव्रता	धनयुक्त पतिव्रता	पापकर्मी	वैधव्य.
११	भ्राय.	बहुपुत्र.	धनयुक्त	बहुपुत्र	रूपवती.	वंध्यापुत्री	पुत्रयुक्त	धनयुक्त	सौभाग्यवती.
१२	व्यय.	दरिद्र.	दिनांध.	दुष्टकर्मी	रूपपुत्र.	सुशीला	पतिव्रता	दरिद्री.	पापकर्मी

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अथाष्टोत्तरीदशा.

आर्द्रापुनर्वसुःपुष्यआश्लेषातुरवेर्दशा मघा पूर्वोत्तराचैवचंद्रस्यचदशातथा १ हस्तोविशाखाचित्राचस्वातीभौमदशास्मृता ज्येष्ठानुराधामूलेचसौम्यस्यचदशाबुधैः २ अभिजिच्छ्रवणःपूषाउषाचैवशनेर्दशा धनिष्ठाशततारा चपूर्वाभाद्रपदागुरोः ३ उभापूषाश्विनीकालराहोश्चैवदशास्मृता कृत्तिकारोहिणीचोक्तामृगःशुक्रदशाबुधैः ४ एषांभानांक्रमेणैवज्ञेयाःसूर्यादिकादशाः क्रूरजाआशुभाप्रोक्ताशुभास्यात्सौम्यखेटजाः ५ सूर्यस्यरसवर्षाणिइंदोःपंचदशैवच सौम्यस्यवसुवर्षाणिऋषिचंद्रबुधस्यच ६ मंदस्यदशवर्षाणिगुरोश्चैकोनविंशतिः राहोर्द्वादशवर्षाणिभार्गवस्यैकविंशतिः ७ छ छ

टी०- आर्द्रा नक्षत्रसे आरंभ करके मृगतक २८ नक्षत्रमें सूर्यसे शुक्रतक ८ ग्रहोंकी पृथक् पृथक् कोष्टकपरसे महादशाकी वर्षसंख्याजानना. और जिसविभागमेंजन्महोय उसमें भोग्याभोग्यजानना. जोदशाजन्मकालमेंहोय वही ग्रहकीदशाप्रथम जानना. चक्रपरसें स्पष्टदेखना. (चक्र १०५ सफेमेंलिखाहै. देखो.)

ग्रहोंकीअंतर्दशा.

महादशास्वस्वदशाब्दनिघ्नाहृतावसुव्योमधराभिरेताः अंतर्दशास्युर्गगनेचराणांतदेकभावोहिमहादशास्यात् १ छ छ

टी०- कोई ग्रहकी अंतर्दशा निकालनाहोय तो जन्मदशाके वर्षसंख्यासेउसकी वर्षसंख्यागुणदेना. नंतर १०८ सेभागलेना. जो

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अंक आवे सो वर्ष मालूम करना. शेष रहे तिस्को बारसे गुण देना. पुनः १०८ अंकसे भाग लेना. जो अंक आवे सो मास जानना. नंतर जो शेष रहे तिसको ३०से गुण देकर फेर १०८ अंकसे भाग लेना. जो अंक आवे सो दिन जानना. नंतर जो शेष रहे उस्को ६०से गुण देकर फेर १०८से भाग लेना. जो अंक आवे सो घडी जानना. इस प्रकारसे ग्रहोंकी अंतर्दशा जानना.

सूर्यकी महादशा. वर्ष ६.
आर्द्रा. पुनर्वसु. पुष्य. आश्लेषा.

अंतर्दशा.

ग्रह.	वर्ष.	मास	दिन	घटि	फल.
रवि	०	४	०	०	अशुभ
चंद्र	०	१०	०	०	शुभ.
मंगल	०	५	१०	०	अशुभ
बुध	०	११	१०	०	शुभ.
शनि	०	६	२०	०	अशुभ
गुरु	१	०	२०	०	शुभ.
राहु	०	८	०	०	अशुभ.
शुक्र	१	२	०	०	शुभ.
संख्या	६	०	०	०	०

चंद्रमाकी महादशा. वर्ष १५.
मघा. पूर्वा. उत्तरा.

अंतर्दशा.

ग्रह.	वर्ष.	मास	दिन	घटि.	फल.
चंद्र.	२	१	०	०	शुभ.
भौम.	१	१	१०	०	अशुभ
बुध.	२	४	१०	०	शुभ.
शनि	१	४	२०	०	अशुभ
गुरु	२	७	२०	०	शुभ.
राहु	१	८	०	०	अशुभ
शुक्र	२	११	०	०	शुभ.
रवि	०	१०	०	०	अशुभ
संख्या	१५	०	०	०	०

भौमकी महादशा. वर्ष ८
हस्त. चित्रा. स्वाती. विशाखा.

अंतर्दशा.

ग्रह.	व.	मा.	दि.	घ.	फल.
भौम.	०	७	३	२०	अशुभ.
बुध	१	३	३	२०	शुभ.
शनि	०	८	२६	४०	अशुभ
गुरु	१	४	२६	४०	शुभ.
राहु	०	१०	२०	०	अशुभ
शुक्र	१	६	२०	०	शुभ.
रवि	०	५	१०	०	अशुभ
चंद्र	१	१	१०	०	शुभ.
संख्या	८	०	०	०	०

बुधकी महादशा. वर्ष १७
अनुराधा. ज्येष्ठा. मूल.

अंतर्दशा.

ग्रह.	व.	मा.	दि.	घ.	फल.
बुध	२	८	३	२०	शुभ.
शनि	१	६	२६	४०	अशुभ.
गुरु	२	११	२६	४०	शुभ.
राहु.	१	१०	२०	०	अशुभ
शुक्र	३	३	२०	०	शुभ.
रवि	०	११	१०	०	अशुभ
चंद्र	२	४	१०	०	शुभ.
भौम	१	३	३	२०	अशुभ
संख्या	१७	०	०	०	०

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

शनिकी महादशा. वर्ष १०
पूर्वाषाढा. उत्तराषाढा. अभिजित. श्रवण

अंतर्दशा.

ग्रह.	व.	मा.	दि.	घ.	फल.
शनि	०	११	३	२०	अशुभ
गुरु	१	९	३	२०	शुभ.
राहु.	१	१	१०	०	अशुभ
शुक्र	१	११	१०	०	शुभ.
रवि	०	६	२०	०	अशुभ
चंद्र	१	४	२०	०	शुभ.
मंगल.	०	८	२६	४०	अशुभ
बुध	१	६	२६	४०	शुभ.
संख्या	११	०	०	०	०

गुरुकी महादशा. वर्ष १९.
धनिष्ठा. शततारका. पूर्वाभाद्रपदा.

अंतर्दशा.

ग्रह.	व.	मा.	दि.	घ.	फल.
गुरु	३	४	३	२०	शुभ.
राहु.	२	१	१०	०	अशुभ.
शुक्र	३	८	१०	०	शुभ.
रवि.	१	०	२०	०	अशुभ.
चंद्र	२	७	२०	०	शुभ.
मंगल	१	४	२६	४०	अशुभ.
बुध	२	११	२६	४०	शुभ.
शनि	१	९	३	२०	अशुभ.
संख्या	१९	०	०	०	०

राहूकी दशा. वर्ष १२
उत्तराभाद्रपदा. रेवती. अश्विनी. भरणी.

अंतर्दशा.

ग्रह.	व.	मा.	दि.	घ.	फल.
राहु.	१	४	०	०	अशुभ
शुक्र	२	४	०	०	शुभ.
रवि	०	८	०	०	अशुभ
चंद्र	१	८	०	०	शुभ.
मंगल	०	१०	२०	०	अशुभ
बुध	१	१०	२०	०	शुभ
शनि	१	१	१०	०	अशुभ
गुरु	२	१	१०	०	शुभ.
संख्या	१२	०	०	०	०

शुक्रकी दशा. वर्ष २१.
कृत्तिका. रोहिणी. मृग.

अंतर्दशा.

ग्रह.	व.	मा.	दि.	घ.	फल.
शुक्र	४	१	०	०	शुभ.
रवि.	१	२	०	०	अशुभ.
चंद्र	२	११	०	०	शुभ.
मंगल	१	६	२०	०	अशुभ.
बुध	३	३	२०	०	शुभ.
शनि	१	११	१०	०	अशुभ.
गुरु	३	८	१०	०	शुभ.
राहु	२	४	०	०	अशुभ.
संख्या	२१	०	०	०	०

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

विंशोत्तरीमहादशा.

पक्षोनजनुर्भमंकहृत्क्रमशोकेंदुकुजागुरूरयः
शनिचंद्रजकेतुभार्गवाः परिशेषात्तुदशाधिपास्ततः १

टी०-विंशोत्तरीदशाप्रकार. जन्मनक्षत्रमें २ कमकरना. ९ से भाग लेना. शेष १ बचे तो सूर्यदशा. २ बचेतो चंद्रदशा. ३ बचे तो भौम दशा. ४ बचे तो राहुदशा. ५ बचे तो गुरुदशा. ६ बचेतो शनिदशा. ७ बचे तो बुधदशा. ८ बचे तो केतुदशा और ० बचे तो शुक्रदशा और अधिपति जानना.

दशाकीवर्षसंख्या और भोग्याभोग्य.

ऋतुदिग्गिरयोधृतिर्नपातिधृतिमेधहयोनखाः
समाः क्रमतोहिमताअथादिमाजनिभस्थाघ
टिकाः समाहताः १ भभोगेनभक्ताः फलंष्यक्त
पाकस्तदूनादशासाभवेद्भोग्यसंज्ञा २

टी०-विंशोत्तरीदशाकीवर्षसंख्या ऋतुकहिये ६ दिक्क १० गिरीक० ७ धृतिक० १८ नृपक० १६ अतिधृतिकहिये १९ मेघ क० १७ हयक० ७ नखक० २० यह क्रमसे वर्षसंख्या सूर्यादि शुक्रांततक कोष्टकमें स्पष्ट देखना. आगे जन्मजिस नक्षत्र में होय उस नक्षत्रके पूर्व नक्षत्रकी जो घडी होय उस्को ६० से न्यून करना. उस्में इष्टकाल जोड देना तो भयात होता है. नंतर जन्मनक्षत्रकी जो घडी होय उस्में पूर्व ६० में न्यून किया जो घडी उस्में जोड देनातो भभोग होता है. भयातजो होय उस्को नक्षत्रपतीके वर्षसे गुण देना. भभोग जो भोग्यघडी होयउस्में भाग लेना. जो अंक आवे सो वर्ष जानना. शेष जो रहे तिस्को १२ से गुण देना और भोग्यसे भाग लेना. जो अंक आवे सो मास० शेष जो तिसके ३० से गुण देकर भोग्यसे भाग लेना. जो अंक आवे सो दिन. शेष जो तिस्को ६० से गुण देना और भोग्य घडीसे भाग लेना. जो

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अंक आवे सो घडी. इसी प्रकारसे दशा ल्यावना.

विंशोत्तरीक्रमम्

कृत्तिकादिक्रमेणैव ज्ञेयाविंशोत्तरीदशाः
अंतर्दशायुतावर्षमासवासरवर्त्तिताः १

टी०- कृत्तिकासे भरणीतक नक्षत्र और दशा अंतर्दशाकेसा मीकेनाम और वर्षसंख्या कोष्टकपरसे मालूम होगा.

सूर्यकी महादशा वर्ष ६ कृत्तिका. उत्तराफा० उत्तराषा०			
अंतर्दशा.			
ग्रह.	व.	मा.	दि.
रवि	०	३	१८
चंद्र	०	६	०
मंगल	०	४	६
राहु	०	१०	२४
गुरु	०	२	१८
शनि	०	११	१२
बुध	०	१०	६
केतु	०	४	६
शुक्र	१	०	०

चंद्रकी महादशा व. १० रोहिणी. हस्त. श्रवण.			
अंतर्दशा.			
ग्रह.	व.	मा.	दि.
चंद्र	०	१०	०
भौम	०	७	०
राहु	१	६	०
गुरु	१	४	०
शनि	१	७	०
बुध	१	५	०
केतु	०	७	०
शुक्र	१	८	०
रवि	०	६	०

भौमकी महादशा. वर्ष ७ मृग. चित्रा. धनिष्ठा.			
अंतर्दशा.			
ग्रह.	व.	मा.	दि.
भौम	०	४	२७
राहु	१	०	१८
गुरु	०	११	६
शनि	१	१	६
बुध	०	११	२७
केतु	०	४	२७
शुक्र	१	२	०
रवि	०	४	६
चंद्र	०	७	०

राहुकी महादशा व. १८ आर्द्रा. स्वाती. शततारका			
अंतर्दशा.			
ग्रह.	व.	मा.	दि.
राहु	२	८	१२
गुरु	२	४	१४
शनि	२	१०	६
बुध	२	६	१८
केतु	१	०	१८
शुक्र	३	०	०
रवि	०	१०	२४
चंद्र	१	६	०
मंगल	१	०	१८

गुरुकी महादशा व. १६ पुनर्वसु. विशाखा. पूर्वाभाद्र०			
अंतर्दशा.			
ग्रह.	व.	मा.	दि.
गुरु	२	१	१८
शनि	२	६	१२
बुध	२	३	६
केतु	०	११	६
शुक्र	२	८	०
रवि	०	९	१८
चंद्र	१	४	०
मंगल	१	११	६
राहु	२	४	२४

शनीकी महादशा व. १९ पुष्य. अनुराधा. उत्तराभाद्र०			
अंतर्दशा.			
ग्रह.	व.	मा.	दि.
शनि	३	०	३
बुध	२	८	९
केतु	१	१	९
शुक्र	३	२	०
रवि	०	११	१२
चंद्र	१	७	०
मंगल	१	१	९
राहु	२	१०	६
गुरु	२	६	१२

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

बुधकीमहाद० व०१७ आश्लेषा. ज्येषा. रेवती.			
अंतर्दशा.			
ग्रह.	व.	मा.	दि.
बुध	२	४	२७
केतु	०	११	२७
रवि	०	१०	६
चंद्र	१	५	०
मंगल	०	११	२०
राहु	२	६	१८
शुक्र	२	१०	६
गुरु	२	३	६
शनि	२	८	२ घ १७

केतूकीमहाद० व० ७ मघा. मूल. अश्विनी.			
अंतर्दशा.			
ग्रह.	व.	मा.	दि.
केतु	०	४	२७
शुक्र	१	२	०
चंद्र	०	७	०
मंगल	०	४	२७
राहु	१	०	१८
गुरु	०	११	६
रवि	०	४	६
शनि	१	१	२
बुध	०	१२	२७

शुक्रकीमहा० व०२८ पूर्वाफा. पूर्वाषा. भरणी.			
अंतर्दशा.			
ग्रह.	व.	मा.	दि.
शुक्र	३	४	०
रवि	१	०	०
मंगल	१	२	०
राहु	३	०	०
गुरु	२	८	०
शनि	३	२	०
चंद्र	१	८	०
बुध	२	१०	०
केतु	१	२	०

महादशाअंतर्दशाका फल.

सूर्यकीदशा.

देशांतरंचनिजबंधुवियोगदुःखमुद्वेगरोगभयचो
रभयाचपीडा पूर्वस्थितस्यनिखिलस्यधनस्य
नाशोभानोर्दशाजननकालदशाभवंति. १

टी०-प्रवासमें गमन, भाईलोगसें वियोगदुःख, मनको चिं-
ता, रोगभय, चोरसे पीडा और पूर्वके द्रव्यका नाश यह सूर्यद
शामें फलप्राप्ति जानना.

चंद्रकीदशा.

हेमादिभूतिवरवाहनयानलाभः शत्रुप्रतापबल
वृद्धिपरंपरांच मिष्टान्नपानशयनासनभोज
नानिनूनंस्यदाशशिदशागमनेभवंति २

टी०-सब ऐश्वर्य, सुवर्ण, घोडा, हाथी, यहसब वस्तूका लाभ,
शत्रूका नाश, बलकी वृद्धि, मिष्ट भोजन, आसन, उत्तम वस्तू-
का लाभ यह चंद्रदशामें फलप्राप्ति जानना.

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भौमकी दशा.

भूपालचोरभयवन्हिकृताच्चपीडासर्वांगरोग
भयदुःखसुदुःखितात्च चिंताज्वरश्चबहुकष्ट
दरिद्रयुक्तःस्यात्सर्वदाकुजदशाजननेभवंति १

टी०-राजासे भय, चोरसेभय, अग्नीसे पीडा, सब शरीरमें रोग, भय, बहुत दुःखी, चिंतायुक्त, ज्वरयुक्त, बहुतकष्ट, दरिद्रयुक्त, यह मंगलके दशामें फलप्राप्ति जानना.

राहूकी दशा.

दीनोनरोभवतिबुद्धिविहीनचिंतासर्वांगरोगभय
दुःखसुदुःखितात्च पापानिबंधबहुकष्टदरिद्रयु
क्तराहोर्दशाजननकालदशाभवंति १

टी०-मनुष्य दीन होय, बुद्धिहीन होय, चिंतायुक्त, सर्वांगरोगी, भय बहुत, दुःखी, पापकर्मसे बंधन, बहुतकष्ट, दरिद्रयुक्त यह राहुदशामें फलप्राप्ति जानना.

गुरूकी दशा.

राज्याधिकारपरिवर्धितचित्तवृत्तिंधर्माधिकार
परिपालनसिद्धिबुद्धिं सद्विग्रहोपिधनधान्य
समृद्धिताचस्याद्वनागुरुदशागमनेभवंति १

टी०-राजाका अधिकार, चित्तकीस्वस्थता, धर्ममें उत्तम प्रकारकी बुद्धि, शरीरमें आरोग्य, सत्य, विचारवान्, धनधान्यकी समृद्धि यह फल गुरुदशामें जानना.

शनीकी दशा.

मिथ्यापवादवधबंधनमर्थहानिर्मित्रेचबंधुवचने
पुचयुद्धबुद्धिः सिद्धंचकार्यमपियत्नसदाविनष्टं
स्यात्सर्वदाशनिदशागमनेभवंति १

टी०-मिथ्याअपवाद, दूसरेका वध, बंधन, द्रव्यनाश, मित्र

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भौर बंधूसे कलह, सिद्ध कार्यका नाश, यह शनिदशामें फल प्राप्ति जानना.

बुधकीदशा.

दिव्यांगनामदनसंगमकेलिसौख्यंनानाविला
समभिरागमनोभिरामैः हेमादिरत्नविभवाग
मकोशाध्यानंस्यात्सर्वदाबुधदशागमनेभवंति १

टी०- उत्तमस्त्रीप्राप्ति-रति और नानाप्रकारका सौख्यप्राप्ति, विलास-सुवर्ण-रत्न इत्यादि विभवयुक्त ईश्वरध्यान यह बुधकेदशाका फल जानना.

केतूदशा.

भार्यावियोगजनितंचशरीरदुःखंद्रव्यस्यहानिर
तिकष्टपरंपरान्च रोगाश्चबंधुकलहश्चविदशता
चकेतोर्दशाजननकालदशाभवंति १

टी०- स्त्रीवियोगसंबधी शरीरका दुःख, द्रव्यनाश, बहुत कष्ट, रोगी, बंधूसे वैर, देशांतरवास यह केतुदशाका फल जानना.

शुक्रकीदशा.

आरामवृद्धिपरिगर्वशरीरवृद्धिश्वेतातपत्रधनधा-
न्यसमाकुलंच आयुःशरीरसुतपौत्रसुखंनराणां
द्रव्यंचभार्गवदशागमनेभवंति. १

टी०- सुखस्थानयाने बगीचा इत्यादिककी वृद्धि, शरीरपुष्ट, छत्रप्राप्ति, धनधान्ययुक्त, आयुष्य बहुत, पुत्रादिकका सौख्य, द्रव्यप्राप्ति यह फल शुक्रदशामेंजानना.

अथयोगिनीदशा.

मंगलापिंगलाधान्याभ्रामरीभद्रिकापिच उ-
ल्कासिद्धासंकटाचयोगिन्यष्टौदशास्मृताः १

टी०- मंगला १, पिंगला २, धान्या ३, भ्रामरी ४, भद्रिका ५ उल्का ६, सिद्धा ७, संकटा ८, यह आठयोगिनीका दशाप्रकार आगे-स्पष्ट है ऐसा जानना.

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

योगिनीस्वामी.

अथासामधीशाकमान्मंगलायाः शशीतीक्ष्ण भानुगुरुर्भूमिसूनुः बुधःसूर्यसूनुर्भृगुः सिंहिका याः सुतः संकटायास्तथांतेचकेतुः १

टी०-मंगलादिकदशाकेस्वामी चंद्र, सूर्य, मंगल, बुध, शनि, शुक्र, राहु केतू संकटादशाका स्वामी. यह मंगलादिक दशाके क्रमसे स्वामीजानना. योगिनीदशाक्रम.

स्वर्क्षैः पिनाकिनयनैः संयोज्यवृक्षभिर्भवेत् योगिन्यष्टौसमाख्याताशून्यपातनसंकटा १

टी०-दशाल्यावनेका प्रकार जन्मदशामें युक्त ३ करके ८से भाग लेना. जैसा जन्मनक्षत्र पुष्य ८ इसमें ३ जोड दियातो ११ भया. ८से भागलेनातो शेष ३ बचेनेसे धान्यादशा आती है. यह प्रकारसेदशा क्रमजानना. वर्षसंख्या.

एकद्वित्रीणिवेदाश्चपंचषट्सप्तमानिच अष्ट वर्षाणिहिभवेन्मंगलादावनुक्रमात् १

टी०-आठो योगिनीकी वर्षसंख्या. मंगला १ वर्ष, पिंगला २, धान्या ३, भामरी ४, भद्रिका ५, उल्का ६, सिद्धा ७, और संकटा ८ वर्ष इसप्रकारसे वर्षसंख्या जानना.

अंतर्दशा.

अथांतर्दशायाः प्रकारंप्रवक्ष्मिदशावार्षिकंस्व स्ववर्षेणगुण्यं ततःषट्त्रिभिर्लब्धवर्षादिकासासदारवेदविद्धिर्विधेयाफलार्थम् १

टी०- मास दशासे जिस दशाका अंतर करना होय उस्के वर्षसंख्यासे मासदशाको गुण देना. और उस गुण्यांकको ३६ का भाग लेनेसे अंतर्दशा होती है. आगे चक्र लिखा है उस पर देखनेसे यः मालूम होवेगा.

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अंतर्दशाकोष्टक.

मंगला१ व.१दि.३६०		पिंगला२ व.२दि.७२०		धन्या३ दि.१०८०		भ्रामरी४ दि.१४४०		भद्रिका५ १८००		उल्का६ २१६०		सिद्धा७ २५२०		संकटा८ २८८०	
मंगला	१०	पिं.	४०	ध.	१०	भा.	१६०	भ.	२५०	उ.	३६०	सि.	४१०	सं.	६४०
पिंगला	२०	ध.	६०	भा.	१२०	भ.	२००	उ.	३००	सि.	४२०	सं.	५६०	मं.	८०
धन्या	३०	भा.	८०	भ.	१५०	उ.	२४०	सि.	३५०	सं.	४८०	मं.	७०	पिं.	१६०
भ्रामरी	४०	भ.	१००	उ.	१८०	सि.	२८०	सं.	४००	मं.	६०	पिं.	१४०	ध.	२४०
भद्रिका	५०	उ.	१२०	सि.	२१०	सं.	३२०	मं	५०	पिं.	१२०	ध.	२१०	भा.	३२०
उल्का	६०	सि.	१४०	सं.	२४०	मं.	४०	पिं.	१००	ध.	१८०	भा.	२८०	भ.	४००
सिद्धा	७०	सं.	१६०	मं.	३०	पिं.	८०	ध.	१५०	भा.	२४०	भ.	३५०	उ.	४८०
संकटा	८०	मं.	२०	पिं.	६०	ध.	१२०	भा.	२००	भ.	३००	उ.	४२०	सि.	५६०
बेरीज	३६०	०	७२०	०	१०८०	०	१४४०	०	१८००	०	२१६०	०	२५२०	०	२८८०

दशापरत्वेफलमाह.

मंगलामंगलानंदयशोद्रविणदायिनी पिंग-
लातनुतेव्याधिमनसोदुःखसंभ्रमौ १ धन्या
धनसुहृत्बधुरूपसीमंतिनीकरी भ्रामरीज
न्मभूमिभ्रमयंत्सर्वतोदिशं २ भद्रिकासु
खसंपत्तिविलासवशदायिनी उल्काराज्यधना
रोग्यहारिणीदुःखकारिणी ३ सिद्धासाधयते
कार्यंनृणांवैसुखदाभवेत् संकटासंकटव्या-
धिमरणक्लेशकारिणी ४.

टी०-मंगलादशाका फल शुभकार्य, आनंद, द्रव्य और यशदेने-
वाली. पिंगलाका फल शरीरको व्याधि, मनको दुःख, भ्रमकारि-
णी. धन्याका फल आरोग्यता, सुहृद्बंधुओंकी भेट, धान्य और
सुंदरता देनेवाली. भ्रामरीका फल स्थाननाश, दिशाभ्रमण करावने-
वाली. भद्रिकाका फल सुख, संपत्ति, विलास, यश देनेवाली. उल्का-
दशाका फल राजभय, धननाश, रोगग्रस्त, पीडा देनेवाली. सिद्धा
का फल कार्यसिद्धि और सुखप्राप्ति करदेनेवाली. और संकटा

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

का फल संकट, व्याधी श्चोर मरणसदृशकुशदेनेवाली जानना.

सूर्यादीनां दिनदशा.

रविदिननवसंख्याचंद्रमाब्धिमबाणैः क्षिति
तनयगजाब्धीचंद्रजःषट्शराश्च शनिरसगुण
संख्यावाक्पतिर्नागबाणैर्नयनयुगकराहुः स-
प्ततिःशुक्रसंख्या १ जन्मनाविंशतिःसूर्यतृतीये
दशचंद्रमाः चतुर्थेभौमचाष्टौचषष्ठेबुधचतुर्थके
२ ससप्तमेदशसौरिःस्थानवमेचाष्टमेगुरोः दश
मेराहुर्विंशत्यातदूर्ध्वंतुभुगादशा ३ फलम्
पंथाभोगोनुतापश्चसौख्यंपीडाधनंक्रमात्
नाशःशोकश्चसौख्यंचजन्मसूर्यदशाफलम् ४

टी०-एकवर्षमें सूर्यादिनवग्रहोंका दशाप्रकार-सूर्यजन्मस्थानसे द्वादशराशीभोगकरताहै. उसमें सबग्रहोंकी दशाभोग होती है. उसका प्रकार—

२० दिनकी सूर्यदशा जन्मस्थानसेंजानना. फल-रस्ता चलावे.

५० दिन चंद्रकी दशा. तृतीयस्थानके १० दिन सूर्यभोग करताहै. फल- नानाप्रकारके उत्तम भोग.

२८ दिन मंगलकीदशा. चतुर्थस्थानके आठदिन सूर्यभोग करताहै. फलरोग और संताप.

५६ दिन बुधकी दशा. षष्ठस्थानके ४ दिन सूर्यभोग करताहै. उसका फल सौख्यकारक.

३६ दिन शनीकीदशा. ससमस्थानके १० दिन सूर्यभोगकरताहै. फल-पीडाकारक जानना. [फल-धनप्राप्ति.

५८ दिन गुरूकीदशा. नवमस्थानके आठदिन सूर्यभोगकरताहै.

४२ दिन राहूकीदशा. दशमस्थानके २० दिन सूर्यभोग करताहै. उसका फल- नानाप्रकारका शोक करनेवाली.

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

७०दिन शुक्रकीदशा. वाराधीस्थान पूर्ण सूर्यभोग करताहै.उ-
सीका फल-सर्वसौख्यकारक ऐसा जानना.

नित्यदशाक्रम.

तिथिवारंचनक्षत्रंनामाक्षरसमन्वितं नवभि
स्तुहरेद्भागंशेषंदिनदशोच्यते १ रविर्चंद्रोभौमरा
हुगुरुमंदकेतवो क्रमणैतादशाज्ञेयाःफ
लंपूर्वोक्तमवहि २ ७ ७

टी०-तिथी,वार,नक्षत्र संख्याके सबअंकोंकी बेरीज करके
उसमें अपने नामके अक्षरकी संख्या मिलावना, और ९से भाग
लेना.शेष एकरहे तो सूर्यदशा,२रहे तो चंद्रदशा,३रहे तोमंगलद-
शा,४रहे तो राहूकी दशा,५रहे तो गुरुकी दशा,६रहे तोशनीकी
दशा,७रहे तो बुधकीदशा,८रहे तो केतूकी दशा,और०रहे तो-
केतूकी दशा ऐसा नित्यदशाका क्रमजानना.

अन्यमत.

जन्मताराचतुर्गुण्यंतिथिवारसमन्वितं नव
भिस्तुहरेद्भागंशेषंदिनदशोच्यते १ रविणा-
शोकसंतापोशशांकेक्षेमलाभको भूमिपुत्रे
नमृत्युःस्याद्बुधेप्राप्तिर्विवर्धनम् २ गुरौवित्त
भृगौसौख्यंशनौपीडानसंशयः राहुणाघात
पातौचकेतौमृत्युर्दशाफलम् ३ ७ ७

टी०-जन्मनक्षत्रको चतुर्गुणितकरना.उसमेंतिथिसंख्या
वारसंख्या जो होयसो सब एकत्र करके ९से भागलेना.शेष
१रहे तो सूर्यकी दशा,फल शोकसंतापकारक; २रहे तो चंद्रकी
दशा,फल कुशललाभः ३रहे तो मंगलकी दशा,फल मृत्युकारक;
४रहे तो बुधकी दशा,फल बुद्धीकी वृद्धि; ५रहे तो गुरुकी दशा,
फल धनप्राप्तिः ६रहे तो शुक्रकीदशा.फल सुखकारकः ७रहे

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

तोशनीकी दशा; फल पीडाकारक; ८ रहे तो राहूकी दशा; फल घातभाषापात; ० याने पूर्ण रहे तो केतूकी दशा; फल मृत्युका. रक. इसीप्रकारसे नित्यदशाका क्रम और फल जानना.

अथगोचरप्रकरणम्.

मासंशक्रबुधादित्याः साद्धमासंतुमंगलः
त्रयोदशगुरुश्चैवसपादद्वदिनेशशी १ राहुर
ष्टादशान्मासान्त्रिंशन्मासाशनैश्चरः राहुव
त्केतुरुक्तस्तुराशिभोगाःप्रकीर्तिताः २ फल
सूर्यःपंचदिनंशशिन्त्रिघटिकाभौमोष्टवैवास
रंसप्ताहंबुधनाबुधत्रयदिनंमासंद्वयंवैगुरोः ष
ण्मासंरविजस्तथैवसततंस्वर्भानुमासद्वयंकेतो
श्चैवतथाफलंपरिमितंज्ञेयंग्रहाणांफलम् ३ रा-
शिप्रवेशस्तूयारिमध्यंशक्रबृहस्पती राहुः
चंद्रः शनिश्चांतसौम्यश्चैवसदाशुभं ४

टी०-सूर्यादिनवग्रह बारह राशीगोचरमें भोग करतेहै तिसका फल आदिमध्यांत होताहै सो अनुक्रमसे दिनसंख्यासहित कहते हैं. सूर्य १राशी एकमहिनेमें भोग करतेहै. सो आद्य ५दिन फल देताहै. चंद्र १राशी २। दिनमें भोगकरतेहै. सो अंत्यकी ३ घडी फल देताहै. मंगल १राशी १॥महिना भोग करताहै. सो आद्य ८दिन फलदेताहै. बुध १राशी १महिना भोग करताहै. सो अंत्यमें ३ घडी फलदेताहै. गुरु १राशी १३ महिना भोगकरतेहै. सो मध्यभागमें २महिने फलदेतेहै. शुक्र १राशी एकमहिना भोग करताहै. सो मध्यभागमें ७दिन फलदेताहै. शनि १राशी ३०महिनेभोगकरताहै. सो अंतके ६महिने फल देताहै. राहु और केतू १राशि १८ महिने भोगकरताहै सो अंतके ३महिनेफल देताहै.

स्थानपरत्वेफल.

सूर्यस्थानविनाशभयंश्रियंमानहानिमथदैन्यं वि

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

जयंमार्गेपीडांसुखंहंतिसिद्धिमायमथहानिं १चं
द्रोन्नंचधनंसौख्यंरोगंकार्यंक्षतिंश्रियं श्रियंमृत्यु
नृपभयंसुखमायव्ययंक्रमात् २ भौमारिभीतिधनना
शमर्थभयंतथार्थंक्षतिमर्थलाभं धनात्ययंशत्रुभयं
चपीडांशोकंभयंहानिमनुक्रमेण ३ बुधःसुखंधनं
मन्यभीतिंधनंरुजंस्थानमथोचपीडा अर्थंरुजंसौख्य
मर्थात्मसौख्यंव्यथक्षतींजन्मगृहात्करोति ४ गुरु
र्भयंधनंक्लेशंधननाशंसुखंशुचिः मानरोगंसुखंदैन्य
लाभंपीडांचजन्मभात् ५ कविःशत्रुनाशंधनंसौख्यम
र्थंसुतार्तिंरिपोःसाध्यंशोकमर्थं बुद्धेरलाभंविप
त्तिंधनार्तिंधनार्तिंतनोरात्मनोजन्मराशेः ६ शनिःसर्व
नाशंतथावित्तनाशंधनशत्रुवृद्धिंसुतादेःमृद्धिं श्रियं
दोषसंधिंरिपुंद्रव्यनाशंतथादौमनस्यंधनंबन्धनार्थं ७
राहुर्हानिंतथानैश्वंधनंवैरंशुचिंश्रियं कलिंवसुंचदुरितंवै
रंसौख्यंशुचंक्रमात् ८ केतुःक्रमादुजंवैरंसुखंभीतिं
शुचंधनं गतिंगदंदुष्कृतींचशोकंकीर्तिंचशत्रुताम् ९

राशीः	रविः	चंद्रः	मंगलः	बुधः	गुरुः	शुक्रः	शनिः	राहुः	केतुः
तनु	नाश	अन्नभा	अशुभं	बंधन	भय	शत्रुना	सर्वना	हानिः	रोगः
धन	भयः	धनभाः	धनभाः	धनभा	धनभा	धनभा	धनना	धनलाभ	वैरः
सहजः	लक्ष्मीः	सुखः	धनभा	प्रीतिः	क्लेशः	सौख्य	धनलाः	धनभाः	सुखः
सुखंत	मानहा	रोगः	भयः	धनभा	धनना	धनभा	शत्रुहः	वैरः	भयः
सुत	दीनता	कार्यक्षः	अर्थभा	रोगः	सुखः	पुत्रभा	पुत्रभा	शुद्धिः	शुद्धिः
रिपुः	विजय	लक्ष्मीः	लाभः	स्थानला	शुचिः	शत्रुभः	धनभा	लक्ष्मीः	धनभाः
जाया	मार्ग	लक्ष्मी	खर्चः	पीडा	मान	भय	दोष	कलहः	मार्गक
मृत्यु	पीडा	मृत्यु	शत्रुभः	अन्नभा	सौख्य	शोक	शत्रु	धनलाः	रोगः
धर्म	पुण्य	राजभः	पीडा	रोगः	सुखः	धनभाः	धनलाः	पापक	दुष्टक
कर्म	सिद्धिः	सुख	शोकः	सौख्य	दीनता	महाव	सुखहा	वैरः	शोक
आय	लाभः	लाभः	धनभा	सौख्य	लाभ	विपत्ति	धनभा	सौख्य	कीर्तिः
व्यय	हानिः	खर्च	हानिः	नाशः	पीडा	धनभा	धनना	शुद्धिः	शत्रुना

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

टी०-इस्का अर्थ ११७ सफेमें कोष्टक लिखा है उसे मालूम होवेगा.

जन्मस्थचंद्रकी पंचककर्म वर्ज्य.

जन्मस्थर्क्षेशशांकेतुपंचकमाणि वर्जयेत्
यात्रांयुद्धंविवाहंचक्षौरंचगृहप्रवेशनम् १ ७

टी०-यात्रा करनेका जाना, युद्ध करनेका जाना, विवाह, क्षौर और गृहप्रवेश ऐसे पांच कर्म जन्मस्थ चंद्रमें वर्ज्य करना.

चंद्रबल.

द्वित्रिपंचनवमेशुक्लेश्रेष्ठचंद्रोहिउच्यते अष्टमे
द्वादशकृष्णेचतुर्थेश्रेष्ठउच्यते १ ७ ७

टी०-शुक्लपक्षमें चंद्रमा बली होता है. कृष्णपक्षमें तारा बली होती है. तथापि चंद्रमा बली होय, तारा क्लेशदायी होती है.

ग्रहोंकेनेष्टस्थान.

येखेचरागोचरतोष्टवर्गादशाकमाद्वाप्यशुभाभ
वंति दानादिनांतेसूतरांप्रसन्नास्तेनाधुना
दानविधिप्रवक्ष्ये १ ७ ७ ७

टी०-जो ग्रह गोचरमें, अष्टवर्गमें अथवा दशामें अशुभ होय तो उस ग्रहका दान द्रव्यसेया आगे लिखा है उसमाफक करना.

वारोंकेदान.

भानुस्तांबूलदानादपहरतिनृणांवैकृतंवासरोत्थं
सौम्यःश्रीखंडदानादवनिवरसुतोभोजनात्पुण्यदानात् सौम्यःशास्त्रस्यमंत्राद्गुरुहरिभजनात्
भार्गवःशुभ्रवस्त्रात्तैलस्नानात्मभातेदिनकरतनयोब्रह्मनत्यापरेच १ ७ ७

टी०-सूर्यादिकवारोंके दुष्टफलका नाश होनेको दानदेना सो-सूर्यका तांबूलदान. चंद्रमाका श्रीखंड, चंदनदान. मंगलका ब्राह्मण-भोजन. पुण्यदान. बुधका शास्त्रके मंत्रका दान. गुरुका हरिभक्ति.

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

शुक्रका सफेद वस्त्रदान. शनैश्चरका तैलस्नान, और राहुकेतूकेवास्ते ब्राम्हणको नमस्कारदान करना.

ग्रहोंका दान.

सूर्य माणिक्यगोधूमसवत्सधेनुकौसुंभवासो गुडहेमताम्र आरक्तकंचंदनमबुजंचवदंतिदानंहिविरोचनाय १ चंद्र घृतकलशंसितवस्त्रंदधिशंखमौक्तिकंसुवर्णंच रजतंदद्याच्चंद्रारिष्टमतच्छांतयेत्वरितं २ मंगल प्रवालगोधूममसूरिकाश्चवृषंसताम्रंकरवीरपुष्पं आरक्तवस्त्रंगुडहेमताम्रंदुष्टायभौमायचरक्तचंदनं ३ बुध नीलवस्त्रंमुद्गहेमंबुधायरत्नंपात्रंदासिकांहेमसर्पिःकांस्यंदंतं कुंजरस्थायमपीराप्यंसस्यंपुष्पजात्यादिकंच ४ बुध अश्वःसुवर्णंमधुपीतवस्त्रंसपीतधान्यंलवणंसुपुष्पं सशर्करंतद्भजनीप्रयुक्तंदुष्टायशांत्यैगुरवेप्रणीतं ५ शुक्र चित्रवस्त्रंमपिदानवार्चितंदुष्टगोमुनिवरैःप्रणीतादितं तंडुलंघृतशुक्लवर्णंरौप्यंकवज्रकंपरिमलंधवलागौ ६ शनि मासाश्चतैलंविमलेंद्रनीलंतिलाःकुलित्थामहिषीचलोहं कृष्णाचधेनुप्रवदंतिनूनंदुष्टायदानंरविनंदनाय ७ राहु गोमेदरत्नंचतुरंगमश्वंसुनीलंतिलामूलकंबलंच तिलाश्चतैलंरवकुलोहमिश्रंस्वभानवदानमिदंवदंति ८ केतू वैडूर्यरत्नंसतुलंचतैलंसुकंबलश्चापिमदोमृगस्यशस्त्रंचकेतोःपरितोषहेतोच्छागस्यधानंकथितंमुनींद्रैः ९

टी०- इसका अर्थ आगे लिखा हुआ चक्र देखनेसे स्पष्ट मालूम होवेगा.

ग्रहोंकीजपसंख्या.

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

रवेःसप्तसहस्राणिचंद्रस्यैकादशैवतु भौमेद्
शसहस्राणिबुधेचाष्टसहस्रकं १ एकोनवि
शतिर्जीवेशुक्रेचैकादशैवतु त्रयोविंशतिर्मंद
चराहोरष्टादशैवतु २ केतोःसप्तसहस्राणि-
जपसंख्याप्रकीर्तिताः ३ ६ ६

टी०-सूर्यादिक नवग्रहोंकी जपसंख्या चक्रमें स्पष्ट देखना.

नाम.	रवि	चंद्र	मंगल	बुध.	गुरु	शुक्र	शनि.	राहु.	केतू.
	माणिक	घृतकुंभ	मुंगा.	नीलाव.	घोडा.	चित्रव.	उडदी.	गोमेद.	वैडूर्य.
	गोहू.	सफेदव	गोहू.	मूग.	सोना.	चावल	तेल.	रत्न.	रत्न.
	धनुसवत्स	दहि.	मसूरी	सोना.	सहत	घृत.	नीलम.	घोडा.	तिल.
	लाठव.	शंखव.	वेलला.	रत्नस.	पीलाव.	सोना	तिल.	नीलम.	तेल.
	गुड.	मोती	कनैल	पन्ना.	पीलाघा.	चांदी.	कुलथी	तेल.	कंबल
	सोना	सोना	लालक.	दासी.	नौन.	हीरा.	भैंस.	आवला	कस्तूरी
	तांबा	चांदी	गुड.	घृत.	फूल	सुगंध	लोह.	कंबल	शस्त्र.
	रक्तचं.	०	हेम.	कांसा.	चीनी.	शुभ्रधे	कृष्णधे	तिल.	बकरा.
	कमल	०	तांबा.	हाथिदंत	दरिद्रा	०	०	तेलसहित लोहा.	०
जप	७०००	११०००	१००००	८०००	११०००	१९०००	२३०००	१८०००	७०००

ग्रहपीडानिवारणार्थ.

देवब्राम्हणवंदनागुरुवचःसंपादनात्सत्यहं-
साधुनामपिभाषणाच्छ्रुतिरवःश्रेयःकथाकार
णात् होमादध्वरदर्शनात्शुचिमनोभावाज्जपा
दानतोनाकुर्वंतिकदाचद्देवपुरुषस्यैवंग्रहाःपीडनम् १

टी०-देवतोंकोऔर ब्राम्हणोंकोवंदनकरना. गुरुकीआज्ञासंपाल करना. साधुओंके मुखसे श्रुति, स्मृति और उत्तमकथाश्रवण. होमक रनेसे, यज्ञकेदर्शनसे, शुद्धमनसे, भावसे, जपसे, दानसे यह प्रकारसे करे तोग्रह पीडाकारक न होवे. ॥ ६ ॥ इतिगोचर प्रकरणम्॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अथ जातकर्म.

जातेपुत्रेपिताकुर्यान्नांदीश्राद्धंविधानतः जात
कर्मततः कुर्यादन्यैरालंभनात्पुरा १

टी०-पुत्र उत्पन्न होतेही पिताने जातकर्म करना. दूसरेने बालकको स्पर्श करनेके अव्वल नांदीश्राद्धपूर्वक यथाविधीसे कर्म करना.

नामकर्म.

पुष्यार्कत्रयमैत्रभेतुमृगभेज्येष्ठाधनिष्ठोत्तरा दित्या
ख्येषुचनामकर्मशुभदंयागेप्रशस्तेतिथौ अन्हिद्वा
दशकेतथान्यदिवसेशस्तेतथैकादशे गोसिंहालि
घटेषुह्यर्कबुधयोर्जीवेशशांकेपिच १ छ

टी०-पुष्य, हस्त, चित्रा, स्वाती, अनुराधा, मृग, ज्येष्ठा, धनिष्ठा, उत्तरात्रय, येउक्त और जन्म हुवेसे १२ या ११ वा दिन उक्त. अन्यमतसे १६।२२।१०० येउक्त और वृष, सिंह, कुंभ, वृश्चिक येलग्न शुभ, और रवि, बुध, गुरु, शुक्र, शनि, येवार. रिक्तातिथ्यादि दुष्टयोगादि वर्जित करके शुभदिन देखके नाम रखवाना.

अवकहडाचक्रम्.

चूचेचोलाश्विनीप्रोक्ता लीलूलेलोभरण्यथ आ
इऊएकृत्तिकास्याद्वोवावीवूतुरोहिणी १ वेवो
काकीमृगशिरःकूघङछतथार्द्रका केकोहाही
पुनर्भस्यादहुहेहोडाचपुष्यभं २ डीडूडेडोतुआ
श्लेषामामीमूमेमघास्मृता मोटोटीटूपूर्वफल्गु
टेटोपाप्युत्तरंतथा ३ प्रोक्तःपूषाणढोहस्तःपेपो
रारीतुचित्रका रूरेरोतातथास्वातीतीतूतेतोवि
शाखिका ४ नानीनूनेनूराधर्क्षेनोयायीतुइंद्रभं
येयोभाभीमूलभेस्यात्पूर्वाषाढाबुधाफडा ५ भे
भोजाज्युत्तराषाढाजूजेजोखाभिजिद्भवेत् खेखू-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

खेखोश्रवणभंगागीगूगेधनिष्ठिका ६ गोसा
सीसूशतभिषक्सेसोदादीतुपूर्वभाक् उभाद्
थाऊञ्ज्ञेयोदेदोचाचीतुरेवती ७ ७ ७

अथावकहडचक्रस्यकृत्तिकादित्वेपि अश्विन्यादीनांमे
षाद्यारंभकत्वेनतत्क्रमेणबालानांसुखबोधायशीघ्रोपस्थि
तयेचाश्विन्यादिनक्षत्रपादनामानिलिख्यंते । तत्र अई
ऊएतेषांह्रस्वत्वदीर्घत्वानियमः । तत्र अइउएओइतिपंच
स्वरयुक्तनामाद्यक्षराणांनियमः । एओएतयोर्ह्रस्वत्त्वा-
भावेनार्थाद्दीर्घत्वमेव । एवंनामाक्षराणांसमविषमसंख्ययो
रनियमः । व्यावहारिकेएवसंख्यायाः समत्वविषमत्वयो
र्नियमात् । अन्यथारौहिणः रैवतः आयभरणः एवमास
नामस्त्वपिउपेंद्रोयज्ञपुरुषः इत्यादिशिष्टप्रयोगाणांदुष्टत्वंस्यात् ।

टी०-नामाक्षरकेवास्ते नक्षत्रकेचारचरणमेंचारअक्षरचक्रमेंदेखना.

चू. चे. चो. ला.	अश्विनी	ह. हे. हो. डा.	पुष्य.	रू. रे. रो. ता.	स्वाती.	जू. जे. जो. खा.	अभिजित्
ली. ल्ल. ल्लो.	भरणी	डी. डू. डे. डो.	आश्लेषा	ती. तू. ते. तो.	विशाखा	खी. खू. खे. खो.	श्रवण.
आ. ई. ऊ. ए.	कृत्तिका	मा. मी. मू. मे.	मघा	ना. नी. नू. ने.	अनुराधा	गा. गी. गू. गे.	धनिष्ठा
वा. वी. वू. वे.	रोहिणी	मो. टा. टी. टू.	पूर्वा.	नो. या. यी. यू.	ज्येष्ठा.	गो. सा. सी. सू.	शततार०
वो. का. की. कू.	मृगशिरा	टे. टो. पा. पी.	उत्तरा.	ये. यो. भा. भी.	मूल.	से. सो. दा. दी.	पूर्वाभाद्र
घ. ङ. छ.	आर्द्रा.	पू. प. ण. ढा.	हस्त.	बू. धा. फा. ढा.	पूर्वाषाढा	दू. थो. झ. ञ.	उत्तराभा०
के. को. हा. हो.	पुनर्वसु	पे. पो. रा. रो.	चित्रा.	भे. भो. जा. जो.	उत्तराषा.	दे. दो. चा. चो.	रेवती.

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

मंचकारोहणम्

शशितुरगधनिष्ठारेवतीपुष्यचित्राशतभिषगनु
राधात्र्युत्तरास्वातिहस्ताः बुधगुरुभृगुवारेसौम्य
लग्नेभकस्यनिगदितमिहपूर्वंमंचकारोहणंतु १

टी०-मृग, अश्विनी, धनिष्ठा, रेवती, पुष्य, चित्रा, शततारका, अनुराधा, तीनोंउत्तरा, स्वाती, हस्त; बुध, गुरु, शुक्र, शुभग्रहकेलग्नमें बालकको पलंगपरशयनकरवाना. शुभप्रद होताहै.

दोलारोहणम्.

अंदोलशयनंपूंसांद्वादशेदिवसेशुभे त्रयोदशे
तुकन्यायाननक्षत्रविचारणा १ ७ ७

टी०-बालकको पालनेमें १२वे दिनमें घालनाशुभ. १३ वे दिन कन्याको पालनेमेंशयनकरवाना, इनको नक्षत्रादिकका विचार करना नहीं.

दुग्धपानमुहूर्तम्.

एकस्मिंशद्दिनेचैवपयःशंखेनपाययेत् अन्नप्रा
शननक्षत्रदिवसोदयराशिषु १ ७ ७

टी०-बालकको ३१ वे दिनमें, अन्नप्राशनकेनक्षत्रमें, जिसलग्नमें सूर्योदयहोय उसलग्नमें शंखसे दूध पिलावनाशुभ होताहै.

तांबूलभक्षणम्.

सार्द्धमासद्वयेदद्यात्तांबूलंप्रथमंशिशोः कर्पूरा-
दिकसंमिश्रंविलासायहितायच १ मूलेचचित्रा
करतिष्यहरिद्रभेषुपौष्णेतथामृगशिरदितिवास
रेषु अर्कंदुजीवभृगुबोधनवासरेषुतांबूलभक्षण
विधिर्मुनिभिःप्रदिष्टः २ ७ ७

टी०-बालकको प्रथम तांबूल २॥ महिनेमें कर्पूरादिकयुक्त करके सुखसौख्यहितकेवास्ते देना. पर मूल, चित्रा, हस्त, पुष्य, श्रवण, ज्येष्ठा, रेवती, मृग, पुनर्वसु; रवि, चंद्र, गुरु, शुक्र, बुध, ऐसे शुभयोगमें-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

बालकको तांबूल भक्षण करावनाऐसा आचार्योंने कहाहै.

सूर्यावलोकनम्.

हस्तःपुष्यपुनर्वस्वहरियुगंमैत्रत्रयंरोहिणीरेवत्युत्तरफाल्गुनीमृगयुताषाढोत्तरास्वातिभे मासौतुर्यतृतीयकौशनिकुजौत्यक्त्वाचरिक्तातिथींसिंहादित्रयकुंभराशिसहितंनिष्कासनंसंस्थिते १

टी०-हस्त, पुष्य, पुनर्वसु, श्रवण, धनिष्ठा, अनुराधा, ज्येष्ठा, मूल, रोहिणी, रेवती, उत्तराफाल्गुनी, मृग, उत्तराषाढा, स्वाती; चतुर्थ व तृतीय महिना; सिंह, कन्या, तुला, कुंभ यह राशीके चंद्रमामें बालकको सूर्यावलोकन करावना. परंतु शनि, मंगल, रिक्तातिथि अर्थात् ४।९।१४ इनका त्याग अवश्य करना.

कर्णवेध.

रोहिण्युत्तरमूलमैत्रमृगभेविष्णुत्रयेर्कत्रयेरेवत्यांचपुनर्वसुद्वयमृगेकर्णस्यवेधःशुभः मीनेस्त्रीधनुमन्मथेषुचघटेवर्षेवियुग्मेतिथौसौम्येचेंदुगुरोरवौचशनयेत्यक्त्वाचविष्णुबुधैः १

टी०-रोहिणी, उत्तरा, मूल, अनुराधा, मृग, श्रवण, धनिष्ठा, शतताराका, हस्त, चित्रा, स्वाती, रेवती, पुष्य, पुनर्वसु, पूर्वा यः नक्षत्रमें; मीन, कन्या, धन, मिथुन, कुंभ यः लग्नमें; विषम वर्षमें; विषम तिथीमें बुध, चंद्र, गुरु, रवि यः वारमें बालकका कान छेदना शुभ. परंतु विष्णुशयन कहिये चातुर्मासका त्याग करना.

कटिसूत्रबंधनम्.

अब्देनसौरेणशिशोःसमानेबालंतुसंस्नाप्यचजन्मधिष्ण्ये कृत्वायुषोवृद्धिकरंचकर्मतंधारयेच्छोभनिसूत्रवर्णम् १ ६७ ६७

टी०-बालकको संक्रांतिमानसे एकवर्षमें उत्तमस्नान करावना और

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

आयुष्यकी वृद्धि होय ऐसी शांतिकर्म करके जन्मनक्षत्रमें रक्तवर्ण युक्त कटिसूत्र कंबरमें बांधना शुभ.

अथान्नप्राशन.

पूर्वार्द्राभरणीभुजंगवरुणंत्यक्त्वाकुजार्कीतथा
नंदापर्वचसप्तमीमपितथारिक्तामपिद्वादशीं;
षष्ठमास्यथवान्नभक्षणविधिर्बालस्यमयुक्पंचमे
गोकन्याऊषमन्मथबुधबलेपक्षेचयोगशुभे १ ७

टी०-तीनों पूर्वा, आर्द्रा, भरणी, आश्लेषा, शततारका, मंगल, शनि; नंदातिथी, पर्वसप्तमी, रिक्ततिथी, द्वादशी, इतनेका त्याग करना, और पुत्रको षष्ठमासमें अथवा अष्टमासमें, कन्याको पंचममहिनेमें, अथवा विषममासमें वृष. कन्या. मीन. मिथुन इस लग्नमें शुक्लपक्षमें शुभयोग देखके बालकको अन्नप्राशन करवाना.

चौलम्.

रेवत्याद्यकरत्र्यादितिमृगज्येष्ठास्रविष्णुत्रये;
पुष्येचोत्तरगेखगुरुकविंदुज्ञेषुपक्षेस्थितौ गोस्त्री
मन्मथचापकुंभमकरंहित्वाचरिक्कातिथिंषष्ठिप-
र्वतथाष्टमीमपिसीनीवालिंचचूडांशुभां १ ७

टी०-रेवती, अश्विनी, हस्त, चित्रा, स्वाती, पुनर्वसु, मृग, ज्येष्ठा, श्रवण, धनिष्ठा, शततारका, पुष्य यह नक्षत्रोंमें; उत्तरायण सूर्यमें; गुरु, शुक्र, चंद्र, बुध, येवारमें; शुक्लपक्षमें चौलकरना शुभ. और वृष, कन्या, धन, मिथुन, कुंभ. मकर इस लग्नोंका त्याग करना. रिक्ततिथि, षष्ठी, पर्व अष्टमी, अमावास्या यह चूडाकर्ममें त्याग करना.

विद्यारंभ.

रेवत्यांमृगपंचमेहरियुगेपूर्वासुहस्तत्रयेमूलेश्वेभ्र
भिजिच्चभानुभृगुजेसौम्येधनुर्जीवयोः अब्दपंच-
मकेविहाय्यनिरिक्तलग्नऋायषष्ठीयुतान्रिक्तासो

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

म्यदिनेतथैवविबुधैः प्रोक्तोमुहूर्तः शुभः १ छ

टी०-रेवती. मृग. आर्द्रा. पुनर्वसु. पुष्य. आश्लेषा. श्रवण. धनिष्ठा. पूर्वा, हस्त, चित्रा, स्वाती, मूल, अश्विनी, अभिजित्; रवि, शुक्र, बुध, गुरु, इन वारमें; पंचम वर्षमें; शुभदिनमें विद्यारंभ करना; परंतु संपूर्ण अनध्यायका त्याग करना. षष्ठी; रिक्तातिथी इनकाभी त्याग करना.

मौंजीबंधनमुहूर्त.

पूर्वाषाढहरित्रयेश्विमृगभेहस्तत्रयेरेवतीज्येष्ठापुष्य भगेषुचोत्तरगतेभानौचपक्षेसिते गोमीनप्रमदा धनुर्वनचरेशुक्रेर्कजीवेतिथौपंचम्यांदशमीत्रये व्रतमहश्चैवद्विजन्मद्वये १ छ छ

टी०-पूर्वाषाढा, श्रवण, धनिष्ठा, शततारका, अश्विनी, मृग, हस्त, चित्रा, स्वाती, रेवती, ज्येष्ठा, पुष्य, पूर्वाफाल्गुनी यह नक्षत्र; उत्तरायणसूर्य; शुक्लपक्ष; वृष, मीन, कन्या, धन, सिंह यह लग्न; शुक्र, रवि, गुरु येवार; पंचमी, दशमी, एकादशी, द्वादशी, प्रदोषवर्जित ऐसे शुभमुहूर्तमें ब्राम्हणनें मौंजीबंधन करना शुभ.

मासादिकमुहूर्त.

विप्रंवसंतेक्षितिपंनिदाघेवैश्यंधनांतेव्रतिनंविदध्यात् माघादिशुक्रांतिकपंचमासाः साधारणावासकलाद्विजानां १ छ छ

टी०- ब्राम्हणने वसंतऋतूमें मौंजीबंधन करना. क्षत्रियनेग्रीष्मऋतूमें. वैश्यनेशरदृतूमें; और माघादिक ज्येष्ठमहिनातक पांचमास साधारण मानसे सकल द्विजोंको उक्तहै.

वर्षसंख्या.

गर्भाष्टमेष्टमेवाऽब्देपंचमेसप्तमेपिवा द्विजत्वंप्राप्नुयाद्विप्रोवर्षेत्वेकादशेनृपः १

टी०- ब्राम्हणको गर्भसे अथवाजन्मसे ८।५।७ वर्षमेंजनेऊब्राम्ह.

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

णको उक्त है और ११ वे वर्षमें क्षत्रियको मौंजीबंधन करना उक्त है.

गुरुबलम्.

वर्णाधिपे बलोपेते उपनीतक्रियाहिता,
सर्वेषां च गुरौ सूर्ये चंद्रे च बलशालिनी १

टी०- वर्णपति बलवान् होय तो मौंजीबंधन श्रेष्ठ. सबको गुरुबल, सूर्यबल, चंद्रबल, होय तो करना शुभ.

त्रयोदश्यादिचत्वारि सप्तम्यादितिथित्रयम्
चतुर्थी काकिनी प्रोक्ता अष्टावेव गलग्रहाः १

टी०- त्रयोदश्यादि प्रतिपदांत तिथी चार और सप्तमी, अष्टमी, नवमी, चतुर्थी ये आठ तिथी गलग्रह कहते है. सो वर्ज्य करना.

शूद्राणां व्रतबंधसंस्कारमाह.

मूलार्द्राश्रवणद्विदैववसुभे पुष्ये तथा चाश्विभे रेवत्यां भृगुरोहिणीदितिकरे मैत्रे तथा वारुणे चित्रा स्वातिमथोत्तरा भृगुसुते भौमे तथा चांद्रजे शूद्राणां तु बुधैः शुभं हि कथितं संस्कारकर्मोत्तमम् १

टी०- मूल, आर्द्रा, श्रवण, विशाखा, धनिष्ठा, पुष्य, अश्विनी, रेवती, मृग, रोहिणी, पुनर्वसु, हस्त, अनुराधा, शततारका, चित्रा, स्वाती, तीनो उत्तरा यह नक्षत्रोंमें और शुक्र. मंगल. बुध यह वारोंमें शूद्रका मौंजीबंधन संस्कार करना शुभ.

अथ विवाहप्रकरणम्.

तत्रादौ दैवज्ञपूजनम् दैवज्ञं पूजयेदादौ फलतांबूलपूर्वकं निवेदयेत्सुमनसा स्वकन्योद्वाहनादिकं १

टी०- प्रथम ज्योतिषीकी यथाशक्ति फलतांबूलपूर्वक पूजा करना. नंतर पितानें कन्याके विवाहका शुभाशुभ प्रश्न करना.

अस्तोदयः

प्रागुद्गतः शिशुरहं स्त्रितयं सितः स्यात् पश्चाद्दशा

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

हमिहपंचदिनानिवृद्धिः प्राक्पक्षमेवगदितोत्र
वसिष्ठमुख्यैर्जीवस्तुपक्षमपिवृद्धशिशुर्विवर्ज्यः १

टी०-पूर्वको शुक्रकाउदय होताहै. जब३ दिन शिशुत्वके अथवा अस्त होताहै. जब १५ दिन वृद्धत्वके वर्ज्य करना और पश्चिमकोउदय होवे तो पांचदिन शिशुत्वके और १० दिन वृद्धत्वके वर्ज्य करना. गुरूके अस्तउदयके १५ दिन वर्ज्य करना.

स्त्रीणांकुयोगाः

मूलजाचगुणंहंतिव्यालजाकुलटांगना विशा.
खजादेवरघ्नीज्येष्ठजाज्येष्ठनाशका १ ६७

टी०-कन्याजन्म मूलनक्षत्रमें होय तो गुणनाश. आश्लेषानक्षत्र में होयतो वेश्याहोय. विशाखामें होयतो पतीके छोटे भाईकानाश. ज्येष्ठानक्षत्रमें होयतो पतीके बडे भाईका नाशजानना.

वर्षप्रमाणमाह.

षडब्दमध्येनोद्वाह्याकन्यावर्षद्वयंततः सोमोभुं
क्तेततस्तद्वदंधर्वश्चतथानलः १

टी०-प्रथम सहावर्ष कन्याका विवाह करना नहीं. क्यूंकि प्रथम२ वर्ष चंद्रमा भोग करताहै. नंतर २ वर्ष गंधर्वभोग करताहै. नंतर २वर्ष अग्नि भोग करताहै. नंतर विवाहको शुद्ध जानना.

अष्टवर्षाभवेद्गौरीनववर्षातुरोहिणी दशवर्षाभ
वेत्कन्याह्यादशेत्वृषलीमता २ गौरीदानान्नाग-
लोकंवैकुंठंरोहिणींददत् कन्यादानाद्ब्रह्मलो-
करौरवंतुरजस्वला ३

टी०-आठ वर्षकी कन्याहोय तब उसका नाम गौरी, ९ वर्षकी होयतब रोहिणी, १० वर्षकी होयतब कन्या, १२ वरसकी होयतब शूद्री नाम जानना. इसका फल-गौरीदानसे नागलोक प्राप्ति, रोहिणीदानसे वैकुंठप्राप्ति, कन्यादानसे वैकुंठ प्राप्ति और शूद्रीदा-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

नसे घोर नरकप्राप्ति ऐसा यह कन्यादानका फल जानना.

मंगलविचार.

लग्नेव्ययेचपातालेयामित्रेचाष्टमेकुजे पत्नि
हंतिस्वभर्तारंभर्तुर्भार्याविनाशयेत् १

टी०-स्त्रीको या पुरुषको मंगल रहता है तिसका प्रकार १।१२।
४।७।८ इतने स्थानमें मंगल होय तो स्त्री मंगली कहावती है.
तो मंगलसे मंगल होय तो करना. अथवा पुरुषके बहु बलवान
होय तो करना शुभ.

ज्येष्ठविचार.

द्विज्येष्ठोमध्यमोप्रोक्तावेकज्येष्ठःशुभावहः
ज्येष्ठत्रयंनकुर्वीतविवाहंसर्वसंमतं १

टी०-पुरुष ज्येष्ठ वा कन्या ज्येष्ठ होय अथवा ज्येष्ठमास होय ऐ-
सा कोई २ ज्येष्ठमें करना मध्यम; १ ज्येष्ठमें करना शुभः और
पुरुषज्येष्ठ, स्त्रीज्येष्ठ, मासज्येष्ठ ऐसा तीनो ज्येष्ठ होय तो विवा-
ह करना नहीं.

विवाहकोवर्ज्य.

नाषाढप्रभृतिचतुष्टयंविवाहानापोषेनचमधुसं-
ज्ञकेविधेयः नैवास्तंगवतिभार्गवेचजीवेवृद्धत्वे
नरवलुतयोर्नबालभावे १ गीर्वाणमंत्रिणिमृगद्रमे-
धिष्ठितेनमासेऽधिकेत्रिदिनसंस्पृशिनावमेच २

टी०-आषाढसें चारमास, पौष, चैत्र और गुरु शुक्रका अस्त.
सिंहस्थ, अधिकमास, क्षयमास. ये विवाहको वर्ज्य करना.

गुरुबल और चंद्रबल.

स्त्रीणांगुरुबलंश्रेष्ठंपुरुषाणांरवेर्बलम् तयो
श्चंद्रबलंश्रेष्ठमितिगर्गेणभाषितम् १

टी०-स्त्रीको गुरुबल और पुरुषको रविबल श्रेष्ठ जानना. और
चंद्रबल दोनोंकोभी श्रेष्ठ है ऐसा जानना.

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

घटितदेखनेकाक्रम.

वर्णोवश्यंतथातारायोनिर्ग्रहगणस्तथा भ-
कुटनाडिमैत्रंचइत्येताचाष्टमैत्रिका १

टी०- १ वर्ण, २ वश्य, ३ तारा, ४ योनी, ५ ग्रह. ६ गण. ७ भकुट. ८ नाडी इत्यादिककी मैत्री क्रमसे देखना.

अथवर्णादि.

वर्णः मीनालिकर्कटाविप्रानृपाः सिंहाजघन्विनः
कन्यानक्रवृषावैश्याशूद्रायुग्मतुलाघटाः १ व
श्यम् द्वंद्वचापघटकन्यकातुलामानवाअजवृ-
षोचतुष्पदाः कर्ममीनमकराजलोद्भवाकेसरी
वनचरालिकीटकाः २ ताराबलम् कन्यर्क्षाद्वर
भंयावत्कन्याभंवरभादपि गणयेन्नवभिः शे-
षेत्रिष्वद्रिभमसत्स्मृतम् ३ योनिः अश्वोगज-
श्छागसर्पोसर्पश्वानविडालकाः मेषोविडाल
कश्चैवमूषकोमूषकश्चगौ ४ महिषीचततोव्या
घ्रोमहिषोव्याघ्रकंक्रमात् मृगोमृगस्तथाश्वाच
कपिर्नकुलएवच ५ नकुलोवानरःसिंहोतुरगो-
मृगराट्पशुः अघोरेणक्रमेणैवअश्विन्यादि
भयोनयः ६ वैरयोनिः गोव्याघ्रंगजसिंहमश्व
महिषंश्वैणंचबभ्रूरगंवैरंवानरमेषयोश्चसुमह
त्तद्वद्विडालोदुरं लोकानांव्यवहारतोन्यदपित
ज्ज्ञात्वाप्रयत्नः दिदंदंपत्योर्नृपभृत्ययोरपिसदाव
र्ज्यंशुभस्यार्थिभिः ७ ग्रहमैत्री मेषवृश्चिक-
योर्भौमःशुक्रोवृषतुलाधिपाः कन्यामिथुनयोः
सौम्योगुरुस्तुधनमीनयोः ८ शनिर्नक्रस्यकुंभस्य
कर्कस्यैवतुचंद्रमाः सिंहस्याधिपतिःसूर्यः कथितो

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

गणकैःक्रमात् ९ गणः अनुराधामृगोश्विस्तु श्रवणोदितिपुष्यकः स्वातीहस्तोरेवतीचनवदेव गणास्मृताः १० पूर्वात्रयंराहिणीचउत्तरात्रय मेवच आर्द्रातुभरणीचैवनवतमानुषागणाः ११ आश्लेषाशतभिषमूलविशाखाकृतिकातथा चित्राज्येष्ठाधनिष्ठाचनवतेराक्षसागणाः १२ अं-त्यनाडी कृत्तिकारोहिणीस्वातीमघाऽश्लेषाच रेवती श्रवणश्चोत्तराषादाविशाखात्वेकनाडिका १३ मध्यनाडी पूर्वाफाल्गुनिकाचित्राधनिष्ठाभर णीमृगाः पूर्वाषादानुराधाचपुष्योहिबुध्न्यमेवच १४ आद्यनाडी पूर्वाभाद्रपदामूलाज्येष्ठाहस्तःपुन र्वसुः अश्विन्यार्द्राशतभिषाचोत्तरात्वेकनाडिका १५ अश्विनीभरणीकृत्तिकाःपादमेषः कृत्तिका त्रयोरोहिणीमृगशिरार्द्धंवृषभः १ मृगशिरार्द्धमा रुद्राःपुनर्वसुःत्रयोमिथुनः पुनर्वसोःपादंपुष्य-आश्लेषांतंकर्कटकाः २ मघापूर्वाउत्तराःपादंसिं हः उत्तरात्रयंहस्तचित्रार्द्धंकन्या ३ चित्रार्धंस्वाती विशाखात्रयस्तुलः विशाखापादंअनुराधाज्येष्ठा तंवृश्चिकः ४ मूलपूर्वाषाढाउत्तराषाढाःपादंधनुः उत्तराषाढात्रयंश्रवणधनिष्ठार्द्धंमकरः ५ धनिष्ठा र्द्धंशततारकापूर्वाभाद्रपदात्रयंकुंभः पूर्वाभाद्रप दापादउत्तराभाद्रपदारेवत्यंतंमीनः ६ छ

टी०-एक नक्षत्रके चार चरण तो ९ चरणमें एक राशी होतीहै. तिस्का प्रकार आगे लिखेहुवे कोष्टकमें देखनेसे स्पष्ट मालूम-होवेगा.

कोष्टकम्.

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

घटितमान्नराशीपरत्वें.

राशी	वर्ण.	वश्य	स्वामी
मेष.	क्षत्रिय	चतुष्पद	भौम.
वृषभ	वैश्य	चतुष्पद	शुक्र.
मिथुन.	शुक्र.	मानव	बुध.
कर्क	विप्र.	जलचर	चंद्र.
सिंह.	क्षत्रिय	वनचर.	रवि.
कन्या	वैश्य.	मानव	बुध.
तुला	शूद्र	मानव	शुक्र
वृश्चिक	विप्र.	कीटक	भौम.
धन	क्षत्रिय	मानव	गुरु.
मकर	वैश्य.	जलचर	शनि.
कुंभ.	शूद्र	मानव	शनि.
मीन	विप्र.	जलचर	गुरु.

घटितमाननक्षत्रपरत्वें.

नक्षत्र	पोनी.	वैरयोनी	गण.	नाडी.
अश्विनी	अश्व.	म्हैस	देव	आद्य.
भरणी	गज.	सिंह.	मनुष्य.	मध्य.
कृत्ति.	मेंढा.	वानर.	राक्षस	अंत्य
रोहिणी	सर्प.	मुंगुस	मनुष्य	अंत्य
मृग.	सर्प	मुंगुस.	देव.	मध्य.
आर्द्रा.	श्वान	मृग	मनुष्य	आद्य
पुनर्वसु	मार्जार	उंदीर	देव.	आद्य.
पुष्य.	मेंदा	वानर	देव.	मध्य.
आश्लेषा	मार्जार	उंदीर	राक्षस	अंत्य.
मघा.	मूसा.	मार्जार	राक्षस	अंत्य.
पूर्वा.	उंदीर	मार्जार	मनुष्य	मध्य.
उत्तरा.	गो.	व्याघ्र.	मनुष.	आद्य.
हस्त.	म्हैसा.	अश्व.	देव.	आद्य.
चित्रा	व्याघ्र.	गो.	राक्षस	मध्य.
स्वाती.	म्हैसा	अश्व	देव.	अंत्य.
विशा.	व्याघ्र.	गो.	राक्षस	अंत्य.
अनुरा	हरण.	श्वान	देव.	मध्य.
ज्येष्ठा	मृग.	श्वान	राक्षस	आद्य.
मूळ	श्वान.	मृग.	राक्षस	आद्य.
पूर्वाषा	वानर.	मेंढा	मनुष्य.	मध्य.
उत्तरा.	मुंगुस	सर्प	मनुष्य	अंत्य
अभि.	नकुळ	सर्प	मनुष्य	अंत्य
श्रवण	कपि.	मेंदा	देव	अंत्य.
धनिष्ठा	सिंह.	गज.	राक्षस	मध्य.
शततारा	अश्व.	म्हैस	राक्षस	आद्य.
पूर्वाभा	सिंह.	गज.	मनुष्य.	आद्य.
उ.भा.	गो.	व्याघ्र.	मनुष्य	मध्य.
रेवती.	गज.	सिंह	देव.	अंत्य.

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भकूटनवपंचकम्.

मीनालिभ्यांयुतेकीटे कुंभेमिथुनसंयुते मकरे-
कन्यकायुक्तेनकुर्यान्नवपंचकम् १

टी०-मीनसे नवम वृश्चिक, वृश्चिकसे मीन पंचमराशी होती है. और कर्कसे मीन नवम, मीनसे कर्क पंचम; तो यह नवमपंचम और कुंभमिथुन और मकरकन्या यह नवमपंचम त्याग करना. संतान नाशकारक है.

मृत्यषडाष्टक.

मेषकन्यकयोरेव तुलामीनकयोस्तथा युग्मा-
त्योस्तबुधेज्ययामृत्यर्वनक्रसिंहयोः १ कुंभक
र्कटयोश्चैव वृषकोदंडयोस्तथा २ ६ ६

टी०-मेष. कन्या इसका परस्पर ६।८ इसी क्रमसे तुला, मीन, मिथुन, वृश्चिक, मकर, सिंह, कुंभ, कर्क, धन, वृषभ यह दोदो राशी मृत्यषडाष्टक है. इसका त्याग करना.

प्रीतिषडाष्टक.

सिंहोमीनयुतश्चैव तुलावृषयुतस्तथा धनुःकर्क
युतंचैवकुंभकन्यकयास्तथा नक्रस्यमिथुनेप्री
तिरुत्तमा १ ६ ६ ६

टी०-सिंह, मीन, तुला, वृष, धन, कर्क, कुंभ, कन्या, मकर, मिथुन. मेष वृश्चिक यह २।२ राशी प्रीतिषडाष्टक है सो शुभ जानना.

द्विर्द्वादश.

मेषऋषौवृषमिथुनोकर्कहरीतूलकन्यके अ-
लिधनुषीमकरकुंभावेतौद्विर्द्वादशराशी १

टी०-मेष, मीन, वृष, मिथुन, कर्क, सिंह, तुला, कन्या, वृश्चिक, धन. मकर कुंभ यह दोदो राशी द्विर्द्वादश आवे तो शुभ जानना. इसे अन्य राशीमें द्विर्द्वादश होय तो दारिद्र्यकारक जानना. अर्थात् उसीका त्याग करना उचित है.

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अन्यमतम् चतुर्थदशमश्चेवृतृतीयेकादशः शुभः उभयःसप्तमःसाम्यमेकर्क्षेशुभमुच्यते १

टी०- वरकन्याकीराशीपरस्परदशम, चतुर्थ, अथवा तृतीय एकादशहोयतो शुभ. दूनो सप्तम होयतो समशुभ जानना. वरकेवा कन्याकेराशीपति एक होयतो शुभजानना.

ग्रहोंकाशत्रुत्व मित्रत्व.

शत्रूमंदसितौसमश्चशशिजोमित्राण्यशेषारवे स्तीक्ष्णाशुक्रर्हिमरश्मिजश्चसुहृदौशेषाः समाः शीतगोः जीवेंदुष्णकराःकुजश्चसुहृदोज्ञोरिः-सितार्कीसमौमित्रेसूर्यसितौबुधस्यहिमगुः शत्रुः समाश्चापरे १ गुरौःसौम्यसीतावरीरविसुतोमध्योपरेत्वन्यथासौम्यार्कीसुहृदोसमौकुजगुरू शुक्रस्यशेषावरी शुक्रज्ञौसुहृदोसमौसुरगुरुःसौरस्यत्वन्यरवौयभोक्ताःसुहृदस्त्रिकोणभवनात्तेऽमीमयाकीर्तिताः २ ७ ७

टी०- इसका अर्थ नीचे लिखेले कोष्टकपरसे मालूम होवेगा.

कोष्टकम्.

नाम.	रवि.	चंद्र.	मंगल.	बुध.	गुरु	शुक्र.	शनि.
शत्रु.	शनि. शुक्र.	०	बुध.	चंद्र.	बुध. शुक्र.	रवि. चंद्र.	रवि.चंद्र मंगल
सम.	बुध.	मं. गु. शु. श.	शुक्र. शनि.	मं. गुरु शनि.	शनि.	मंगळ गुरु	गुरु.
मित्र.	चंद्र.गुरु मंगळ	रवि. बुध.	रवि.चंद्र गुरु.	रवि. शुक्र	रवि.चंद्र मंगळ	बुध. शनि.	बुध. शुक्र

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

गुणमेलनप्रकार.

वर्णकागुण १.

स्त्रीपुरुषकाएकवर्णहोयतोगुण१. अथवा पुरुषकाउच्चवर्णहोयतो१ इस्सेविपरीतहोयतोगुण० शून्य

वधूका वर्ण. / वरका वर्ण.	०	ब्रा.	क्ष.	वै.	शू.
ब्राह्मण		१	०	०	०
क्षत्रिय		१	०	०	०
वैश्य		१	१	१	०
शूद्र		१	१	१	१
अंत्य		०	०	०	०

वश्यकागुण २.

वैरभक्ष्येगुणाभावोद्वयोःसख्ये गुणद्वयं वश्यवैरगुणश्चैकोव श्यभक्षेगुणार्धकं १ ७ ७

टी०शत्रुभक्ष्यहोयतोगुण०दोनों समानजातीहोयतोगुण२ वश्यशत्रुहोयतोगुण आधाजानना.

चतुष्पद	२	॥	१	०	२
मानव	॥	२	०	०	०
जलचर	१	०	२	२	२
वनचर	०	०	२	२	०
कीटक	१	०	२	०	२

ताराकेगुण.

एकतोलभ्यतेताराशुभाचैवाशुभान्यतः तदा सार्धोगुणश्चैवताराशुध्यामिथस्त्रयः उभयोर्नशुभातारास्तदाशून्यंसमादिशेत् १

टी०-स्त्रीवापुरुषकिसीकाशुभतारा और किसीकाअशुभहोयतो गुण१॥ जानना.और दोनोंकाएकतारायानेंशुभताराहोयतो ३गुण और अशुभताराहोयतोगुण० जानना.

योनीकेगुण.

महावैरेचवैरेचस्वस्वभावेयथाक्रमम् मैत्रेचैवातिमैत्रेचखेदुद्विनिचतुर्गुणाः १ ७ ७

टी०-स्त्रीऔरपुरुष दोनोंमें एकसे महावैरहोयतो गुण०, दोनोसे परस्पर शत्रुत्वहोयतो गुण १, दूनोंकास्वभावएकहोयतो गुण२, दोनों सामान्य मित्रहोयतोगुण ३, दोनोंकी बहुत मित्रता होयतोगुण ४, दोनोंएकजाती होयतो गुण ४ जानना.

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

तारागुणकोष्टकम्.

तारा.	१	२	३	४	५	६	७	८	९
१	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३
२	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३
३	१॥	१॥	०	१॥	०	१॥	०	१॥	१॥
४	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३
५	१॥	१॥	०	१॥	०	१॥	०	१॥	१॥
६	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३
७	१॥	१॥	०	१॥	०	१॥	०	१॥	१॥
८	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३
९	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३

योनीगुणकोष्टकम्.

नांवं.	अ.	ग.	मे.	स.	श्वा.	मा.	मू.	गा.	सं.	व्या	ह.	वा.	मु.	सिं.
अश्व	४	२	२	३	२	२	२	१	०	१	३	३	२	१
गज.	२	४	३	३	२	२	२	२	३	१	२	३	२	०
मेष.	२	३	४	२	१	२	१	३	३	१	२	०	३	१
सर्प.	३	३	२	४	२	१	१	१	१	२	२	२	०	२
श्वान	२	२	१	२	४	२	१	२	२	१	०	२	१	१
मार्जार	२	२	२	२	२	४	०	२	२	१	३	३	२	२
मूषक	२	२	१	१	१	०	४	२	२	२	२	२	२	१
गाय	१	२	३	२	२	२	२	४	३	०	३	२	२	१
म्हैस	०	३	३	२	२	२	२	३	४	१	२	२	२	३
व्याघ्र	१	२	१	१	१	१	२	०	१	४	१	१	२	२
हरण	३	२	२	२	०	३	२	३	२	१	४	२	२	२
वानर	३	३	०	२	२	३	२	२	२	१	२	४	३	२
नकुल	२	३	३	०	१	२	३	२	२	२	२	३	४	२
सिंह	१	०	१	२	१	१	१	१	३	२	२	२	२	४
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०

ग्रहमैत्रीकागुण.

तत्रैकाधिपतित्वेचमित्रत्वंगुणपंचकं चत्वारः सप्तमित्रत्वेद्वयोसाम्येत्रयोगुणाः १ मित्रवैरेगुणाश्चैकोसमवैरेगुणार्द्धकं परस्परंवैरवैरेगुणा शून्यंविनिर्दिशेत् १

टी०-ग्रहमैत्रीमें गुणविचार-दोनोंके राशिस्वामी एक होयअ-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

थवा मित्रता होय तो गुण ५, दोनोंमें सम मित्रता होय तो गुण ४, दोनों सम होय तो गुण ३, दोनोंमें मित्रता शत्रुता होय तो गुण १, दोनोंमें सम शत्रुता होय तो गुण आधा और दोनोंसे शत्रु होय तो गुण शून्य जानना.

गणके गुण.

पुरुष और स्त्री ये दोनोंका एक गण होय तो गुण ६, अथवा पुरुष देवगण, कन्या मनुष्यगण होय तो गुण ६, दोनोंमें मनुष्यराक्षससे वैर गुण ०, दोनोंमें देवराक्षस होय तो वैर गुण १, दोनोंमें देवमनुष्य होय तो गुण ६ यह रीतीसे गणके गुण जानो.

वधूके गुण.	वरके गुण.						
	र.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श
र	५	५	५	३	५	५	०
चं	५	५	४	१	४	·॥·	·॥·
मं	५	४	५	·॥·	५	३	·॥·
बु	३	१	·॥·	५	·॥·	५	४
गु	५	४	५	·॥·	५	·॥·	३
शु	५	·॥·	३	५	·॥·	५.	५
श	०	·॥·	·॥·	४	३	५	५

वधूके गुण.	वरके गुण.		
	देव.	मनुष्य.	राक्षस
देव.	६	६	१
मनुष्य	६	६	०
राक्षस	१	०	६

वधूके गुण.	वरके गुण.		
	आद्य.	मध्य.	अंत्य.
आद्य	०	८	८
मध्य	८	०	८
अंत्य	८	८	०

भकूटकगुण.

एक राशी होय, नक्षत्रभिन्न होय अथवा १ नक्षत्र होके चरण भिन्न होय तो गुण ७; दोनों समसप्त होय तो गुण ७; तृतीय एकादश होय तो गुण ७; चतुर्थदशम होय तो गुण ७; भिन्नराशी एक नक्षत्र होय तो गुण ५; प्रीतिषडाष्टक, द्विर्द्वादश, नवपंचक इसमें परस्पर योनिशत्रुता होय तो भकूट गुण ६, शुभ. दोनोंका परस्पर नक्षत्र १ और चरणभी १ होय तो गुण शून्य जानना.

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

राशि.	मे.	वृ.	मि.	क.	सिं	क.	तू.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.
मेष.	७	०	७	७	०	०	७	०	०	७	७	०
वृषभ	७	७	०	७	७	०	०	७	०	०	७	७
मिथुन	०	७	७	०	७	७	०	०	७	०	०	७
कर्क.	७	०	७	७	०	७	७	०	०	७	०	०
सिंह.	०	७	०	७	७	०	७	७	०	०	७	०
कन्या	०	०	७	०	७	७	०	७	७	०	०	७
तूल	७	०	०	७	०	७	७	०	७	७	०	०
वृश्चिक	०	७	०	०	७	०	७	७	०	७	७	०
धन	०	०	७	०	०	७	०	७	७	०	७	७
मकर	७	०	०	७	०	०	७	०	७	७	०	७
कुंभ	७	७	०	०	७	०	०	७	०	७	७	०
मीन	०	७	७	०	०	७	०	०	७	०	७	७

वर्णफलम्.

वर्णज्येष्ठातुयानारीवर्णहीनस्तयःपुमान्
विवाहंयदिकुर्वीततस्याभर्ताविनश्यति १

टी०- वर्णमें पुरुष ज्येष्ठ और स्त्री हीनवर्ण होय तबजो विवाह होय तो पतीको नाशकारक जानना.

योनीफल.

घोडा और भैंसा ऐसे वैर योनी परस्पर दोनोंकी होय होय, और राजसेवकमेंभी ऐसा वैर होय तो त्याग करनाशुभ.

गणफल

स्वगणात्त्वोत्तमाप्रीतिर्मध्यमानरदेवयोः क-
लहोदेवदैत्यानांमृत्युर्मानवराक्षसः १ ७

टी०- स्त्रीपुरुषका एक गण होय तो उत्तम प्रीति; मनुष्यदेव होय तो मध्यम; देवदैत्य होय तो कलह; मनुष्यराक्षस होय तो मृत्यु.

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

कूटफलमाह.

षष्ठाष्टकेषमृत्कंपंचमनवमेनपत्यताज्ञेया द्वि
र्द्वादशेनिर्धनताशेषेषुमध्यमतासदा १

टी०-स्त्रीपुरुषका षष्ठाष्टक मृत्यकारक, नवपंचम संतानना-शकारक, द्विर्द्वादश दरिद्रकारक और शेष जो राशी उसमें शुभ.

नाडीफल.

आद्यनाडीवधेद्भर्त्तामध्यनाडीवधेद्वयं पृष्ठना-डीवधेत्कन्यामियतेनात्रसंशयः १

टी०-स्त्रीपुरुषकी आद्यनाडी होयतो पतीको अशुभ, दोनों-की मध्यनाडी होयतो दोनोंको अशुभ और दोनोंकी अंत्यना-डी होयतो कन्याको अशुभ जानना.

असत्कूट.

पुरुषनक्षत्रसे स्त्रीनक्षत्र नगीच होयतो अशुभ और पुरुषनक्ष त्रसे स्त्रीनक्षत्र दूर होयतो शुभ. जो एक नक्षत्र आयवा दोनोंके ए-क स्वामी होयतो शुभ जानना.

नक्षत्रमेलन.

जन्मभंजन्मधिष्ण्येननामधिष्ण्येननामभं व्य
त्ययेनयदायाज्यंदंपत्योर्निधनप्रदं १

टी०-पुरुषका जन्मनक्षत्र होयतो स्त्रीके जन्मनक्षत्रमें मेलन करना और पुरुषका नामनक्षत्र होयतो स्त्रीके नामनक्षत्रसे मेलन करना शुभ. इससे विपरीत होयतो मृत्यकारक होताहै.

वर्णपरत्वेमेलन.

ग्रहमैत्रंब्राह्मणानांक्षत्रियाणांगणस्तथा
वैश्यानांराशिकूटंहीशूद्राणांयोनिरुत्तमा: १

टी०-ब्राह्मणको ग्रहमैत्री, क्षत्रियोंको गणविचार, वैश्यों-को राशिकूट और शूद्रको योनिविचार करना शुभ.

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

		रो.	मे.	मे.	मे.	वृ.	वृ.	वृ.	मि.	मि.	मि.	क.	क.	क.	सि.	सिं.	सिं.	क.	क.
		१॥	१	१	·।·	·।।·	१	·।।·	·।।·	१	·।।।·	·।·	१	१	१	१	·।·	·।।।·	१
राशि.	भा.	न.	अ.	भ.	कृ.	कृ.	रो.	मृ.	मृ.	आ.	पु.	पु.	पु.	आ.	म.	पू.	उ.	उ.	ह.
मेष.	१	अ.	३६	३३	३२	२४	२१	२२	२७	२८	१९	२३॥	३१॥	२८	२७॥	२१॥	३२	११	१२
मेष.	१	भ.	३४	३६	३४	३१	२२॥	१४॥	१९	२६	२७	३१॥	३३॥	३५॥	३४॥	३२॥	३२॥	२१॥	२०
मेष.	·।·	कृ.	३२॥	३२	३६	३३	१०	१६॥	२०	२२	२१	२५	२३॥	२३॥	२३	२६॥	२६॥	१५॥	१५
वृषभ	·।।।·	कृ.	१८॥	१८॥	३६	३६	३४	३२॥	२५॥	२५॥	२५॥	२२	२४	२०	१८	२१॥	३१॥	२८	२८
वृषभ	१	रो.	२३॥	२४॥	१३	३४	३६	३४॥	३५॥	३२	२९	२६॥	२८	१२	१०	२४	२७॥	३४	३४
वृषभ	·।।·	मृ.	२४	११	११॥	३२॥	३६	३६	३५	३३	२१॥	२६	२०	२१	१८	१५	२५	३१	३४
मिथुन	·।।·	मृ.	२८	२९	२३॥	२७॥	३५	३६	३६	३४	३१	२०॥	१३॥	१४॥	२२॥	२८	२९॥	३१॥	३२॥
मिथुन	१	आ.	२०	१८	२३	३३॥	३२॥	३४	३३	३४	३४	२३	२३॥	१५॥	२३॥	१९	२१	२४	२४
मिथुन	·।।।·	पु.	३०	२७	२३	२७॥	३०॥	३१॥	३०॥	३४	३४	३४	२३	१६॥	२१॥	२५॥	२०॥	२३	२४॥
कर्क	·।·	पु.	२३॥	२९॥	२५॥	२२	२५	२६	३०॥	१३	३३	३४	३४	३२॥	२२	२६	२२	१८॥	१८॥
कर्क	१	पु.	३०॥	२४	२७	२४	२१	१९	१३॥	२४	२३	३४	२६	३४	२५	२९	३०	१६॥	२६॥
कर्क	१	आ.	२६	२६	२२॥	१३	१२	२०	२४॥	१५॥	१५॥	३२	३४	३४	२०॥	२१	१४	२१॥	२०॥
सिंह	१	म.	२२	२८॥	३९	१७	१०	१८	२१॥	२२॥	२०॥	२२	२५	२२॥	३६	३६	३२	२८॥	१५॥
सिंह.	१	पू.	२६	२४॥	३२॥	२०	२४	१६	१९॥	२८	२६॥	२९	३३	१९	३६	३६	३४	३०	२१॥
सिंह.	·।·	उ.	१७	३२	३२	२०	२६	२५	२८	२०॥	२०॥	२३॥	३१	३१	३२	३४	३६	३३	१५
कन्या	·।।।·	उ.	१३	३२	१६	३४	३४	३२॥	३१॥	२३॥	२३॥	२०	२८	२२॥	२३॥	३१	३४	३५	३५
कन्या	१	ह.	१३	२०	२१॥	२८	३३	३४	३३	२२॥	२३॥	२०॥	२८॥	२३॥	२४॥	२८	२०	३५	३६
कन्या	·।।·	चि.	१४	७	२०	३१	२८	२०	१९	२६	२१॥	२४॥	१३॥	२७॥	२९॥	१५॥	१४॥	३०	३३
तुला	·।।·	चि.	२३॥	१६	१९॥	२४॥	२१	१३	२०	२७	३५॥	२२	१३	२७	२५	११॥	१७॥	१८॥	३४
तुला	१	स्वा.	३०॥	२१॥	११॥	१२॥	१६॥	२७	३४	३३	३४॥	२२॥	२८	१५	२२॥	२४॥	२५॥	२६॥	३४
तुला	·।।।·	वि.	२२॥	२४॥	२१॥	१६॥	११॥	९॥	३५॥	२७॥	२१	२२॥	२२॥	१९॥	१७॥	११॥	१७॥	१८॥	२५॥
वृश्चिक	·।·	वि.	१७॥	२५॥	१५॥	२०	१५	२३	१३	१३॥	१३॥	२०	२०	११॥	११॥	२३॥	११॥	१८॥	१९
वृश्चिक	१	अ.	२४॥	१९॥	१९॥	२४॥	२८॥	२१॥	११	१६	२०॥	१७	१९	२१	२४	२०	२८	२५	२०
वृश्चिक	१	ज्ये.	१२	१९॥	२४॥	२९॥	२३॥	२३॥	२३॥	१३	३	५	११॥	२१	२६	२३	२०॥	१२	१२
धन	१	मू.	२८	२८	३३	२०	१४	१४	२१	१३	१३	१०॥	१९॥	२६	३२॥	२६॥	१७	१६॥	१३
धन	१	पू.	३४	२६	३४॥	१५	२०	१२	१९	२७	२७	२४॥	१६॥	२८॥	३२॥	३४॥	३२	३२॥	२०
धन.	·।·	उ.	३२	२३	३४	१६	११॥	२८	२४	२७	२७	२४॥	२४॥	१०॥	२३	३२॥	३२॥	१२	१८॥
मकर	·।।।·	उ.	२८	२८॥	१५॥	२६	२३	२१॥	२१॥	२३॥	२२॥	२८	२८	२४	१६	२०॥	२०॥	२७	२७
मकर	१	श्र.	२८	२७	२५	२१	२१	३४	२५	२२॥	२३॥	२८	२८	१५	१३	१८	१९॥	३६	२७
मकर	·।।·	ध.	२१	१२	२६	३१	२८	२०	११	१८	१६॥	२०	१२	२६	२६	१५	१२	१८॥	२०
कुंभ	·।।·	ध.	२१	१२	१६	३१॥	२८	२०	१२	१९	१७॥	१४	१६	२०	२५	११॥	१८॥	३४॥	२९
कुंभ	१	श.	१६	२२	२८	२२॥	२६॥	२८	२०	१२	१२	८॥	१५	२१	२५॥	१९॥	११॥	७॥	१०॥
कुंभ	·।।।·	पू.	१९	२६	२०	३४	३२॥	३२॥	२४॥	१७	१७	१३॥	२१॥	१४	१९॥	२५॥	१६॥	१२॥	१५
मीन	·।·	पू.	२१॥	२९॥	२३॥	३२॥	२७	२७	२७	२७	१८	१७	३६	७॥	३०	२३	१४	१८॥	१८
मीन	१	उ.	३१॥	२३॥	३१॥	३१॥	२७	१९	१९	२७	२८	२६	१९	२०	३०	१५॥	२५	२९	२८
मीन	१	रे.	३२	३०	१८॥	१८॥	१८	२७	२७	२६॥	२६	२४॥	२३	१३	१०॥	२२	२२	२६	२७

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

क.	नृ.	तृ.	तृ.	वृ.	वृ.	वृ.	ध.	ध.	ध.	म.	म.	म.	क्र.	क्र.	कु.	मी.	मी.	मी.
०॥.	०॥.	१	०॥.	०	१	१	१	१	०।	०॥.	१	०॥.	०॥.	१	०॥.	०.	१	१
चि.	चि.	स्वा	वि	वि	अ.	ज्ये.	मू.	पू.	उ.	उ.	श्र.	ध.	श.	श.	पू.	पू.	उ.	रे.
२४	२२॥	२९	२३॥	१९॥	२४	१५	२१	३३	१९	३६	२७	२५	२१	१६	१०	२२	३१	३४
५	१२॥	१९॥	२३॥	१८॥	३५॥	१९॥	३४	२६	३४	२९॥	२७॥	११	१५	२७	२५	३०॥	२०	३२
१९॥	२७॥	१५॥	१९॥	१६॥	१८॥	२५॥	३३॥	२८	२०	१६॥	१४	२५	२६	२७	२०	२५।	२६॥	१०॥
२८	२०	७॥	१२॥	२०॥	१६॥	३०॥	२३॥	१६॥	९॥	१४	२०॥	३१॥	३०॥	२०॥	२१॥	२१॥	२१॥	१४
३४	१७	१३॥	६॥	१४	२१॥	२४॥	१५	३१	१२॥	१८	२६	३४॥	३३	३५।	३१	२८	२८	३०
२५	१०	२३	१५॥	२३॥	२१॥	१५॥	१६	१२	१८	२३॥	३४	२१	२०	२८	२०॥	२७	२९	२८
२९	२५	३४	३४॥	२४	११	१५॥	२४	१९	१८	२१॥	२६	१३	१४	३९	२४॥	२७	२९	२८
३४	३४	३४	३४	२१॥	१७	४	१४	२८	२८	२४॥	२९	१९	२०	१३	८	२१॥	२८	२८
२७॥	२७॥	३४	२९	१६॥	२१॥	७	१५	२७	२७	२३॥	२४॥	१८	१९॥	१४	१०	१९	२८	२८
२२॥	२२	२८	२३	२१	२६	११॥	१०॥	२३॥	२६	२६	२७	२५	१४	८॥	११॥	२०	३६	२५
५२॥	१२	२७	२२॥	२१	१८	११	१९॥	१४॥	२२॥	२६	२७	२३	६	१५	१०॥	८	१८	२७
२७	२७	६	१०	३६॥	२०	२६	२५	१७॥	९॥	२३	२३	२६	९	२०	१३	२४	३५	१३
२८॥	२४॥	१०	१९	३२॥	२४॥	३२	३२॥	१६॥	१७॥	४	४	९	२४॥	२४॥	१८	१८	१८	११॥
१४	१६॥	१४॥	१८॥	२४॥	२२॥	३०॥	३२॥	२४॥	३२॥	१९॥	१८	५	९॥	१८॥	२४॥	२४	१६	२४
१९॥	१५॥	२५॥	१५	२१॥	३०॥	२२॥	२३	३२॥	३२।	१९॥	१९	१२	१६॥	१०॥	१०॥	१५	२६	२४
३०	२०॥	३०॥	२२॥	१८	२७	१२	२४	२१॥	२९॥	२६	२६	१८	१६	९॥	११	१८	३०	२८
३३	२६	३२।	२४॥	२०	२७	१४	१५	२७	२६॥	२५	२६	३१	१७	१०॥	१३	१८	३०	२८
३४	३३	२६	३०॥	२७	११	२५	२६	१२	१२	१०॥	१९	१८	१९	२२॥	१७	२०	१२	२२
३४	३४	३२॥	३२॥	२२।	७॥	११॥	२१	१२	३२	२६॥	२६	२४	२४	३०॥	२६	२४	५	५
२८	३३	३६	३३	२३	२०	२७॥	२३	२७	१८	२३।	२४	२७	२०	२८	३४	२०	२१	१३
३२॥	३२॥	३३	३४	२६	१७॥	२१॥	२६	२०	१४	१८॥	१६॥	३०	३०	३१	२०	१५।	१६॥	१७
२६	११॥	२६॥	२६	३२	३३	३१॥	२८॥	२३	१७॥	१३	१५॥	२४।	२४॥	२५॥	११॥	२६	१५	१९॥
१२	८	३२	१८	३३	२६	३६	२४॥	३२॥	३०॥	२६	३१	१६	११	२१	२४॥	३१	२५	३४
२५	२१॥	१६॥	२१॥	२१॥	३६	३६	२२	२५	२५	२१॥	२५॥	२९॥	२४॥	२६	१०॥	१६॥	२८	२८
२७	२७	२६	२७	३२॥	१९॥	२४	३४	३५	३२॥	२१॥	२६॥	३०॥	२७	२०॥	१३॥	१६	२६	२८
१२	१८	१९	२६	३१॥	१४॥	३२॥	३४	३६	३४	२४	३४	१६॥	१३॥	२३॥	२४	३०॥	१७॥	३२।
२१	२७	१९	१९	२३॥	३२	३२॥	३२॥	२४	३६	३५	२६	३२।	३३	२२।	२१॥	३२	३२	२४
१७	३१॥	३१॥	२९।	१९॥	२७॥	२३	२८॥	२५	३३	३६	३४	३२	३१॥	१८॥	३१॥	३०	३०	२२
२०	२७	२२।	१७॥	१४	२७	२३	१९॥	२८	२७	३४	३६	३३	३६	१९॥	१९॥	२७	२९॥	३२॥
१७	२४	२९	३०॥	२७	१३	१४	२४॥	९॥	१८	३२	२७	३४	३२	२५	२५	२४	१४	२२।
१७	२५	२७	३१॥	२६	१२	२६	१२॥	१५॥	२४	२६॥	१९	३१	३४	३३	३२	१७॥	८	१५॥
२५	३३	२८	२३	२७	२१	१९	३२॥	२४	२४	२६	१८॥	२५	३३॥	३६	३२	१८	१०॥	२७॥
१७॥	३१	३३	३३	२७॥	२७॥	३४	१६॥	१९॥	३०॥	३२।	२३॥	१८॥	३२।	३३	३४	३४	३४	२९॥
२०	१३	२०॥	१७॥	२७	२६	२३	२३॥	३०॥	३१	२९॥	३०॥	३१	१७।	१०	१७	३४	३३	३०॥
१५	५	२१	१३॥	२६	१९	३४	३१॥	२३॥	३१॥	२९॥	२१॥	२२	८॥	१७।	२०	३३	३६	३४
२२	१८	१२	८	१८।	२७	२९	२८	३०	३२।	२०॥	२३॥	१९॥	२५॥	१७॥	२०॥	३०॥	३४	३४

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

वर्गज्ञानमाह.

अकचटतपयशवर्गाःखगेशमार्जारसिंहशूनां
सर्पारवुमृगावीणांनिजपंचमवैरिणामष्टौ १

टी०-वर्ग मैत्रीकेवर्गस्वामीज्ञानकेवास्ते चक्रपरसेदेखनाश्रौ रगरुडसे पंचमसर्पतो इसमेमहावैर कह्या सो अशुभ.

अ	क	च	ट	त	प	य	श	वर्गाः
१६	५	५	५	५	५	४	४	०
गरुड	मार्जार	सिंह	कूकुर	सर्प.	चूहा	हरिण	हरिण	०

दुष्टकूटदान.

षडाष्टमे गोमिश्रंनंप्रदद्यात्कांस्यंसरूप्यंनवपंच
मेत्र नाड्यांस्कधन्वान्नस्कवर्णवस्त्रंद्विर्द्वादशे
ब्राम्हणतर्पणंच १ छ छ

टी०-बहुतसंकटग्रासहोयतोषडाष्टकमेंदोगोदानकरनाशुभ. नवपंचमहोयतोकांस्यपात्रऔरचांदीदानदेना. एकनाडीहोयतोधनूऔर अन्नसुवर्णवस्त्रदान देना. द्विर्द्वादशहोयतोब्राम्हणभोजनकरना कूटकानाशहोय. विवाहकेनक्षत्र.

मूलमैत्रकरस्वातीमघापौष्णध्रुवेंदवः एतैर्न्नि
र्दोषभैस्त्रीणांविवाहःशुभदःस्मृतः १ छ

टी०-मूल, अनुराधा, हस्त, स्वाती, मघा, रेवती, रोहिणी, ३ उत्तरा, मृगयह नक्षत्रदोषसे वर्जित होयतो विवाह करना स्त्री को शुभ.

एकविंशतिमहादोष.

पंचांगशुद्धिरहितोदोषस्त्वाद्यःप्रकीर्तितः उदयास्त
शुद्धिरहितोद्वितीयःसूर्यसंक्रमः १ तृतीयःपापषड्
गाभृगुःषष्ठःकुजोष्टमः गंडांतकर्तरीरिःफषडष्टे
दुष्टसंग्रहः २ द्वयत्यारिष्टमूलनराशौविषघटीतथा
दुर्मुहूर्त्तोवारदोषारक्षर्क्षरिक्तसमाह्वयः ३ ग्रहणो

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

त्यातभंकूरविद्धर्क्षैक्रूरसंयुतं कुनवांशामहापा
तोवैधृतिश्चैकविंशतिः १ ७ ७

टी०-विवाहमें २१महादोषका त्याग करना-पंचागशुद्धिरहितदोष १, उदयास्तशुद्धिरहित २, सूर्यसंक्रांति ३, पापग्रहवर्ग ४, षष्ठशुक्र ५, अष्टममंगल ६, गंडांत ७, कर्त्तरि ८, चंद्रमा १२।८।६।१ स्त्रीपुरुषकाअष्टम-लग्न १०, लग्नमें चंद्रमापापग्रह नहोय ११, विषघटि १२, दुष्टमुहूर्त १३, वारदोष १४, लत्ता १५, ग्रहणनक्षत्र १६, उत्पातनक्षत्र १७, पापग्रहवेध १८, पापग्रहयुक्त १९, पापग्रहांश २०, महापात २१-और वैधृतियोगका त्याग करना.

दोषलक्षणमाह.

लग्नाच्चंद्राद्व्ययद्विस्थेपापरंध्रेयदातदा कर्त्तरी
वर्जनीयासाविवाहोपनयादिषु १ नहिकर्त्तरि-
जोदोषःसौम्ययोर्यदिजायते शुभग्रहयुतलग्नं
क्रूरयोर्नास्तिकर्त्तरि २ ७ ७ ७

टी०-लग्नवाचंद्रमासे १२ स्थानमें २ दोस्थानमें पापग्रह होयतो कर्त्तरी होतीहै, सोविवाह-और जनेऊ इसमेंत्याग करना शुभ-शुभग्रहकी कर्त्तरी होयतो दोष नहीं परंतु लग्नमें शुभग्रह होय-और क्रूर ग्रहकी भी कर्त्तरी होय तो दोष नहीं.

अष्टमलग्न.

वरवध्वोर्बटोश्चापिजन्मराशेश्चलग्नतः त्याज्य
मष्टमलग्नंस्याद्विवाहव्रतबंधयोः १ ७

टी०-स्त्री-पुरुष-और बटु इनके जन्मराशीसे अथवा जन्मलग्नसे अष्टमलग्नका विवाह, जनेऊ इसमें त्याग करना.

दुष्टमुहूर्त.

तिथ्यंशोदिनमानस्यरात्रिमानस्यचैवहि मुहू-
र्तःकथितस्तेषुदुर्मुहूर्तेशुभेत्यजेत् १

टी०-दिनका-और रात्रीका १५ वा भाग दुष्टमुहूर्त होतेहै सो त्याग

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

करना. यामार्द्ध.

सूर्याद्यामदलंदिवैवनिगमाद्यश्वीषुनागत्रिषड्संख्या
कंकुलिकंदिवेंद्ररविदिङ्नागर्तुवेदद्विक व्येकृतंनि-
शिषोडशांशमपरेतिथ्यंशमुज्झंतितैः कालकंटक
मैनिघंटममरेज्यज्ञास्फुजिद्ध्वः क्रमात् १

टी०- दिनमें रविवारसे अर्द्धयामके अंक है सो निवृत्ती और प्रवृत्तीके अंकभी कोष्टकमें है. यथाक्रमसें देखकर शुभकर्ममें त्याग करना. दिनमें रविवारसे दिनके १६ वे भागमें कुलिक अंक चक्रमें देखना. शुभकर्ममें त्याग करना. कोई आचार्य कहते है की, रात्रीमें १६ वा भाग कुलिकनहीं १५ वा है सो त्याग करना. गुरुवारसे कालदोष, बुधवारसे कंटकयोग, शुक्रवारसे निघंटयोग यह यथाक्रमसे चक्रमें देखना. शुभकर्ममें त्याग करना. एक दिनमें आठ अर्द्धयाम, ८ कुलिकादि १६ ऐसे वारपरत्वेंसे जानना परंतु जो वारपरत्वेसे त्याग सो चक्रमे देखना.

यामार्द्धचक्रम्.

वार.	यामार्धघटिका.			कुलिक	काल	कंटक	ऐनिघट
नाम	संख्या	प्रवृत्ति	निवृत्ति	घ० २	घ० २	घ० २	घ० २
रवि.	४	१२	१६	१४	८	६	१०
चंद्र	७	२४	२८	१२	६	४	८
मंगल	२	४	८	१०	४	२	६
बुध	५	१६	२०	८	२	१४	४
गुरु	८	२८	३२	६	१४	१२	२
शुक्र	३	८	१२	४	१२	१०	१४
शनि	६	२०	२४	२	१०	८	१२

लत्तादोष.

ज्ञराहुपूर्णेंदुसिताःस्वपृष्ठेभसप्त ७ गो १ जाति २२
शरैर्मितंहि सल्लत्तयंतेऽर्कशनीज्यभौमसूर्या
१२ष्ट ८ त्तर्का ६ ग्निमितंपुरस्तात् १ ७

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

टी०-बुध जीस नक्षत्रपर होय उस नक्षत्रसे पीछे सप्तनक्षत्रपर लत्ता दोष, राहु जिस नक्षत्रपर होय उस्से पिछे नवमनक्षत्र लत्ता, पूर्ण चंद्रमा जिस नक्षत्रपर होय उस्से पीछे २२ वे नक्षत्रपर लत्ता, शुक्र जिस नक्षत्रपर होय उस्से पीछे पांचवे नक्षत्रपर लत्ता यह पृष्ठलत्ता; आगे लग्नलत्ता. सूर्य जीस नक्षत्रपर होय उस नक्षत्रसे आग १२ वे नक्षत्र लत्तादोष, शनि जिस नक्षत्रपर होय उस्से आठवे नक्षत्रपर लत्ता. गुरु जिस नक्षत्रपर होय उस्से ६ नक्षत्रपर लत्ता. मंगल जिस नक्षत्रपर होय उस्से ३ नक्षत्रपर लत्ता. यह अग्रलत्ता जानना और शुभकर्ममें त्यागकरना तो शुभ.

वेधमाह.

चक्रेसप्तशलाकारव्यभ्वेधःसर्वकर्मसु,
त्याज्यएवविवाहेचतस्मैवपंचशरेवजे १

टी०-विवाहमें सप्तशलाका और पंचशलाका देखना परंतु पंचशलाका सो जीवबंधनमें कथित है और सप्तशलाका सब कर्ममें कथित है. परंतु विवाहमें वेध अवश्य देखना.

पंचशलाका.

रेखाश्चोर्ध्वाःपंचतिर्यक्पंचहरेरेखकोणयोर
त्रचक्रे नाड्योन्यस्येच्छंभुकोणेहितीयेरेखा
यांभान्यग्निभात्साभिजिद्धि १

टी०-पंचशलाका शुद्धि ५ रेखा करना उसपर आडी ५ रेखा करना और कोनमे दोदो रेखा तीरछी करना परंतु ईशान्यके कोनमें दूसरीरेखासे कृत्तिकाआदि लेके अठ्ठाईस नक्षत्रका न्यास करना.

सप्तशलाका.

सप्तसप्तविनिपात्यरेखिकास्तिर्यगूर्ध्वमथकृत्ति
कादिकं लेखयेदभिजितासमन्वितंचैकरेखवग
मनेनविध्यते १

टी०सप्तशलाकाचक्र ७ रेखासूधी करना और उसपर ७ रेखा

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

आड़ी करना और अभिजितसहित नक्षत्रोंका न्यास करना. परंतु १ रेखामें होय तो वेध होता है. जैसा एक ग्रह रोहिणीपरहै और दूसरा ग्रह अभिजितपर होय तो वेध होता है. सो वेध शुभग्रहका होय तो शुभ और अशुभग्रहका होय तो अशुभ. परंतु वेधित जो होय तो दोनोंभी कार्यको त्यागना उचित है.

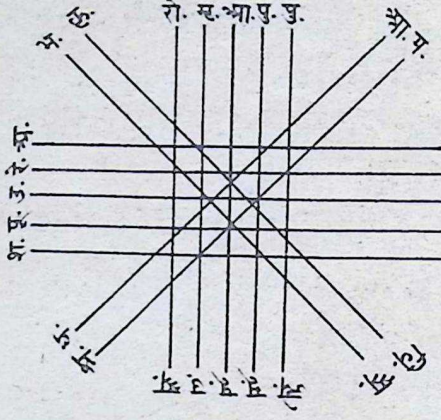

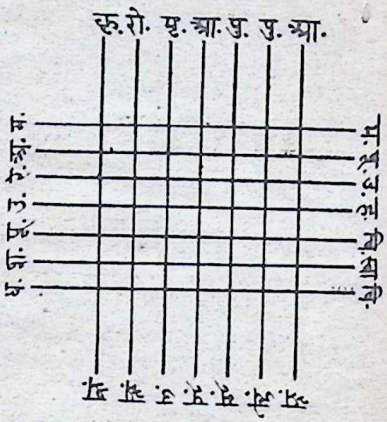

वेधनक्षत्रमाह.

श्रुत्यग्निभेभिजिदाम्ध्यवैश्यद्वर्क्षेबुरुद्रभे मूलादित्येचपूष्येद्रेमैत्राश्लेषेमघांतके १ दस्त्रभाग्यर्क्षमांत्येचहस्ताहिर्बुध्न्यभेतथा चित्राजचरणेस्वातीवारुणेचपरस्परं २ द्विदैवेभासभेतद्वेधः सप्तशलाकजः त्याज्यःपापाद्भवोयत्नाद्व्रतबंधादिकर्मसु ३ ६ ६ ६

दी०-वेध जाननेका प्रकार श्रवण कृत्तिका इस्का वेध इसी प्रकारसे अभिजित रोहिणी, उत्तराषाढा मृग, पूर्वाषाढा आर्द्रा, मूल पुनर्वसु, पुष्य ज्येष्ठा. अनुराधा आश्लेषा, मघा भरणी, अश्विनी पूभा., उभा. रेवती. हस्त उत्तराफा., चित्रा पूर्वाफा., स्वाती शततारका, विशाखा धनिष्ठा. ऐसा दो दो नक्षत्रमें वेध जानना. सो मौंजीविवाहादीमें अवश्य त्याग करना.

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

क्रांतिसाम्य.

युग्मेधनुःकर्किरलोचयुक्तेकन्याचमीनेवृषनक्रयुक्ते
मेषेचसिंहेचघटेतुलायांक्रांतेचसाम्यंशशिसूर्ययोगे १

टी०-मिथुन धनऐसे दो राशीपर चंद्रसूर्य होयतो क्रांतिसाम्य हो-ताहै. इसीरीतसे कर्क वृश्चिक, कन्या मीन, वृषभ मकर, मेष सिं-ह, कुंभ तुला यह क्रांतिसाम्य शुभकर्ममें त्याग करना.

चक्रक्रम.

उर्ध्वरेखात्रयंचैवतिर्यग्रेखात्रयंतथा क्रांतिसा
म्यंबुधैर्ज्ञेयंमध्येमीनंतुयोजयेत् १

टी०-क्रांतिसाम्यका प्रकार ३रेखा सूधी और ३रेखा आडीक रना और मध्यकेरेखापर मीनलग्नसे न्यास करना. ऐसा बारह राशीमें सूर्यचंद्रका क्रांतिसाम्य देखना.

जामित्रदोष.

लग्नेंदोर्नास्तगःपापस्तत्तुल्यांशेपदिस्थितः त
दाजामित्रदोषःस्यान्नहिन्यूनाधिकांशके १
क्रूरोवायदिवासौम्योलग्नाच्चंद्राच्चखेचरः एको
पियदिजामित्रेसमांशेचतदाभवेत २ जामित्रंन
प्रशंसंतिगर्गकश्यपदेवलाः आयषष्ठतृतीये
षुधनधान्यप्रदोरविः ३ ६ ८

टी०-लग्नसे और चंद्रमासे पापग्रह बराबर अंशको होयतो स-प्तममें जामित्रदोष होता है. अंश अधिकअथवा कमती होयतो जामित्रदोष नहीं. अथवा पापग्रह वा शुभग्रह कोईभी लग्नसेवा-चंद्रमासे एकभी सप्तमस्थानमें समानांश होयतो जामित्रदोष हो-ताहै. ऐसा दुष्ट जामित्रदोष होयतो विवाह करना नहीं ऐसा गर्ग, कश्यप और देवल यह आचार्य कहते है. और सूर्य जो ११।६।३ ये स्थानमें है तो शुभ होता है.

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

चरत्रयदोष.

कर्कलग्नेऽथवामेषेघंटांशोयदिदीयते तुला
यायांमकरेचंद्रेवैधव्यंजायतेध्रुवम् १

टी०- कर्क अथवा मेषलग्नमें कुंभांशजो होयतो, तुला भ्रोर मकरमें चंद्रमा होयतो, यह योग वैधव्यकारक है इस्का त्यागकरना.

तिथिपरत्वेलग्नवर्ज्य.

प्रतिपदितुलामकरोसिंहमकरोतृतीयायां क
न्यामिथुनेपंचम्यांसप्तम्यांचैवधनुःकर्कौ १ न
वम्यांकर्कसिंहौएकादश्यांतुधनुर्मीनौ त्रयो
दश्यांवृषभमीनोशून्यंलग्नानितिथियोगात् २

टी०-प्रतिपदाके दिन तुला भ्रोर मकरलग्न शून्य होता है. तृतीयाके दिन सिंह भ्रोर मकर, शू० पंचमीके दिन कन्या भ्रोर मिथुन शू०, सप्तमीको धन भ्रोर कर्क शू० नवमीको कर्क भ्रोर सिंह शू० एकादशीको धन भ्रोर मीन शून्य. त्रयोदशीको वृष भ्रोर मीन शू० यह लग्नतिथियोगसे शून्य होते है सो त्याग करना.

दोषनिवारणम्.

द्यूनंविनाकेंद्रगतोमरेज्यस्त्रिकोणगोवापि
हिलक्षमेकम् निहंतिदोषांस्त्रिशतंभृगुश्च
शतंबुधोवापिहिदृश्यमूर्तिः १

टी०-गुरु केंद्रमें भ्रोर त्रिकोणमें १।४।१०।९।५ सप्तमस्थानवर्जी तहोयतो १००००० दोषका नाशकरता है. भ्रोर शुक्र ३०० दोषका नाश करता है भ्रोर बुध १०० दोषका नाश करता है.

लग्नमुहूर्तराश्युदय.

कुदस्त्रदस्त्रागुणबाणदस्त्रावेदाभ्रयामयमदेव
रामाः शराब्धिरामाशररामरामामेषाक्रमादु
क्तमतस्तुकन्यायाः १

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

टी०-यह राशीके उदयचक्रमें देखना परंतु फलात्मकराशी का मान जानना. उसके फलसंस्थाका क्रमः-

मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.	तू.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.
पल २३८	२६७	३१०	३३६	३३१	३१८	३३१	३१८	३३६	३१०	२६७	२३८

मेषादिवारलग्नका प्रमाण, घडी, और पल इसका क्रम चक्रमें देखना.

लग्न.	मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.	तू.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.
घटि	३	४	५	५	५	५	५	५	५	५	४	३
पळ	५८	२७	१०	३६	३१	१८	१८	३१	३६	१०	२७	२८

लग्नभोगकाल.

मीनाजेसप्तषट्पंचपलानिविपलानितु गोकुंभोष्टौ
युगशरादिग्विरातिनृयुक्सृगे १ ककंचापेभवाःसू
र्याःसिंहात्स्योरुद्रहृग्मिताःतुलांगेदिक्चषट्भी
र्णिलग्नेष्वेकांशसंमितिः २

टी०-जिसराशीपर सूर्य रहताहै सो लग्न उदयकालमें एक दिन कितनाभोग करताहै यह चक्रपरसे मालूम होगा.

भोगचक्रम्.

लग्न.	मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.	तू.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.
घटि	७	८	१०	११	११	१०	१०	११	११	१०	८	७
पल	५६	५४	२०	१२	२	३६	३६	२	१२	२०	५४	५६

उदयास्तलग्न.

यस्मिन्राशौयदासूर्यस्तल्लग्नमुदयेभवेत् त
स्मात्सप्तमराशिस्तुअस्तलग्नंतदुच्यते १

टी०-जिस राशीपर सूर्य रहे सो उदयलग्न, जिसलग्नपर अस्त हो यसो सूर्यसे सप्तमस्थान ऐसा उदय और अस्त जानना.

नवांशमाह वृषअ्वमिथुनंकन्यातूलाधन्वीऊष

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

स्तथा एतेशुभानवांशास्तुततोन्येकुनवांशकाः १

टी०- वृष. मिथुन. कन्या. तुला. धन. मीन इस लग्नोंके नवमांश विवाहलग्नमें १२ लग्नको होय तो शुभ. इसे दूसरे लग्न अशुभ. मेषादि १२ लग्न और अंश ७ कोष्टकमें है उस्में जिस अंशको वर्गशुद्धि आवे उस अंशको नीचे कोष्टकमें जो लग्न होय सो लेना. और अंशघडी उस्को अयनांश देना और अपना भुक्ताकाल जानना. कोष्टकेमें चार अंक है उस्का नाम राशि. अंश. कला. विकला जानना. राशीकी संज्ञा शून्य होय तो मेष और एक होय तो वृषभ. इस प्रकारसे वारों राशीका ज्ञान कर लेना.

राशीलं०	वृषभ.	मिथु.	कर्क.	कन्या	तूळ.	धन.	मीन.
वृषभ.	० ३ २०	० ६ ४०	११ १० ०	० १६ ४०	० २० ०	२ २४ ४०	० ० ० ०
मिथुन.	१ १३ २०	१ १६ ४०	१ २० ०	१ २६ ४०	० ० ० ०	० ० ० ०	० ० ० ०
मिथुन.	२ २३ २०	२ २६ ४०	० ० ० ०	० ० ० ०	२ ० ० ०	२ ६ ४०	२ १६ ४०
कर्क.	० ० ० ०	० ० ० ०	३ ० २ ०	३ ६ ४०	३ १० ०	३ १६ ४०	३ २६ ४०
सिंह.	४ ३ २०	४ ६ ४०	४ १० ०	४ १६ ४०	४ २० ०	२ २६ ४०	० ० ० ०
कन्या	५ १३ २०	५ १६ ४०	५ २० ०	५ १६ ४०	० ० ० ०	० ० ० ०	० ० ० ०
तूला.	६ २३ २०	६ २६ ४०	६ ० ०	६ ० ०	६ ० ०	६ ६ ४०	१ १६ ४०
वृश्चिक	० ० ० ०	० ० ० ०	७ ० ० ०	७ ६ ४०	७ १० ०	७ १६ ४०	७ २६ ४०
धन.	४ ३ २०	८ ६ ४०	८ १० ०	८ १६ ४०	८ २० ०	८ २६ ४०	० ० ० ०
मकर.	९ १३ २०	९ १६ ४०	९ २० ०	९ २६ ४०	० ० ० ०	० ० ० ०	० ० ० ०
कुंभ.	१० २३ ०	१० २६ ४०	० ० ० ०	० ० ० ०	१० ० ० ०	१० ६ ४०	१० १६ ४०
मीन.	० ० ० ०	० ० ० ०	११ ० ० ०	११ ६ ४०	११ २० ०	११ १६ ४०	११ २६ ४०

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

इष्टकालीन स्पष्टसूर्य बनावनेका क्रम.

गतगम्यदिनाहतद्युभुक्तः खरसाप्तांशवियुग्य
तो ग्रहः स्यात् १ छ छ छ

टी०-पंचागमें ग्रहके कोष्टकमें आठदिनके अवधीका सूर्य है. परंतु पौर्णिमाका सूर्य स्पष्ट है सो जिसदिनका अपनेको करना होय वह दिन गिनके उस्से सूर्यकी गति कोष्टकमेंकी गुण देना और ६० से भागना. जो अंक आवे सो अंश घडीपल जानना. यह आगेका सूर्य जाननेका प्रकार. अब पीछेका सूर्य बनावना. कोष्टकमें पौर्णिमाका सूर्य होय तो अपनेको पीछे ल्यावना होय तो पंचांगस्थ सूर्यमें अंश घडीपल कमती करना, और आगेका सूर्य बनावना होय तो वह फल, अंश घडीपल पंचागस्थ सूर्यमे मिलावना, तो तत्काल सूर्य होता है. उदाहरण:—

भुक्तदिनका उदाहरण.

शके १७९० माघशुक्ल ९ शुक्रवारके दिन सूर्य कितना सोल्यावनेका प्रकार. चालन ऋण ६ दिन.

सूर्यकी गति.

घटि	पल.
६९	५ गतिगुण्य.
६	६ गुणक ६ दिन ९ से पौर्णिमाके अंतरसे गुणना.
३३६	३० गुणनफल. भा. ६०
	३६६ (६ अं.

गुण्य ६ बाकीपल.
गुणक ६०
३६०
युक्त ३०
भाग. ६०) ३९० (६ घटि.
३६०

स्पष्टसूर्यका उत्तर.

	रा.	अं.	क.	वि.
पंचांगस्थ रवि.	९	१६	२०	३५
चालन ऋण अंशात्मक		६	६	३०
शेषसं.	९	१०	१४	५

यह स्पष्ट सूर्य जानना.

३० बाकी.
६०
भा. ६०) १८०० (३० पल.
१८००
०० बाकी.

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अभुक्तदिनकाउदाहरण.

शके १७९० माघकृ० ६ मंगलके दिनका स्पष्ट सूर्य बनावनेकीरीति. पौर्णिमाकास्पष्टसूर्यराशी ९ अंश १६ कला २० विकला ३५ अभुक्तदिन ६ और सूर्यकी गति ६१।५ यह गतीको ६ दिनसे गुणदेना सो गुणनफल ३६६।३० इस्को ६० से भाग लेना जो लब्धी आवे सो अंश ६ शेष ६० से गुणदेना फिर नीचेका अंक जोडदेना और ६० से भाग लेना. जो लब्धी आवे सो कला. ६ शेष ३० इस्को ६० से गुणदेना सो अंक १८०० इसको ६० से भाग देना. जो लब्धी आवे सो विकला. ३० यह फल पौर्णिमाके सूर्य में जोडदेना. सो सूर्यराशी ९ अंश २२ कला ३२ विकला ३१ इस रीतीसे अभुक्त दिनका फल ल्यावना.

अयनांशबनावनेकीरीति.

शाकोवेदाब्धिवेदोनः षष्टिभक्तोयनांशकाः
देयास्तेतुरवौस्पष्टेचरलग्नादिसिद्धये १ ६.

टी०- अयनांश बनावनेका प्रकार. वर्त्तमानशकमें ४४४ कम करना और ६० से भाग देनाजो अंक आवे सो अयनांश जानना. परवह फल स्पष्ट सूर्यमें देनातो चर स्थिर. द्विस्वभाव यह लग्न सिद्धी होताहै.

शके १७९० इसमें ४४४ घटाव ना.
१३४६

उदाहरण.

भा. ६०) १३४६ (२२ अं.
१२०
१४६
१२०
गु. २६ बा.
६० गुणा
६०) १५६० (२६ कला
१२०
३६०

धनुर्चालग्न.

६।११।४।६
९ २२ ३२ ३१ स्पष्ट.
२२ २६ अयनांश
१० १४ ५८ ३१
यह सायनसूर्य जानना.

लग्नसंभुक्तकालबनावना.

स्फुटसायनभागकभोग्यांशफलसंमितः सा

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

यनांशास्तनोश्चापिभुक्तांशफलसंयुतः १ मध्य
लग्नोदयैर्युक्तषष्टिर्हृद्दिष्टनाडिकाः २

टी०-सायनसूर्यसेभोग्यश्चोर सायनलग्नसे भुक्तकालबनाव-नेकाप्रकार. दोनोंका योग करना. सूर्यश्चोर लग्न इसके बीचका उ-दययुक्त करना श्चोर ६० से भागलेनातो लग्नसे सूर्यकाभोग्यका स्पष्ट होताहै. उदाहरण.

शके १७९० माघकृष्ण ६ भौमकेदिनकासूर्य रा. १ अं. २२ क. ३२ विकला ३१ अयनांश ४४४ सूर्यके अंशादिकमें मिलावना तोसा-यनसूर्य होताहै. रा. १० कला ५८ अं. १४ वि. ३१ तोयह कुंभकासूर्य इस्का अंशादिक ३० में कमती करना तो कुंभउदय है. इसवास्ते कुं-भकेउदयसे भोग्यांश गुणदेना ३० से भागलेनातो सूर्यका भोग्य काल होता है. आगे सायनलग्नकी अंश. घडी. पल इस्को आपने उदयसे गुणदेना श्चोर ३० से भागलेनातो लग्नका भुक्तकालहोते है. सोभुक्तश्चोरभोग्य इस्को एकत्र करना श्चोर उदयसे भागलेना. तो इष्टघडीस्पष्ट होतीहै. इसप्रकारसे पहिले सूर्यस्पष्ट सायनसूर्य, लग्न, सायनलग्न, श्चोर इष्टकाल बनावना. इससे शुभाशुभस्पष्ट मालूम होताहै. लग्नका भोग्यकाल पूर्वमें इह सायनलग्नके ऐसी क्रिया करना. तत्काललग्न. ९।२६।१८।६.

सायनलग्नसेभुक्तकालबनावनेकाउदाहरण.

अंश.	कला.	सायनलग्न.
१८	४४	१०।१८।४४।६.
२५३	२५३	विकला
५५ ५४	११३३२	६
१८५ भुक्तकाल.	३६	२५३ उदय.
३०) ४७३१ (१५८	६०) ११५५७ (१८५	१५१८
३०	६०	१२०
१७३१	५१५७	३१८
१५०	४८०	३००
२३१	३५७	१८.
२१०	३०	
२१	५७.	
	२०	

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भोग्यकाल और भुक्तकाल इस्का एकत्र योग करना और ६०से भाग लेना तो इष्टकाल होता है.

उदाहरण.

भोग्यकाल. दोनोंका योग. भुक्तकाल.

१५२ ६०) ३१० (५ १५८

३००

बाकी. १० गुण्य.

६० गुणक

६०) ६०० (१० उत्तर इष्टघटिका.

६००

१००

घ. ५ ५. १०

सूर्य और लग्न एकराशी होय तो इष्टघटी.

यदितनुदिननाथावेकराशौतदंशांतरहतउदय-
स्यातखाग्निहृत्विष्टकालः १

टी०- सूर्य और लग्न एकराशी होय तो दोनोंके अंशका अंतर करना और उसीराशीके उदयसे गुण देकर ३०से भाग लेना. जो आवे सो इष्टकाल जानना. रात्रीका लग्न अथवा इष्टकाल बना-वना होय तो सूर्यकेराशीमें ६ मिलावना तो रात्रीका इष्ट होता है.

लग्नशुद्धि देखना.

लग्नेचंद्रखलारिपौशशिसितौसर्वेद्युनेखेबुधो
ऽंत्येगुःसुखगोष्टमाःकुजशुभाःशुक्रस्त्रितिये
शुचे लाभेसवेखगाःशुभाअखिलगास्त्र्यष्टा
रिगास्युःखलाश्चंद्रस्त्र्यंबुधनेश्रियेंशभट्टकेट्स्या
न्मृत्युवेष्टारिगः १ छ छ

टी०- विवाहलग्नमें चंद्रमा और पापग्रह षष्ठस्थानमें चंद्रशुक्र होय, और सप्तमस्थानमें कोई ग्रह न होय, दशमस्थानमें बुध हो-य, १२स्थानमें चंद्रमा होय, ४स्थानमें राहु होय, अष्टमस्थानमें मं-गल होय, वा शुभग्रह तृतीयस्थानमें शुक्र होय ऐसा विवाह-लग्न होय तो अनिष्ट और शोककारक होता है. ११स्थानमें सब

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ग्रह शुभ. पापग्रह तृतीय. अष्टम. षष्ठ यह स्थानमें शुभ और चंद्रमा तृतीय. चतुर्थ. द्वितीय ऐसा विवाहलग्न होयतो शुभलक्ष्मीकारक होताहै. और लग्नकास्वामी. अंशकास्वामी यादे. ष्काणस्वामी यह षष्ठ और अष्टमस्थानमें मृत्युदायक होते है.

पंचभिरिष्टैरिष्टपुष्टमनिष्टैररिष्टमादेश्यं स्था
नादिफलसमृद्धिश्चतुर्भिरपिकथ्यतेयवनैः १

टी०-विवाहलग्नसे ५ग्रह शुभस्थानमें होयतो पुष्टकारक, अशुभ होयतो अरिष्टकारक, और यवनके मतसे चारी ग्रह इ. ष्टकारक जानना. त्रिंशांशादिकथन.

त्रिंशद्भागात्मकंलग्नं होरातस्यार्द्धमुच्यते लग्ना
त्त्रिभागोद्रेष्काणोनवांशोनवमांशकः १ द्वाद
शांशोद्वादशांशस्त्रिंशांशस्त्रिंशदंशकः २

टी०-३० अंशका लग्न, १५ अंशका होरा. लग्नका त्रिभागद्रेष्का ण, लग्नकाजो नवमांशसो नवांश, लग्नकाजो द्वादशांशसो द्वादशांश, और लग्नकाजो त्रिंशांशसो त्रिंशांस जानना.

आदौग्रहदेखना.

यस्यग्रहस्ययोराशीस्तस्यतद्गृहमुच्यते १

टी०-जिसग्रहकी जो राशी उसका वह ग्रह पूर्वजातकमें स्वामीकहा है सोचक्रपरसें स्पष्ट जानना.

राशिस्वामी.

राशी	मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.	तू.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.
ग्रह	मंग	शुक्र	बुध	चंद्र	सूर्य	बुध	शुक्र	मंग.	गुरु	शनि	शनि	गुरु

होराकथन.

होरयोराजराज्ञीतुरवींदूक्रमतःपति समं
राशीतुचंद्रार्कौहोरेशौक्रमतोवदेत् १ ६

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

टी०-विषमराशीमें प्रथमसूर्यका होरा नंतर चंद्रका होरा. समराशीमें प्रथम चंद्र होरा नंतर सूर्य होरा सो चक्रपरसे देखना.

लग्न	मे०	वृ १	मि. २	क. ३	सिं. ४	क. ५	तू. ६	वृ. ७	ध. ८	म. ९	कुं. १०	मी. ११	राशि १२
अंश	रु.	चं.	रु.	चं.	रु.	चं.	रु.	चं.	रु.	चं.	रु.	चं.	१५
अंश	चं.	रु.	चं.	रु.	चं.	रु.	चं.	रु.	चं.	रु.	चं.	रु.	३०

द्रेष्काणकथन.

द्रेष्काणआद्योलग्नस्यद्वितीयःपंचमस्यच द्रेष्काणश्चतृतीयस्तुलग्नांनवमराशिपः १

टी०-द्रेष्काणका प्रकार तो लग्नके ३० अंशप्रथम १० अंशतक प्रथमद्रेष्काण सो होय तो लग्नका स्वामी द्रेष्काणाधिपति होता है. दूसरा द्रेष्काण २० अंशतक होय तो पंचमस्थानका स्वामी द्रेष्काणाधिपति होता है. तीसरा द्रेष्काण ३० अंशतक होय तो नवमस्थानका स्वामी द्रेष्काणाधिपति होता है. परंतु शनि, सूर्य, मंगल इन ग्रहोंका होरा त्याग करना सो चक्रमें यथाक्रमसे देखना.

लग्न.	मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.	तू.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.
१अं.१०	१ मं.	२ शु	३ बु	४ चं	५ रु.	६ बु.	७ शु	८ मं	९ गु.	१० श	११ श.	१२ गु
२अं.२०	५ रु.	६ बु	७ शु	८ मं	९ गु.	१० श	११ श	१२ गु	१ मं.	२ शु	३ गु	४ चं
३अं.३०	९ गु.	१० श	११ श	१२ गु	१ मं	२ शु	३ बु	४ चं	५ रु.	६ बु.	७ शु	८ मं

कुजार्किज्यज्ञशुक्राणांबाणेष्वष्टाद्रिमार्गणाः
भागस्युर्विषमेतुसमराशौविपर्ययात् १

टी०-मंगल, शनि, बृहस्पति, बुध, शुक्र, ग्रह पांच ग्रह विषमराशीमें मंगलसे त्रिंशांश और समराशीमें उलटा शुक्रसे त्रिंशांश जानना. मंगल ५, शनि ५, गुरु ८, बुध ७, शुक्र ५ चक्रमें अंशसहित देखना. आगे विषम और त्रिंशांश स्पष्ट लिखा है.

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

त्रिंशांशचक्रं.

मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.	तू.	वृ.	ध.	म.	कु.	मी.
५ मं.	५ श	५ मं.	५ श	५ मं	५ श	५ मं	५ श	५ मं.	५ श	५ मं.	५ श
५ बु.	७ श	५ बु.	७ श	५ बु	७ श	५ बु	७ श	५ बु	७ श	५ बु	७ श
८ गु	८ क	८ क	८ क	८ क	८ क	८ क	८ क	८ गु.	८ गु	८ गु	८ गु
७ बु.	५ श	७ बु.	५ श	७ बु	५ श	७ बु	५ श	७ बु	५ श	७ बु	५ श
५ श	५ मं	५ श	५ मं	५ श	५ मं	५ श	५ मं	५ श	५ मं	५ श	५ मं

टी०-यह सप्तांशचक्रका सप्तांशमेंप्रयोजनजानना. सप्तांशचक्रम्.

ल.	मे	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.	तू.	वृ.	ध.	म.	कु.	मी.
७	१	८	३	१०	५	१२	७	२	९	४	११	६
३४	२	९	४	११	६	१	८	३	१०	५	१२	७
५३	३	१०	५	१२	७	२	९	४	११	६	१	८
१७	४	११	६	१	८	३	१०	५	१२	७	२	९
२९	५	१२	७	२	९	४	११	६	१	८	३	१०
४५	६	६	१	८	३	१०	५	१२	७	२	९	११
३०	७	२	९	४	११	६	१	८	३	१०	५	१२

द्वादशांशकथनम्.

लग्नस्थद्वादशांशास्तुस्वराशेरेवकीर्तिताः१

टी०-लग्नकाअंश३० उस्केबारसेद्वादशांशउस्काक्रमबारोंरा-शीकास्वामीसोद्वादशांशपतिमंगल,शनिसूर्यहोयतोअंशभ-अपनेराशीसेजोद्वादशसोद्वादशांशपतिजानना. कोष्टकम्.

	मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.	तू.	वृ.	ध.	म.	कु.	मी.
३ ३०	मं १	श्र २	बु ३	चं ४	र ५	बु ६	श्र ७	मं ८	गु ९	श १०	श ११	गु १२
५ ०	श्र २	बु ३	चं ४	र ५	बु ६	श्र ७	मं ८	गु ९	श १०	श ११	गु १२	मं १
७ ३०	बु ३	चं ४	र ५	बु ६	श्र ७	मं ८	गु ९	श १०	श ११	गु १२	मं १	श्र २
१० ०	चं ४	र ५	बु ६	श्र ७	मं ८	गु ९	श १०	श ११	गु १२	मं १	श्र २	बु ३
१२ ३०	र ५	बु ६	श्र ७	मं ८	गु ९	श १०	श ११	गु १२	मं १	श्र २	बु ३	चं ४
१५ ०	बु ६	श्र ७	मं ८	गु ९	श १०	श ११	गु १२	मं १	श्र २	बु ३	चं ४	र ५
१७ ३०	श्र ७	मं ८	गु ९	श १०	श ११	गु १२	मं १	श्र २	बु ३	चं ४	र ५	बु ६
२० ०	मं ८	श्र ९	श १०	श ११	गु १२	मं १	श्र २	बु ३	चं ४	र ५	बु ६	श्र ७
२२ ३०	गु ९	श १०	श ११	गु १२	मं १	श्र २	बु ३	चं ४	र ५	बु ६	श्र ७	मं ८
२५ ०	श १०	श ११	गु १२	मं १	श्र २	बु ३	चं ४	र ५	बु ६	श्र ७	मं ८	गु ९
२७ ३०	श ११	गु १२	मं १	श्र २	बु ३	चं ४	र ५	बु ६	श्र ७	मं ८	गु ९	श १०
३० ०	गु १२	मं १	श्र २	बु ३	चं ४	र ५	बु ६	श्र ७	मं ८	गु ९	श १०	श ११

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

विषमत्रिंशांश.

कुजार्किगुरुविच्छुक्रास्त्रिंशांशपतयः क्रमात्
पंचपंचाष्टशैलेषुभागानांविषमेगृहे १

टी०-यहस्पष्टविषमत्रिंशांश मंगलसेअंश ५।५।८।७।५ सहितजानना.

	मे	मी	सिं	तू	ध	कुं
५ ०	मं	मं	मं	मं	मं	मं
१० ०	श	श	श	श	श	श
१८ ०	गु	गु	गु	गु	गु	गु
२५ ०	बु.	बु.	बु.	बु.	बु	बु
३० ०	शु	शु	शु	शु	शु	शु

समत्रिंशांश.

शुक्रज्ञेज्यार्किभूपुत्रात्रिंशांशपतयःसमे पंचागाष्टेषुपंचानांभागानांकथिताबुधैः १

टी०-यहस्पष्ट समत्रिंशांशशुक्रसेअंश ५।७।८।५।५सहित जानना. सो आगेलिखेकोष्टकपरसेस्पष्ट मालूमहोवेगा.

सप्तत्रिंशांशकोष्टकम्.

	वृ.	क	क	वृ.	म	मी
५ ०	शु	शु	शु	शु	शु	शु
१२ ०	बु.	बु.	बु	बु	बु	बु
२० ०	गु	गु	गु	गु	गु	गु
२५ ०	श	श	श	श	श	श
३० ०	मं	मं	मं	मं	मं	मं

षड्वर्ग.

ग्रहहोराचद्रेष्काणोनवांशो द्वादशांशकः त्रिंशांशश्चेतिषड्वर्गास्तेसौम्यग्रहजाः शुभाः १

टी०-लग्नहोराद्रेष्काणनवमांश द्वादशांश त्रिंशांशयहउक्तांशषड्वर्गजानना.सो शुभग्रहकाशुभ. औरअशुभग्रहकाअशुभ.

लग्न	होरा	द्रेष्का.	नवां	द्वाद	त्रिंशां
वर्ग	वर्ग	वर्ग	वर्ग	वर्ग	वर्ग

उक्तांशम्.

मेषेषष्ठघटौवृषेत्रिदृगिनांद्वंद्वेद्रिगोर्काग्नयः कीटेब्ध्यंगनवाद्रयोर्कभवनेगाश्वास्त्रियांत्र्यर्कषट् जूकेर्काद्रिखगाअलौगवगषट्चापेत्रिषट्गोद्रयोनक्रेंशास्त्र्यरुणांघटेऊषवृषोमीनेद्रिगोषट्शुभाः १

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

टी०-यह उक्तांशका ज्ञान चक्रपरसे मालूम करलेना.

रा. उ.	मे.	वृ.	मि.	क.	सिं	क	तू	वृ	ध	म	कुं	मी
अंश	६	२	७	४	६	३	१२	९	३	३	१२	७
०००	७	३	९	६	७	१२	७	७	६	१२	२	९
०००	०	१२	१२	९	०	६	९	६	९	०	०	६
०००	०	०	३	७	०	०	०	०	०	०	०	०

वर्गविचार.

षड्वर्गपंचवर्गंवाचतुर्वर्गमथापिवा कैश्चित्त्रिव
र्गंसेत्प्रोक्तं द्वेकवर्गंतनुंत्यजेत् १ छ छ

टी०-विवाह लग्नको ६ वर्ग आवे तो उत्तम. ५ अथवा ४ मध्य-
म. कोई त्रिवर्ग मध्यम कहते है. जिसलग्नमें दो अथवा एकवर्ग आ
वे तो वह लग्न त्याग करना.

लग्नांशफलम्.

लग्नेचतुर्दशेभागेवृषस्यमकरस्यच कन्याकर्क
टमीनामष्टमेद्वादशेलिनः १

टी०-विवाह लग्नमें वृष अथवा मकर इस्के १४ अंश शुभ.
कन्या, कर्क इस्के ८ अंश शुभ. वृश्चिकके १२ अंश शुभ. यह
लग्न विवाहमें लेना होय तो अंश देखना.

अन्यमतानि.

एकविंशतिमेभागेमेषस्याष्टादशेहरेः संपूर्ण
फलदंचादौमध्येमध्यफलप्रदम् १

टी०-विवाहलग्नमें मेष २१ अंश, सिंहलग्न १८ अंश यह संपूर्ण
उत्तमफलकारी है. मध्यम होय तो मध्यमफल जानना.

कुंभस्यांशेचषड्विंशेचतुर्विंशेचतौलिनः नृयु
क्कार्मुकयोर्लग्नंशुभंसप्तदशांशके २ छ

टी०-विवाहलग्नमें कुंभ २६ अंश शुभ. तुला २४ अंश, मिथुन

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

धन १७ अंश शुभ जानना. सो शुभकार्यमे लेना, शुभप्रद है.

वर्गोत्तमलक्षण.

अंतेतुच्छफलंलग्नंयदिवर्गोत्तमंनचेत् लग्नस्य स्वनवांशोयः सवर्गोत्तमउच्यते १

टी०- लग्नजो वर्गोत्तमनहोयतो अंतमें थोडाफलकरताहै. लग्न अपने नवांशमें होयतो वह वर्गोत्तम होताहै. सो अशुभजानना.

गोधूललग्नकथनम्

गोधूलंपदजादिकेशुभकरंपंचांगशुद्धौरवेरर्धा-स्तात्परपूर्वतोर्धघटिकांतत्रेंदुमष्टारिगां सोग्रां गंकुजमष्टमंगुरुयमाहःपातमर्कक्रमंजह्याद्वि प्रमुखेतिसंकटइदंसद्यौवनाद्येक्वचित् १

टी०-गोधूली लग्न शूद्रादिकको शुभ. पंचागशुद्धि देखकेगो-धूलीका काल सूर्य अर्ध अस्त होनेके बादपल १५ और अर्ध अस्त होनेके पहिले १५पल यह गोधूली. सो इस्मेभी विचार चंद्रमा अष्ट-मषष्ठ लग्नमें पापग्रह. अष्टमस्थानमें मंगल और गुरु शनि इनकेवा र महापात सूर्यसंक्रांति इतने दुष्टयोगका त्यागकरना. ब्रा[illegible]णको संकटप्राप्ति होयअथवा कन्या यौवनवती होती हो[illegible] विचार करना नहीं. गोधूलीमें करना.

वधूप्रवेश.

विवाहमारभ्यवधुप्रवेशोयुग्मेथवाषोडशवास तात् तदूर्ध्वमब्देयुजिपंचमांतादतःपरस्तान्नि यमोनचास्ति १

टी०-विवाहसे समदिनमें वधूप्रवेश करना. अथवा सोलदिनमें वधूप्रवेश समदिनमें करना. इस्केनंतर ५ वर्षतक समवर्षमें करना आगे करना नहीं.

उक्तमासादि.

माघफाल्गुनवैशाखेशुक्लपक्षेशुभेदिने

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

1676

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDP

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu